लूका रचित सुसमाचार

लूका के अनुसार सुसमाचार (खुशी की खबर)

1 जो कुछ हमारे बीच में होता रहा है,
उन सभी बातों के बारे में दूसरे लोगों ने
भी लिखा है। 2 परमेश्वर के वायदों को पूरा
होते हुए उनके शिष्यों ने और दूसरे लोगों ने
देखा था। 3 हे थियुफ़िलुस, सभी बातों की
छान-बीन करके मैंने सावधानी से सब कुछ
लिखने का इरादा किया, 4 ताकि तुम यह
जान लो कि जो शिक्षा तुमने पायी है, वह
पूरी तरह से खरी है।

5 यहूदियों के राजा हेरोदेस के समय
'अबिय्याह के दल' में ज़कर्याह नाम का
एक पुरोहित था। उसकी पत्नी एलिज़ाबेथ
हारून के वंश की थी। 6 परमेश्वर पिता की
निगाह में वे दोनों खरा जीवन बिताते थे। वे
सभी आज्ञाओं और रीति-विधियों को बहुत
सावधानी से मानते थे। 7 एलिज़ाबेथ के बांझ
होने की वजह से उनकी कोई औलाद नहीं
थी, और अब तो वे बूढ़े हो गए थे।

8 प्रार्थना भवन[a] में एक बार उसके दल की
बारी होने के कारण वह वहाँ सेवा में लगा
था। 9 प्रथा के अनुसार पर्ची उठाए जाने के
द्वारा उसे भवन में पवित्र जगह में जाकर धूप
जलाने का काम मिला था। 10 धूप जलाए
जाने के समय लोगों का एक बड़ा झुण्ड
बाहर खड़ा प्रार्थना कर रहा था।

11 उसी समय, धूप की वेदी की दाहिनी
तरफ़ प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे दिखाई पड़ा।
12 उसे देखते ही ज़कर्याह घबरा गया और डर
ने उसे जकड़ लिया।

13 लेकिन स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे
ज़कर्याह, डरो मत, क्योंकि तुम्हारी बिनती
सुन ली गई है और तुम्हारी पत्नी एलिज़ाबेथ
से तुम्हें एक बेटा होगा। उसका नाम तुम
यूहन्ना रखना। 14 तुम्हें बड़ी खुशी होगी और
दूसरे लोग भी उसके जन्म से खुश होंगे।
15 प्रभु की निगाह में वह महान होगा। वह
न शराब[b] पीएगा और न कोई नशीली चीज़
लेगा। वह अपनी माँ के गर्भ से ही पवित्र
आत्मा से भरपूर होगा। 16 वह बहुत से
इस्राएलियों का मन उनके परमेश्वर पिता की
तरफ़ कर देगा। 17 वह एलिय्याह की आत्मा
और ताकत में बढ़ता जाएगा, ताकि बहुत
से पिताओं के मन को अपने बच्चों की तरफ़
और अनाज्ञाकारी मनों को सच्चे ज्ञान की तरफ़
मोड़े, जिस से वे लोग परमेश्वर पिता के लिए
तैयार हों।"

18 ज़कर्याह ने स्वर्गदूत से कहा, "मैं यह
कैसे जानूँगा, क्योंकि मैं और मेरी पत्नी तो
बूढ़े हो चुके हैं?"

19 स्वर्गदूत ने उस से कहा, "मैं जिब्राईल हूँ,
और सर्वशक्तिमान की उपस्थिति में रहता
हूँ। मैं तुम्हें यह अच्छी खबर देने के लिए
भेजा गया हूँ। 20 देखो, जिस दिन तक ये बातें
पूरी न हों, तब तक तुम बोल न सकोगे।
ऐसा इसलिए, क्योंकि तुमने मेरी बातों पर
जो अपने समय में पूरी होंगी, शक किया।"

21 इसी बीच ज़कर्याह के बाहर आने का
इंतज़ार करने वाले झुण्ड को यह आश्चर्य लगा

---

[a] **1.8** मन्दिर [b] **1.15** मदिरा, दाखरस

कि वह इतनी देर भवन में क्यों रह गया।
22 जब वह बाहर आया, तो वह बोल नहीं पा
रहा था। तब वे समझ गए कि प्रार्थना भवन में
उसने ज़रूर कोई दर्शन देखा होगा। इसलिए
वह गूँगा हो गया था और हाथों से इशारा कर
रहा था।
23 जब उसका प्रार्थना भवन में सेवा करने
का समय खत्म हुआ, तब वह अपने घर
चला गया। 24 कुछ समय बाद उसकी पत्नी
एलिज़ाबेथ गर्भवती हुई, और पाँच महीने
तक उसने इस बात को छिपाकर रखा।
25 उसने कहा, “लोगों के बीच में से मेरी
बदनामी दूर करने के लिए प्रभु ने मेरे लिए
ऐसा किया है।”
26 एलिज़ाबेथ के गर्भवती होने के छठे
महीने में गलील के एक शहर नासरत में
जिब्राईल स्वर्गदूत 27 मरियम नाम की एक
कुँवारी के पास भेजा गया, जिस की सगाई
दाऊद के वंशज यूसुफ़ से हुई थी।
28 स्वर्गदूत ने आकर मरियम से कहा,
“खुशी मनाओ। प्रभु तुम्हारे साथ हैं और
उनकी बड़ी कृपा तुम पर हुयी है।”
29 स्वर्गदूत की यह बात सुन कर मरियम
उलझन में पड़ गई और उसे बड़ा आश्चर्य
हुआ कि यह किस तरह का अभिवादन है।
30 स्वर्गदूत ने उससे कहा, “हे मरियम, तुम
डरो मत, क्योंकि तुम पर प्रभु की बड़ी कृपा
हुयी है। 31 देखो, तुम्हारे एक बेटा पैदा होगा,
जिस का नाम तुम यीशु रखना। 32 वह महान
होगा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का बेटा
कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उस बेटे के पूर्वज
दाऊद के तख्त पर उन्हें बिठाएँगे। 33 वह
हमेशा याकूब के घराने पर शासन करेंगे और
उनका शासन कभी खत्म नहीं होगा।”
34 तब मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, “मेरा
तो किसी पुरुष से सम्बन्ध ही नहीं है। यह
हो कैसे सकता है?”
35 स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, “पवित्र आत्मा
तुम्हारे ऊपर उतरेगा, और महाशक्तिशाली
की ताकत तुम्हारे ऊपर छा जाएगी। इसलिए
जो पवित्र जन पैदा होगा, वह परमेश्वर
का पुत्र कहलाएगा। 36 और देखो, तुम्हारी
रिश्तेदार एलिज़ाबेथ भी अपने बुढ़ापे में
गर्भवती हुई है। हालाँकि वह बांझ थी,
फिर भी उसका छठा महीना चल रहा है।
37 परमेश्वर के मुख से निकली बात असर
रहित नहीं होती है।”
38 मरियम ने कहा, “देखो, मैं प्रभु की
सेविका हूँ, इसलिए जो तुम कह रहे हो, वैसा
ही हो।” तब स्वर्गदूत वहाँ से चला गया।
39,40 मरियम तुरन्त उठी और पहाड़ी प्रदेश
के यहूदा नगर में ज़कर्याह के घर जाकर
एलिज़ाबेथ से मिली और उसे बधाई देने
लगी।
41 मरियम की बधाई सुनते ही एलिज़ाबेथ
के गर्भाशय में बच्चा उछल पड़ा, और
एलिज़ाबेथ पवित्र आत्मा से भर गई। 42 ऊँची
आवाज़ में वह बोल पड़ी, “महिलाओं में तुम
बड़ाई के लायक हो, और तुम्हारे गर्भ में जो
है, वह भी। 43 मुझे यह मौका कैसे दिया गया
कि मेरे प्रभु की माता मुझ से मिलने आए?
44 जैसे ही तुमने मुझे बधाई दी, वैसे ही बच्चा
मेरे गर्भ में खुशी से उछल पड़ा। 45 वह इन्सान
सच में सुखी है जिस ने प्रभु के दिए हुए वायदों
के पूरे होने पर विश्वास किया है।”
46 मरियम बोली, “मेरा मन प्रभु की बड़ाई
करता है। 47 और मेरी आत्मा मेरे मुक्तिदाता
परमेश्वर में खुश होती है। 48 इसलिए कि

अपनी सेविका की दीन हालत पर उन्होंने
दया दिखायी है, देखो, अब से सभी युगों के
लोग मुझे आशीषित कहेंगे। 49 क्योंकि उस
शक्तिमान ने मेरे लिए बड़े कामों को किया
है, और उनका नाम पवित्र है। 50 पीढ़ी दर
पीढ़ी उन लोगों पर उनकी कृपा बनी रहती है,
जो उनकी इज़्ज़त करते हैं। 51 उन्होंने अपनी
बाँह की ताकत दिखाई है। जो लोग मन ही
मन घमण्ड करते हैं, उन्हें प्रभु ने तित्तर-बित्तर
कर डाला है। 52 ताकतवरों को उन्होंने गद्दी
से गिरा दिया है और नम्र लोगों को इज़्ज़त का
पद दिया है। 53 भूखों को उन्होंने अच्छी चीज़ें
खाने के लिए दीं और अमीरों को खाली हाथ
भेज दिया। 54 उन्होंने अपने सेवक इस्राएल
को सम्भाल लिया। 55 उन्होंने अपनी कृपा
की वजह से इस्राएल की मदद की है, क्योंकि
उन्होंने हमारे पूर्वज अब्राहम और उसके बच्चों
से वायदा किया था कि वह हमेशा उनके प्रति
कृपालु रहेंगे।"

56 वहाँ पर तीन महीने रहने के बाद, मरियम
अपने घर वापस आ गयी।

57 जब समय पूरा हुआ, एलिज़ाबेथ के एक
बेटा पैदा हुआ। 58 प्रभु की दिखायी गयी बड़ी
कृपा के बारे में सुन कर उसके पड़ोसियों
और रिश्तेदारों ने उसके साथ खुशियाँ मनाईं।
59 आठवें दिन उस बच्चे का खतना संस्कार
करते समय, लोगों ने उसके पिता ज़कर्याह
का नाम ही उसे देना चाहा।

60 परन्तु उसकी माँ ने मना करते हुए कहा
कि उसका नाम 'यूहन्ना' रखा जाए।

61 लेकिन वहाँ इकट्ठा लोगों ने उस से कहा,
"तुम्हारे रिश्तेदारों में तो इस नाम का कोई
नहीं है!"

62 तब उन लोगों ने इशारा करके उसके
पिता ज़कर्याह से पूछा कि उसकी राय क्या
है? 63 उसने एक लिखने की पटिया मँगाकर
उस पर लिख दियाः इसका नाम यूहन्ना है।
यह देख कर सभी आश्चर्यचकित रह गए।
64 तब ज़कर्याह का मुँह और जीभ तुरन्त
खुल गए, और वह बोलने और परमेश्वर का
धन्यवाद करने लगा। 65 इस बात को देख
कर आस पास के सब रहने वाले लोगों पर
भय छा गया और उन बातों की चर्चा यहूदिया
के पहाड़ी देश में फैल गयी। 66 सुनने वाले
यह सोचने लगे कि, "यह बच्चा बड़ा होने पर
कैसा होगा?" क्योंकि प्रभु उसके साथ थे।

67 और उसका पिता ज़कर्याह पवित्र
आत्मा से ओत-प्रोत होकर पवित्र आत्मा
की प्रेरणा से कहने लगा, 68 "इस्राएल के
परमेश्वर की बड़ाई हो, क्योंकि उन्होंने
अपने लोगों पर निगाह की है और उन्हें
आज़ादी दी है, 69 उन्होंने दाऊद के वंश में
हमारे लिए सामर्थी मुक्तिदाता को दिया है,
70 जैसा उन्होंने अपने समर्पित नबियों के द्वारा
जो दुनिया की शुरूआत से होते आए हैं, कहा
था, 71 अर्थात् उन्होंने हमें हमारे दुश्मनों से,
और हमारे सब बैरियों के हाथ से छुड़ाया
है, 72 कि हमारे बुज़ुर्गों पर दया करके अपने
अटूट वायदे को याद करें, 73 और वह वायदा
जो परमेश्वर ने हमारे पिता अब्राहम से किया
था, 74 वह यह कि हम अपने दुश्मनों के
हाथ से छूट कर, 75 उनके सामने शुद्धता और
खरेपन से ज़िन्दगी भर बिना डर उनकी सेवा
करते रहें। 76 और बेटा, तुम सर्वशक्तिमान
जग के स्वामी[a] के नबी कहलाओगे, क्योंकि
प्रभु[b] की सेवकाई की तैयारी में उन से पहले
तुम लोगों को सिखाओगे, 77 ताकि उनके
लोगों को गुनाहों[c] की मुआफ़ी से मिलने
वाली मुक्ति की जानकारी मिले, 78 यह
हमारे परमेश्वर पिता की तरफ़ से आने वाली

[a] **1.76** परमप्रधान [b] **1.76** यीशु [c] **1.77** अपराधों

बड़ी कृपा से होगा, 79 ताकि जो लोग मौत
की छाया में और अँधेरे में हैं, उन्हें रोशनी
मिल सके और मेल के रास्ते में चलने के
लिए मार्गदर्शन भी।”
80 और यूहन्ना इस्राएलियों को सिखाने के
दिन तक देह और आत्मा में मज़बूत होता
गया, और जंगलों में ही रहा।

2 उन दिनों में औक्टोवियन[a] नामक रोमी
राजा ने यह आज्ञा दी कि रोमी साम्राज्य
के सभी नागरिकों की जनगणना का काम
हो। 2 यह पहली जनगणना तब हुई जब
क्विरिनियुस सीरिया का राज्यपाल था।
3 सभी लोग अपना नाम दर्ज़ कराने के लिए
अपने-अपने नगर के जनगणना केन्द्र को जाने
लगे।
4 इसलिए यूसुफ़, जो दाऊद के वंश का था,
गलील के नासरत से यहूदिया के बेतलेहम
को गया, 5 ताकि अपनी मंगेतर मरियम के
साथ जो गर्भवती थी, नाम लिखवाए।
6 फिर ऐसा हुआ कि उनके वहाँ रहते हुए
मरियम के प्रसव के दिन पूरे हो गए। 7 और
उसने अपने पहलौठे बेटे को जन्म देने के
बाद उन्हें कपड़ों में लपेटकर चरनी में रखा,
क्योंकि धर्मशाला में लोग ठसाठस भरे थे।
8 उसी प्रदेश में कुछ चरवाहे, रात के समय
में मैं दान में अपनी भेड़ों की रखवाली कर रहे
थे। 9 अचानक प्रभु का एक दूत उनके सामने
आ प्रगट हुआ और एक बड़ी रोशनी चमक
उठी और वे बहुत डर गए।
10 तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, “मत
डरो, क्योंकि मेरे पास तुम्हारे और सभी के
लिए एक खुशी का समाचार है। 11 क्योंकि
आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक
मुक्तिदाता पैदा हुआ है, और यही ‘मसीह
प्रभु’ हैं। 12 इसका तुम्हारे लिए यह निशान
होगा कि तुम एक बच्चे को कपड़े में लिपटा
हुआ और चरनी में लेटा हुआ पाओगे।”
13 तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ दूतों
का झुण्ड परमेश्वर की बड़ाई करते और
यह कहते हुए दिखाई दिया, 14 “आकाश में
परमेश्वर की महिमा[b] और धरती पर इन्सान
के साथ उनका मेल हो।”
15 और ऐसा हुआ कि जब स्वर्गदूत वापस
आकाश में ओझल हो गए तो चरवाहे आपस
में कहने लगे, “आओ, जो कुछ हुआ है और
प्रभु ने हमें बताया है, उसे देखने हम बेतलेहम
चलें।”
16 तुरन्त उन्होंने ऐसा किया और वहाँ
पहुँचकर बच्चे को चरनी में और यूसुफ़ मरियम
को पास में देखा। 17 यह देख कर उन्होंने वह
सब कह डाला, जो बच्चे के बारे में उन से
कहा गया था। 18 चरवाहों की उन बातों को
सुन कर सभी अचम्भित हो गए। 19 लेकिन
मरियम इन सब बातों को अपने मन में रख
कर सोचती रही। 20 जैसे चरवाहों से कहा
गया था, सब कुछ वैसा ही सुन कर और
देख कर परमेश्वर की बड़ाई और धन्यवाद
करते हुए वे लौट गए।
21 आठ दिन पूरे होने पर खतना संस्कार के
समय बच्चे का नाम यीशु रखा गया - वही नाम
जो मरियम के गर्भ में आने से पहले स्वर्गदूत
ने दिया था।
22 यहूदी प्रथा के अनुसार जब उनके शुद्ध
ठहरने के दिन पूरे हुए तो वे बच्चे को प्रभु
के लिए अर्पित करने के लिए यरूशलेम में
लाए। 23 ऐसा यहूदी धर्म में लिखा है: “हर
एक पहलौठा परमेश्वर के लिए अलग किया
जाएगा।” 24 यह भी कि एक जोड़ा पंडुक या
कबूतर के दो बच्चों को लाकर चढ़ाएँ।

[a] **2.1** औगस्तुस [b] **2.14** शान

25 यरूशलेम में शमौन नाम का एक
ईमानदार इन्सान था। वह इस्राएल की शान्ति
का इंतज़ार कर रहा था और पवित्र आत्मा
उस पर था। 26 पवित्र आत्मा ने उसे बताया
था कि जब तक वह मुक्तिदाता को देख न
ले, तब तक मरेगा नहीं। 27 पवित्र आत्मा की
प्रेरणा से वह प्रार्थना भवन में आया और जब
माता-पिता अपनी धार्मिक ज़िम्मेदारी को पूरा
करने बालक यीशु को प्रार्थना भवन में लाए,
28 तब उसने बालक यीशु को गोद में लेकर
परमेश्वर की बड़ाई करते हुए कहा, 29 "हे
स्वामी, अब अपनी कही बात के अनुसार
आप अपने सेवक को इस धरती पर से विदा
करें। 30 क्योंकि मैंने अपनी आँखों से मुक्ति[a]
को देख लिया है, 31 जिन्हें आपने सब देशों
के लोगों के लिए दिया है, 32 सारी दुनिया के
देशों को परमेश्वर का ज्ञान देने के लिए वह
रोशनी और आपकी प्रजा इस्राएल के लिए
महिमा[b] हैं।" 33 जो कुछ भी उनके बारे में
कहा गया था, उन सब के बारे में बच्चे के
माता-पिता आश्चर्य कर रहे थे।

34 तब शमौन ने उनके विषय भली बातें कह
कर उनकी माता मरियम से कहा, "देखो,
इस्राएल में बहुत से लोग इस बालक को
ठुकरा देंगे और इस से उन्हीं का नुकसान
होगा लेकिन दूसरे बहुत से लोगों के लिए
वह बड़ी खुशी का कारण होगा। 35 बहुत से
लोगों के मन की बातें सामने आ जाएँगी और
एक तलवार तुम्हारे प्राण को भेद डालेगी।"

36 अन्ना नाम की एक बहुत बुज़ुर्ग नबिया
थी। वह आशेर कबीले के फ़नूएल की बेटी
थी। उसकी शादी के सात साल बाद ही
उसके पति का देहान्त हो गया था और तभी
से वह विधवा थी। 37 वह चौरासी साल की
हो चुकी थी। वह उपवास और भजन कीर्तन
के साथ वहीं प्रार्थना भवन में रात दिन गुज़ारा
करती थी। 38 जब शमौन मरियम और यूसुफ़
से बातें कर रहा था, वह तभी वहाँ आ पहुँची
और परमेश्वर पिता की बड़ाई करने लगी।
हर एक जन जो प्रतिज्ञा किए हुए राजा के
आने और यरूशलेम के आज़ाद किए जाने
का इंतज़ार कर रहा था, उन सब से वह यीशु
के विषय में बातें करने लगी।

39 यहूदी नियमों को पूरा करने के बाद
मरियम और यूसुफ़ गलील के नासरत को
अपने घर लौट गए। 40 वहीं बालक यीशु
अपने स्वास्थ्य और उम्र में बढ़ते गए। अपनी
उम्र के हिसाब से भी ज़्यादा उन में बुद्धि थी।
परमेश्वर की खास कृपा उनके ऊपर थी।

41 यीशु के माता-पिता हर साल फ़सह के
त्यौहार के समय यरूशलेम जाते थे। 42 यीशु
की बारह साल की उम्र में त्यौहार की प्रथा
के अनुसार वे यरूशलेम गए हुए थे। 43 वहाँ
त्यौहार खत्म होने पर, जब वे वापस लौट रहे
थे तब बालक यीशु वहीं रह गया था। यह
बात यूसुफ़ और मरियम को पता नहीं थी।
44 यह सोच कर कि लोगों के झुण्ड ही में
अन्य यात्रियों के साथ वह होंगे, वे एक दिन
की यात्रा करते हुए काफ़ी दूर निकल गए।
तब उनके अपने रिश्तेदारों और जान पहचान
वालों ही में वे उन्हें ढूँढने लगे। 45 उन्हें
वहाँ न पा सकने पर वे उन्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते
यरूशलेम पहुँचे। 46 तीन दिन के बाद उन्होंने
बालक यीशु को प्रार्थना भवन में शिक्षकों
के साथ बैठे, सवाल जवाब करते पाया।
47 यीशु को सुनने वाले उनकी बुद्धिमानी की
बातें सुन कर और सवाल पूछने की कला
पर आश्चर्यचकित थे। 48 उन्हें देखते ही वे
अचरज में पड़ गए और उनकी माता ने उन
से कहा, "बेटा, तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों

[a] **2.30** मुक्तिदाता [b] **2.32** शान

किया? तुम्हारे पिताजी और मैं तुम्हें ढूँढ-ढूँढ कर परेशान हो रहे हैं।"
49 यीशु ने जवाब दिया, "यह क्या कि आप
मेरी वजह से परेशान हो रहे थे, आप मुझे क्यों
ढूँढ रहे थे? क्या आपको यह नहीं मालूम कि
मुझे अपने पिता के काम में लगे रहना है?"
50 वे यीशु की इस बात को समझ नहीं पाए।
51 उसके बाद वह उनके साथ नासरत आ
गये और वहीं उनकी अधीनता में रहे, लेकिन
मरियम ने ये सब बातें अपने मन में रखीं।
52 और यीशु बुद्धि, आयु, कद मेंऔर
परमेश्वर तथा लोगों के स्नेह में उन्नति करते
गए।

3 तिबिरियास कैसर[a] के पंद्रहवें साल में
पुन्तियुस पिलातुस यहूदिया का गवर्नर
था और चौथाई का राजा हेरोदेस गलील
का और उसका भाई फ़िलिप इतूरिया और
त्रखोनीतिस का और लिसानियास अबिलेने
का शासक था। 2 हन्ना और कैफ़ा जब
प्रधान पुरोहित थे, तभी जंगल में ज़कर्याह
के बेटे यूहन्ना को प्रभु का संदेश मिला।
3 और वह यरदन के आस-पास के इलाके
से मनबदलाव के बपतिस्मे और गुनाहों[b] की
मुआफ़ी की खुशखबरी सुनाने लगा। 4 जैसे
कि यशायाह नबी की किताब में लिखा है,
"जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज़
यह है, 'प्रभु के रास्ते को तैयार करो, उसे
सीधा करो। 5 हर एक घाटी भर दी जाएगी,
प्रत्येक पहाड़ नीचा और पहाड़ी नीची की
जाएगी, टेढ़ी-मेढ़ी सड़कें सीधी की जाएँगी।
ऊबड़ - खाबड़ रास्ते चिकने बनाए जाएँगे।
6 'सभी लोग परमेश्वर पिता की मुक्ति को
देखेंगे'।"
7 तब यूहन्ना ने उस भीड़ से जो उसके
पास बपतिस्मा पाने आई थी, कहा, "साँप
के बच्चो, परमेश्वर के आने वाले दण्ड से
दूर भागने के लिए तुम्हें किस ने चेतावनी
दी है? 8 इसलिए मन बदलाव का सबूत दो
और अपने आप से यह मत कहो, 'अब्राहम
हमारे पिता हैं।' ऐसी डीगें मारना बेकार है।
परमेश्वर पिता इन पत्थरों को अब्राहम की
सन्तान में बदल सकते हैं। 9 पेड़ों की जड़ पर
कुल्हाड़ी पहले ही से रखी हुई है। हर एक
वह पेड़ जिस में अच्छा फल नहीं निकलता
है, काटने के बाद आग में झोंका जाता है।"
10 भीड़ ने सवाल किया, "हमें करना क्या
चाहिए?"
11 यूहन्ना ने उत्तर दिया, "अगर तुम्हारे
पास दो कुरते हैं, एक गरीब को दे दो।
अगर तुम्हारे पास खाना है, तो मिल-बाँटकर
खाओ।"
12 भ्रष्ट टॅक्स जमा करने वाले भी बपतिस्मा
पाने के लिए आए और पूछने लगे, "गुरु जी,
हमें क्या करना चाहिए?"
13 उसने उत्तर दिया, "ईमानदार रहो और
जितना रोमी सरकार ने तय किया है उससे
ज़्यादा मत लो।"
14 कुछ फ़ौजियों ने पूछा, "हमें बताइए कि
हम क्या करें?" उसने उन से कहा, "दबाव

[a] **3.1** रोमी राजा [b] **3.3** जान बूझ कर नैतिक सीमाओं लाँघने

डाल कर किसी से पैसा मत ऐंठना, या किसी
पर झूठा आरोप मत लगाना। अपनी मजदूरी
से खुश रहना।”
15 हर एक, मसीह के जल्दी आने का
इन्तज़ार कर रहा था, इसीलिए लोग यह
जानना चाहते थे कि कहीं यूहन्ना तो मसीह
नहीं है।
16 उनके सवालों के जवाब में यूहन्ना बोला,
“मैं तुम्हें पानी में बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन
एक हैं जो मुझ से ज़्यादा अधिकार रखते हैं,
- इतना ज़्यादा कि मैं उनकी जूती का फ़ीता
भी खोलने के लायक नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र
आत्मा और आग से बपतिस्मा देंगे। 17 अपने
सूप की मदद से वह गेहूँ और भूसी को अलग
करने के लिए तैयार हैं, उसके बाद वह दाने
को साफ़ करके अनाज को खत्ते में रखेंगे,
लेकिन भूसे को कभी न बुझने वाली आग में
डालेंगे।”
18 सुसमाचार को सुनाते समय, यूहन्ना ने
ऐसी तमाम चेतावनियाँ दीं।
19 लेकिन अपने भाई फ़िलिप की पत्नी
हेरोदियास से ब्याह करने और दूसरी बुराइयों
की वजह से हेरोद अन्तिपास को यूहन्ना ने
डाँटा। 20 उसने सब से बुरी बात यह की कि
यूहन्ना को जेल में डाल दिया।
21 जब लोग वहाँ आकर बपतिस्मा ले रहे
थे, यीशु को भी बपतिस्मा दिया गया। जब
यीशु प्रार्थना कर रहे थे, आकाश खुल गया।
22 एक फ़ाख्ते की शक्ल में पवित्र आत्मा
उनके ऊपर उतरा और आकाश से एक
आवाज़ आयी, “तुम मेरे प्रिय बेटे हो। मैं तुम
से खुश हूँ।”
23 यीशु ने अपनी सेवा का काम तीस साल
की उम्र में शुरू किया। यीशु यूसुफ़ के बेटे
समझे जाते थे; और यूसुफ़ एली का; 24 और
वह मत्तात का, और वह लेवी का, और
वह मलकी का, और वह यन्ना का, और
वह यूसुफ़ का; 25 और वह मत्तित्याह का,
और वह आमोस का, और वह नहूम का,
और वह असल्याह का, और वह नोगह का;
26 और वह मात का, और वह मत्तित्याह का,
और वह शिमी का, और वह योसेख का,
और वह योदाह का; 27 और वह यूहन्ना का,
और वह रेसा का, और वह ज़रूब्बाबेल का,
और वह शलतियेल का, और वह नेरी का
28 और वह मलकी का, और वह अद्दी का,
और वह कोसाम का, और वह इलमोदाम
का, और वह एर का 29 और वह येशू का,
और वह इलाज़ार का, और वह योरीम का,
और वह मत्तात का, और वह लेवी का
30 और वह शमौन का, और वह यहूदाह
का, और वह यूसुफ़ का, और वह योनान
का, और वह इलयाकीम का 31 और वह
मलेआह का, और वह मिन्नाह का, और वह
मत्तता का, और वह नातान का, और वह
दाऊद का 32 और वह यिशै का, और वह
ओबेद का, और वह बोअज का, और वह
सलमोन का, और वह नहशोन का। 33 और
वह अम्मीनादाब का, और वह अरनी का,
और वह हिस्रोन का, और वह फिरिस का,
और वह यहूदाह का; 34 और वह याकूब
का, और वह इसहाक का, और वह अब्राहम
का, और वह तेरह का, और वह नाहोर का।
35 और वह सरुग का, और वह रऊ का, और
वह फिलिग का, और वह एबिर का, और
वह शिलह का। 36 और वह केनान का, वह
अरफज़द का, और वह शेम का, वह नूह का,
वह लिमिक का; 37 और वह मथूशिलह का,
और वह हनोक का, और वह यिरिद का,
और वह महललेल का, और वह केनान का;

38 और वह इनोश का, और वह शेत का,
और वह आदम का, और वह परमेश्वर का
पुत्र था।

4 पवित्र आत्मा से भरे हुए यीशु यरदन
से वापस लौटे और पवित्र आत्मा उन्हें
जंगल में ले गया। 2 वहाँ पर शैतान ने चालीस
दिन तक उनके सामने तरह-तरह से प्रलोभन
रखे। उन्होंने उन दिनों में कुछ भी नहीं खाया।
उसके बाद उन्हें भूख लगी।
3 और शैतान ने उन से कहा, "अगर तुम
परमेश्वर पिता के बेटे[a] हो, तो इन पत्थरों
को आज्ञा दो कि वे रोटी बन जाएँ।"
4 यीशु ने उत्तर में कहा, "यह लिखा है कि
इन्सान सिर्फ़ खाना खाने से नहीं, लेकिन
परमेश्वर के हर एक शब्द से ज़िन्दा रहेगा।"
5 तब एक ही पल में यीशु को एक ऊँचे
पहाड़ पर ले जाकर शैतान ने दुनिया के सभी
राज्यों को उन्हें दिखाया। 6 शैतान ने कहा,
"इनका अधिकार और इन की शान मुझे दी
जा चुकी है, और मैं यह किसी को भी देने
का अधिकार रखता हूँ। यह सब मैं तुम्हें दे
सकता हूँ। 7 इसलिए अगर तुम मुझे दण्डवत्
करो, सब कुछ तुम्हारा हो जाएगा।"
8 तभी यीशु ने घुड़कते हुए उससे कहा,
"यहाँ से निकल जा क्योंकि यह लिखा है, कि
तुम सिर्फ़ अपने प्रभु परमेश्वर को दण्डवत्
करना और उन्हीं की सेवा भी।"
9 इसके बाद यीशु को प्रार्थना भवन की
चोटी से छलाँग लगाने के लिए उकसाते हुए
उसने कहा, "यदि तुम परमेश्वर के बेटे हो,
तो यहाँ से कूद जाओ, 10 क्योंकि यह लिखा
है, कि वह[b] स्वर्गदूतों को आज्ञा देंगे कि
तुम्हें संभालें। 11 वे तुम्हें हाथों हाथ उठा लेंगे,
ताकि तुम्हारे पैरों को पत्थर से ठेस न लगे।"
12 यीशु ने उत्तर दिया, "यह लिखा है, कि
तुम अपने प्रभु परमेश्वर को मत परखना।"
13 सभी तरह के प्रलोभनों के बाद वह
कुछ समय के लिए यीशु से दूर हो गया।
14 यीशु पवित्र आत्मा की ताकत में वापस
गलील लौट आए और आस-पड़ोस के
इलाके में उनका नाम फैल गया। 15 उनके
आराधनालयों में वह सिखाते रहे तथा सभी
उनकी इज़्ज़त करते थे।
16 नासरत, जहाँ यीशु पाले पोसे गए थे,
वहीं अपने रिवाज़ के अनुसार सब्त के दिन
आराधनालय में आकर पढ़ने के लिए खड़े
हुए। 17 उनके हाथ में यशायाह नबी की
किताब दी गई। किताब खोलते ही उनकी
निगाह वहाँ गयी, जहाँ लिखा था, 18 "प्रभु
का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उन्होंने गरीबों[c]
को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक
किया है, टूटे मन वालों को शिफ़ा[d] देने के
लिए उन्होंने मुझे भेजा है। 19 इसलिए भी
कि जकड़े हुए लोगों को आज़ादी, अँधों को
रोशनी और दबे हुओं को मुक्ति दूँ।"
20 उन्होंने किताब को बन्द किया और
सहायक को देकर बैठ गए। आराधनालय में
बैठे सभी लोग उनकी तरफ़ देखते रह गए।
21 यीशु ने यह भी कहा कि जो कुछ उन लोगों
ने उस दिन सुना, वह सब पूरा हो गया है।
22 सभी लोगों ने उनके बारे में गवाही दी
और उनके मुँह की बुद्धिमानी की बातों को
सुन कर आश्चर्य से भर कर कहने लगे, "क्या
यह यूसुफ़ का बेटा नहीं है?"
23 तब यीशु उन से बोले, "तुम ज़रूर
यह कहावत मुझ पर लगाना चाहोगे,
'डॉक्टर, पहले अपने आपको तो ठीक
करो!' कफ़रनहूम में घटी बातों को तो हम
ने सुना है, अपने वतन में भी वही करो।"

[a] **4.3** या देह में परमेश्वर [b] **4.10** परमेश्वर [c] **4.18** परमेश्वर रहित लोगों [d] **4.18** तसल्ली, शांति

24 यीशु ने कहा, “मैं तुम्हें सच बताता हूँ,
वह यह है कि कोई भी नबी अपने वतन में
इज़्ज़त नहीं पाता है। 25 मैं तुम्हें सच्चाई की
जानकारी देता हूँ और वह यह कि एलिय्याह
के समय में, साढ़े तीन साल तक बारिश नहीं
हुई थी। उस समय वहाँ आकाल पड़ गया
था, 26 उन दिनों में वहाँ बहुत सी विधवाएँ
थीं। उन में से सिदोन शहर के सारफ़त गाँव
की एक विधवा के पास एलिय्याह को भेजा
गया। 27 एलीशा नबी के समय इस्राएल में
बहुत से कुष्ट रोगी थे, फिर भी सीरियाई
नामान को छोड़कर और कोई ठीक नहीं
हुआ।”
28 यह सुनते ही आराधनालय के सभी लोग
गुस्से से भर गए। 29 वे उठे और जिस पहाड़ी
के किनारे पर शहर बसा था, वहाँ तक
उन्हें खदेड़ दिया। वहीं से वे उनको[a] गिराना
चाहते थे। 30 लेकिन यीशु किसी तरह से बच
निकले।
31 और गलील के कफ़रनहूम नामक गाँव
पहुँच गए जहाँ हर सब्त के दिन वह लोगों
को सिखाते रहे। 32 यीशु की शिक्षा सुन कर,
वहाँ भी लोग आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि
वह बड़े अधिकार के साथ सिखाया करते
थे।
33 एक बार जब वह आराधनालय में थे,
बुरी आत्मा वाला एक व्यक्ति ज़ोर से चिल्ला
उठा, 34 “नासरत के यीशु हमें परेशान क्यों
कर रहे हो, चले जाओ यहाँ से? क्या हमें
बर्बाद करने तुम यहाँ आए हो? मुझे मालूम
है कि तुम हो कौन - परमेश्वर की तरफ़ से
भेजे गए पवित्र जन।” 35 बीच में ही उसे रोक
कर, यीशु ने बुरी आत्मा से कहा, “चुप! इस
आदमी में से निकल जा।” बिना नुकसान
पहुँचाए बुरी आत्मा उस आदमी को ज़मीन
पर पटककर, उसमें से निकल गई और भीड़
देखती रह गई।
36 आश्चर्य से भरे हुए लोग चिल्ला उठे, “इस
आदमी के शब्दों में कितना अधिकार और
ताकत है? यहाँ तक कि बुरी आत्माएँ उनकी
आज्ञा मान कर भाग खड़ी होती हैं!” 37 आस
पास के इलाकों में यीशु के विषय यह खबर
फैल गई।
38 आराधनालय से निकल कर यीशु शमौन
के घर गए। शमौन की सास बुखार से तप रही
थी। उन्होंने बिनती की कि वह उसे अच्छा
कर दें। 39 उसकी खाट के किनारे खड़े हुए
यीशु ने बीमारी को चले जाने की आज्ञा दी।
उसका बुखार उतर गया और वह तुरन्त उठ
कर उनकी आवभगत करने लगी।
40 उस दिन शाम होते ही लोग अपने बीमार
रिश्तेदारों और मित्रों को यीशु के पास लाने
लगे। एक के बाद दूसरे पर हाथ रख कर यीशु
ने उन्हें शिफ़ा दी। 41 कुछ लोग दुष्टात्माओं से
पीड़ित थे। यीशु की घुड़की सुनते ही वे ‘आप
परमेश्वर हैं’ चिल्लाकर निकल गईं। यीशु ने
उन्हें डाँट लगाते हुए खामोश रहने को कहा।
42 दूसरे दिन बड़े सवेरे, यीशु जंगल
की तरफ़ रवाना हुए। भीड़ उनकी तलाश
करते-करते उन तक पहुँच गई और उन्होंने
गिड़गिड़ाकर कहा कि वह उन्हीं के पास
रहें। 43 लेकिन यीशु ने कहा, “यह ज़रूरी है
कि दूसरे स्थानों में भी परमेश्वर के राज्य की
खुशखबरी सुनाई जाए।” 44 यीशु ने यहूदिया
के आराधनालयों में सिखाना जारी रखा।

5 गलील के झील के किनारे एक दिन जब
यीशु सिखा रहे थे, एक बड़ी भीड़ उनकी
बातें सुनने के लिए उमड़ पड़ी थी। 2 झील
के किनारे उन्होंने दो नावों को खड़े देखा,

[a] **4.29** यीशु को

लेकिन मछुवारे नाव से उतर कर अपने जालों
को धो रहे थे। 3 उन में से एक शमौन की थी,
उस पर चढ़कर ज़मीन से थोड़ी दूर खेने के
लिए उन्होंने उससे कहा। उसी नाव पर बैठ
कर यीशु भीड़ को शिक्षा देने लगे।
4 सिखाने के बाद उन्होंने शमौन से कहा,
“गहरे में ले चलो, और मछली पकड़ने के
लिए अपने जाल डालो।”
5 शमौन ने कहा, “स्वामी, रात भर हम ने
मेहनत की, लेकिन कुछ भी हाथ न लगा।
लेकिन फिर भी आपके कहने पर मैं जाल
डाले देता हूँ।”
6 ऐसा करने पर उन्होंने इतनी मछली
पकड़ीं, कि उनके जाल फटने लगे।
7 इसलिए दूसरी नावों पर बैठे अपने साथियों
की मदद के लिए उन्होंने गुहार लगाई।
उनकी नावें मछलियों से इतनी भर गईं कि
वे डूबने वाले ही थे।
8 यह सब देख कर शमौन पतरस यीशु के
पैरों पर यह कहते हुए गिर पड़ा, “प्रभु जी,
मुझ से दूर चले जाईये, क्योंकि मैं बुरा इन्सान
हूँ।”
9 ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसे और
उसके साथ के लोगों को ढेर सारी मछलियाँ
देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।तभी यीशु बोल
उठे,” डरो नहीं,आने वाले समय में तुम
इन्सानों को लाया करोगे[a]।” 10 शमौन के
साथ साझेदार व्यापारी याकूब और यूहन्ना
को भी जो ज़बदी के बेटे थे, बड़ा आश्चर्य
हुआ। 11 इसलिए किनारे पर अपनी नावों को
लाने के बाद उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया
और यीशु के साथ हो लिए।
12 जब यीशु एक शहर में थे, कोढ़ से भरा
हुआ एक व्यक्ति उनके पास आया। यीशु
को देखते ही अपना सिर नीचे झुकाते हुए
गिड़गिड़ाकर उसने कहा, “प्रभु, अगर आप
चाहें तो मुझे ठीक कर सकते हैं।”
13 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूते हुए कहा,
“मैं यही चाहता हूँ, तुम ठीक हो जाओ।”
तुरन्त उसका कुष्ट-रोग खत्म हो गया।
14 तब यीशु ने उसे आज्ञा दी कि किसी को
न बताए और जाकर पुरोहित को दिखाए।
साथ ही स्वस्थ हो जाने के सबूत के रूप में
मूसा द्वारा ठहरायी भेंट चढ़ाए।
15 लेकिन उनके बारे में खबर कुछ ज़्यादा
ही फैल गयी और बड़ी भीड़ उन्हें सुनने और
बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए आने लगी।
16 इसके बावजूद यीशु अक्सर जंगल की
तरफ़ निकल जाते और वहाँ परमेश्वर से
संगति[b] किया करते थे।
17 एक दिन जब यीशु सिखा रहे थे, यहूदी
धर्म के कुछ शिक्षक और फ़रीसी वहाँ
बैठे हुए थे। ये सब गलील, यहूदिया और
यरूशलेम के गाँवों से आए हुए थे। लोगों को
स्वस्थ करने के लिए यीशु के पास योग्यता[c]
तो थी ही। 18 तभी कुछ लोग खाट पर एक
लकुवे के बीमार को ले आए। वे उसे यीशु
के सामने लाकर रखना चाहते थे। 19 लेकिन
भीड़ की वजह से वे ऐसा न कर सके और
छत पर चढ़ गए। उन्होंने खपरैल को हटा कर
खाट को नीचे लटकाते हुए यीशु के सामने
रख दिया।
20 उन लोगों के भरोसे को देख कर यीशु ने
कहा, “बेटा, तुम्हारे अपराध[d] माफ़ हो चुके
हैं।”
21 धार्मिक कानून के जानकार और फ़रीसी
मन ही मन सोचने लगे कि “यह कौन होते
हैं अपराधों[e] को माफ़ करने वाले। सिर्फ़
परमेश्वर ही ऐसा कर सकते हैं। यह तो खुले
आम परमेश्वर निन्दा है।

[a] **5.9** पकड़ा करोगे [b] **5.16** प्रार्थना [c] **5.17** सामर्थ [d] **5.20** गुनाह [e] **5.21** गुनाहों

22 लोगों के विरोधी विचारों को जान कर
यीशु ने उन से कहा, “तुम अपने मन ही मन
एतराज़ क्यों जता रहे हो? 23 क्या कहना
आसान लगता है, तुम्हारे गुनाह माफ़ हुए
या उठ कर चलो? 24 लेकिन इसलिए कि
तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र यीशु को इस
दुनिया में गुनाहों[a] की माफ़ी देने का अधिकार
है” - यीशु लकवा पीड़ित व्यक्ति से बोले,
“मैं तुम से कह रहा हूँ कि उठो और अपना
बिस्तर लेकर घर जाओ।”
25 सभी के सामने वह उठा और अपने
बिस्तर को उठा कर परमेश्वर की बड़ाई
करता घर को चला गया। 26 तब सभी
हैरान होकर परमेश्वर की बड़ाई करने लगे।
अचरज से भर कर वे कहने लगे, “आज हम
ने बड़ी अजीब घटना देखी है।”
27 इसके बाद यीशु की मुलाकात टॅक्स
चौकी पर बैठे लेवी नामक टॅक्स इकट्ठा करने
वाले से हुई, जिसे उन्होंने अपने साथ हो
चलने को कहा। 28 उसने भी अपना सब कुछ
त्याग कर ऐसा किया।
29 यीशु को उसने अपने घर पर एक
शानदार दावत में बुलाया। वहाँ उसके साथी
टॅक्स कलेक्टरों के अलावा मेहमान भी थे।
30 शास्त्रियों और फ़रीसियों ने शिष्यों के
खिलाफ़ कुड़कुड़ाते हुए कहा, “आप टॅक्स
इकट्ठा करने वालों और दुष्टों के साथ खाना
क्यों खाते हैं?”
31 यीशु ने जवाब में कहा, “बीमार लोगों
को डॉक्टर की ज़रूरत पड़ती है, स्वस्थ
लोगों को नहीं। 32 अपने आपको धार्मिक
समझने वाले लोगों को नहीं, लेकिन जो
अपने आत्मिक दिवालिएपन को पहचानते
हैं, उन्हें मन बदलाव के लिए नेवता देने मैं
पृथ्वी पर आया हूँ।”
33 उन लोगों ने यीशु से कहा, “यूहन्ना
के शिष्य और फ़रीसियों के शिष्य अक्सर
उपवास करते हैं, लेकिन आपके शिष्य ऐसा
नहीं करते हैं?”
34 यीशु ने उन से कहा, “क्या तुम बरातियों
को उस समय उपवास करने के लिए कहोगे,
जब दूल्हा उनके साथ है? 35 परन्तु वे दिन
आएँगे, जिन में दूल्हा उन से अलग किया
जाएगा, तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे।”
36 यीशु ने उन्हें एक दृष्टान्त बताया, “कोई
भी इन्सान एक पुराने कपड़े पर नए कपड़े
का पैबन्द नहीं लगाता, नहीं तो नया फट
जाएगा और वह पैबन्द पुराने में मेल भी नहीं
खाएगा। 37 कोई भी ताज़े अंगूर के रस को
पुरानी मश्कों में नहीं भरता है। यदि वह ऐसा
करता है तो मश्कें फट जाती हैं और अंगूर का
रस भी बर्बाद हो जाता है। 38 “ताज़ा अंगूर
का रस नई मश्कों ही में भरा जाना चाहिए।
39 “बासी अंगूर के रस को पीने के बाद नए में
किसी को मज़ा नहीं आता है, वह यह कहता
है कि बासी ज़्यादा मज़ेदार था।”

6 एक सब्त के दिन जब यीशु मसीह
अनाज के खेतों में से होकर गुज़र रहे
थे, उनके शिष्य गेहूँ के दानों को हाथों से
मसलकर खाने लगे।
2 कुछ फ़रीसियों ने कहा, “जिस बात को
मज़हब सब्त के दिन करने से मना करता है,
वह क्यों कर रहे हो?”
3 यीशु ने उत्तर दिया, “क्या तुमने यह नहीं
पढ़ा है कि दाऊद ने उस समय क्या किया,
जब उसे और उसके साथियों को बहुत भूख
लगी थी? 4 जिस रोटी को सिर्फ़ पुरोहित[b] खा
सकता था, प्रार्थना भवन में जाकर उसने और
उसके साथियों ने कैसे खायी?”

[a] **5.24** अपराधों [b] **6.4** याजक

5 तब यीशु ने कहा कि, “मनुष्य का पुत्र
सब्त के दिन का भी मालिक है।”
6 एक और सब्त के दिन यीशु आराधनालय
में सिखा रहे थे। वहीं पर एक सूखे हाथ
वाला इन्सान था। 7 यहूदी धर्म के विद्वान
और फ़रीसी इस ताक में थे कि यह देखें कि
यीशु सब्त के दिन उसे अच्छा करेंगे या नहीं।
8 यीशु उनके मन की बात जानते थे। उन्होंने
सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, “सब के
सामने यहाँ बीच में खड़े हो जाओ।” इसलिए
वह वहाँ आ गया।
9 तब यीशु ने अपनी खिलाफ़त करने वालों
से कहा, “तुम मेरे सवाल का जवाब दो।
सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा?
यह जीवन दान का दिन है या जीवन लेने
का?”
10 इधर - उधर देखने के बाद यीशु ने उस
आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे करो।”
जैसे ही उसने किया, उसी समय उसका हाथ
अच्छा हो गया।
11 यह देख कर यीशु के दुश्मन आग बबूला
हो उठे और चर्चा करने लगे कि वे यीशु के
साथ क्या करें।
12 इसके कुछ समय बाद यीशु परमेश्वर
से संगति करने पहाड़ पर गए और सारी रात
उन्होंने वहीं बिताई। 13 सुबह होते ही यीशु
ने अपने सभी शिष्यों को बुलाया और भेजे
जाने के लिए बारह को अलग किया। उनके
ये नाम थेः
14 शमौन जिसे पतरस कहा, और पतरस
का भाई अन्द्रियास और याकूब और यूहन्ना
और फ़िलिप और बरतुल्मै 15 और मत्ती और
थोमा और हलफ़ई का पुत्र याकूब और
शमौन जो ज़ीलेट कहलाता है; 16 और याकूब
का भाई यहूदा और यहूदा इस्करियोती जिस
ने दगाबाज़ी की।
17 यीशु के पहाड़ से नीचे उतरने पर एक
समतल ज़मीन पर यीशु के शिष्य, दूसरे
विश्वासी और एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो
गई। उत्तर में सूर और सिदोन के समुद्र तट
और सारे यहूदिया और यरूशलेम से आए
हुए लोग वहाँ थे। 18 वे यीशु को सुनने और
तमाम बीमारियों से छूटने के लिए वहाँ आए
थे। यीशु ने वहाँ तमाम गंदी आत्माओं को
भी निकाल दिया। 19 हर कोई यीशु को छूना
चाहता था क्योंकि उन में से स्वस्थ करने
की ताकत निकला करती थी। उन्होंने सब
को अच्छा भी कर दिया। 20 तब यीशु अपने
शिष्यों की तरफ़ मुड़ कर बोले, “तुम लोग
सचमुच मज़े में हो, क्योंकि कुछ और न होते
हुए भी तुम परमेश्वर के राज्य के हिस्सेदार
हो। 21 सुखी हो तुम लोग, जिन में अभी भूख
है, क्योंकि तुम ही सन्तुष्ट किए जाओगे।
तुम भी जो अभी तो रो रहे हो लेकिन बाद
में हँसोगे। 22 जब लोग मेरी खातिर तुम से
नफ़रत करें, बहिष्कार करें, बेइज़्ज़ती करें
और तुम्हें बुरा ठहराकर ठुकरा दें तब तुम
आशीषित हो। 23 उस दिन तुम खुश होना
और जश्न मनाना, क्योंकि इसके बाद स्वर्ग
में तुम्हें इसके लिए अच्छा पुरस्कार मिलने
वाला है और हाँ, इन लोगों के पूर्वजों ने पुराने
नबियों के साथ भी ऐसा बर्ताव किया था।
24 लेकिन तुम सम्पन्न लोगों के लिए भविष्य
में दुख ही दुख है, क्योंकि अभी तुमने सुख पा
लिया है। 25 तुम जो तृप्त हो, तुम्हें भूख लगेगी।
तुम पर अफ़सोस, जो अभी हँसते हो, क्योंकि
तुम भी रोओगे और विलाप करोगे। 26 तुम
पर हाय, जब लोग तुम्हें भला कहें, क्योंकि
इन के पूर्वज भी झूठे नबियों की बड़ाई किया
करते थे।
27 लेकिन जो लोग सुन रहे हैं, उन से मैं
कहता हूँ कि अपने दुश्मनों से प्यार करो और

नफ़रत करने वालों के साथ भलाई। 28 जो
लोग तुम्हारा बुरा चाहते हैं, तुम उनकी भलाई
के शब्द कहो, और जो बुरा बर्ताव करते हैं
उनके लिए आशीष माँगो। 29 जो तुम्हारे गाल
पर थप्पड़ मारे, उसे दूसरे गाल पर भी मार
लेने दो। जो तुम्हारी कमीज़ को ज़बरदस्ती
छीनना चाहे, उसे बनियान छीनने से भी मत
रोको।
30 जो तुम से माँगे, उसे दो और जो तुम्हारी
चीज़ ज़बरन ले ले, उससे वापस मत माँगो।
31 जिस तरह के बर्ताव की आशा तुम दूसरों
से करते हो, वैसा बर्ताव तुम भी दूसरों के
साथ करो। 32 अगर तुम उन्हीं लोगों से प्रेम
करते हो, जो तुम से करते हैं, तो कौन सी
बड़ी बात है? दुष्ट लोग भी अपने से प्रेम
करने वालों से ऐसा करते हैं। 33 अगर तुम
उन लोगों की मदद करते हो जो तुम्हारी मदद
करते हैं, तो कौन सा बड़ा काम करते हो?
क्योंकि दुष्ट लोग भी ऐसा करते हैं। 34 अगर
तुम किसी को उधार देने के बाद वापस उस
धन की अपेक्षा करते हो, तो यह कौन सी
बड़ी बात है? दुष्ट लोग भी दुष्टों को इसलिए
उधार देते हैं ताकि उन्हें वापस उतना मिल
ही जाए। 35 लेकिन तुम अपने दुश्मनों से प्रेम
करो, भलाई करो, उधार दो, और तुम्हारे
लिए बड़ा फल होगा और तुम परम प्रधान
की सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह धन्यवाद
करने वाले और बुरे, दोनों पर कृपालु हैं।
36 जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही
तुम भी दयावन्त बनो।
37 दोष मत लगाओ, तो तुम पर भी दोष
नहीं लगाया जाएगा दोषी न ठहराओ, तो तुम
भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे क्षमा करो, तो
तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा।
38 दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा लोग
पूरा नाप, दबा-दबाकर और हिला-हिला कर
और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे,
क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से
तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।”
39 फिर यीशु ने उन से एक दृष्टान्त कहा,
“क्या अन्धा, अन्धे को मार्ग बता सकता
है? क्या दोनों गड्ढे में नहीं गिरेंगे?
40 चेला अपने गुरू से श्रेष्ठ नहीं हो सकता
परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरू के
समान होगा।
41 तू अपने भाई की आँख के तिनके को
क्यों देखता है, और अपनी ही आँख का लट्ठा
तुझे दिखाई नहीं देता? 42 और जब अपनी
ही आँख का लट्ठा तुझे नहीं दिखाई देता, तो
अपने भाई से कैसे कह सकता है कि हे भाई,
ठहर जा, तुम्हारी आँख से तिनके को निकाल
दूँ? हे पाखण्डी, पहले अपनी आँख से लट्ठा
साफ़ कर तब जो तिनका तेरे भाई की आँख
में है, अच्छी तरह देख कर निकाल सकेगा।
43 अच्छा पेड़ कभी बुरा फल नहीं लाता,
और खराब पेड़ कभी अच्छा फल नहीं
लाता। 44 हर पेड़ की पहचान उसके फल
से होती है क्योंकि लोग झाड़ियों से अंजीर
नहीं तोड़ते, और न झड़बेरी से अंगूर। 45 भला
मनुष्य अपने मन के भले खज़ाने से भली बातें
निकालता है और बुरा मनुष्य अपने मन के
बुरे खज़ाने से बुरी बातें निकालता है, क्योंकि
जो मन में भरा है, वही उसके मुँह पर आता
है।
46 जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों
मुझे ‘हे प्रभु, हे प्रभु’ कहते हो? 47 जो कोई मेरे
पास आता है, और मेरी बातें सुन कर उन्हें
मानता है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि वह किस

के समान है। 48 वह उस मनुष्य के समान है,
जिस ने घर बनाते समय भूमि गहरी खोद कर
चट्टान पर नेव डाली, और जब बाढ़ आयी तो
उस घर पर बारिश के थपेड़े पड़े परन्तु उसे
हिला न सकी, क्योंकि वह पक्का बना था।
49 परन्तु जो सुन कर नहीं मानता, वह उस
मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर बिना
नेव का घर बनाया। जब उस पर बारिश के
थपेड़े पड़े, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और गिर
कर सत्यानाश हो गया।"

7 लोगों से यह सब बातें कहने के बाद
यीशु कफ़रनहूम लौटे। 2 उसी समय एक
बड़े इज़्ज़तदार रोमन ऑफ़िसर का एक
नौकर बीमारी की वजह से मरने पर था।
3 यीशु के बारे में सुनने पर उसने कुछ यहूदी
बुज़ुर्ग लोगों को भेज कर उन्हें बुलाया ताकि
वह आकर उसके दास को स्वस्थ कर
दें। 4 यीशु के पास आने पर उन्होंने कहा
कि, "रोमन ऑफ़िसर इस लायक है कि
उसके लिए ऐसा किया जाया जाए, 5 क्योंकि
वह यहूदियों को चाहता है, और उसी ने
आराधनालय को हमारे लिए बनाया है।"
6 तब यीशु उन लोगों के साथ चल दिए।
जब यीशु घर से बहुत दूर नहीं थे तभी
रोमी आफ़िसर ने अपने कुछ दोस्तों के द्वारा
कहलाया कि यीशु उसके घर आने का कष्ट
न करें, क्योंकि वह स्वयं इस लायक नहीं
है। 7 उसने कहा, "इसी वजह से मैं आपके
पास आने से हिचकिचा रहा था। 8 इसलिए
कि मेरे पास भी अधिकार है और सैनिक मेरे
अधीन हैं। मैं एक से कहता हूँ, 'जाओ,' तो
वह जाता है। दूसरे से कहता हूँ, 'आओ', तो
वह आ जाता है, 'यह करो', तो वह करता
है।"
9 यह सुन कर यीशु को उस व्यक्ति पर
आश्चर्य हुआ और अपने साथ चलने वाली
भीड़ की तरफ़ मुड़ कर कहा, "सच यह है
कि इस्राएलियों में भी मैंने ऐसे विश्वास को
नहीं पाया है।"
10 भेजे हुए लोग जब घर लौटे, तो उन्होंने
नौकर को बिल्कुल ठीक पाया।
11 दूसरे दिन भीड़, यीशु मसीह के तमाम
शिष्य, और वह नाइन नामक गाँव पहुँचे।
12 गाँव के मुहाने पर पहुँचते ही एक
नवजवान की अर्थी को देखा गया। वह
अपनी विधवा माँ का एकलौता बेटा था और
उस गाँव का एक बड़ा झुण्ड अर्थी के साथ
था।
13 उस महिला को देखते ही यीशु को तरस
आया और उन्होंने कहा, "रो मत।"
14 पास आकर यीशु ने अर्थी को छू लिया
और उसे उठाने वाले तुरन्त वहीं ठहर गए।
वह बोले, "हे नवजवान, उठ कर बैठो।"
15 वह मुर्दा नवजवान उठ बैठा और बातें
करने लगा। यीशु ने उसे उसकी माँ के सुपुर्द
कर दिया। 16 हर एक के ऊपर डर सा छा
गया और सभी परमेश्वर की बड़ाई करते हुए
कहने लगे कि "हमारे बीच में एक बड़ा नबी
उठ खड़ा हुआ है और परमेश्वर हम से भेंट
करने उतर आए हैं।" 17 सारे यहूदिया और
आस-पास के सभी इलाके में यह बात फैल
गई।
18 इन बातों की सूचना यूहन्ना के शिष्यों ने
यूहन्ना को दी। 19 अपने शिष्यों में से दो को
बुलाकर यूहन्ना ने यीशु के पास यह पुछवाने
के लिए भेजा कि जो आने वाले थे वह आप
ही हैं या हम किसी और का इन्तज़ार करें।
20 वे दोनों आकर यीशु से पूछने लगे,
"यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें आपके

पास यह पूछने के लिए भेजा है कि जो आने
वाले थे वह आप ही हैं या हम किसी और
का इन्तज़ार करें।”
21 तभी यीशु मसीह ने अनेकों बीमारियों,
कष्टों और प्रेतात्माओं से पीड़ित लोगों को
आज़ाद करने के साथ अँधों को रोशनी दी।
22 उनका उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, “जो
कुछ देख रहे हो, सुन रहे हो, वह सब जाकर
यूहन्ना को बता दो कि अँधे देखते हैं, लंगड़े
चल रहे हैं और ज़रूरतमन्द और असहाय
लोगों को खुशी की खबर सुनाई जा रही है।
23 और फ़ायदे में वही है जो मेरी वजह से
दुविधा में नहीं पड़ेगा।”
24 जब वे संदेशवाहक वापस लौट गए,
तो वह लोगों से यूहन्ना के बारे में कहने
लगे, “तुम लोग जंगल में क्या देखने गए थे?
हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? 25 लेकिन
तुम देखने क्या गए थे? कीमती कपड़े पहने
हुए व्यक्ति को? देखो, जो कीमती कपड़े
पहिनते है, वे राजमहल में रहा करते हैं।
26 लेकिन वहाँ देखने क्या गए थे? एक नबी?
हाँ, एक नबी से भी बड़े व्यक्ति को। 27 इसी
के बारे में लिखा है, ‘देखो, मैं तुम्हारे सामने
एक खबर देने वाले को भेज रहा हूँ, जो
तुम्हारे आने से पहले तुम्हारे आने की तैयारी
करेगा। 28 मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि
आज तक जो भी लोग पैदा हुए उन में से
यूहन्ना से बढ़ कर कोई नहीं था। लेकिन फिर
भी परमेश्वर के राज्य में जिस को सब से
कम समझा जाता है, वह यूहन्ना से भी बड़ा
है।”
29 जब सभी लोगों ने यह सब सुना, तो
टॅक्स इकट्ठा करने वालों ने भी हामी भरते
हुए कहा, कि परमेश्वर का रास्ता ही सही
है, क्योंकि यूहन्ना उन्हें बपतिस्मा दे चुका था।
30 लेकिन फ़रीसियों और धर्म के शास्त्रियों ने
परमेश्वर के रास्ते को ठुकरा दिया क्योंकि
उन्होंने यूहन्ना के बपतिस्मे का इन्कार किया।
31 यीशु ने कहा, “मैं इस पीढ़ी के लोगों
की तुलना किस से करूँ? वे किस तरह के
लोग हैं यह मैं कैसे बताऊँ? 32 वे उन बच्चों
के समान हैं, जो चौराहे में खेलते हुए अपने
दोस्तों से शिकायत करते हैं, ‘हम ने तुम्हारे
लिए शादी में बजने वाली धुन बजाई, लेकिन
तुमने नाच नहीं दिखाया, इसलिए हम ने वह
राग अलापी जो अंत्येष्टि के समय की है, तब
भी तुम रोए नहीं!’ 33 यूहन्ना बपतिस्मा देने
वाला न रोटी खाया करता था, न अंगूर का
रस पीता था, लेकिन तुम उसे दुष्टात्मा वाला
व्यक्ति कहते थे। 34 दूसरी तरफ़ मनुष्य का
पुत्र खाना खाता है और अंगूर का रस पीता
है और तुम्हारी नज़र में वह पेटू, पियक्कड़,
टॅक्स इकट्ठा करने वालों और दुष्टों का दोस्त
है। 35 लेकिन ज्ञान को वे ही लोग परख सकते
हैं जो सचमुच ज्ञानी हैं।”
36 उन में से एक फ़रीसी बार-बार यीशु को
अपने घर बुलाता रहा था, इसलिए यीशु
उसके घर खाने पर गए। 37 उसी गाँव में
एक बुरी चालचलन वाली स्त्री रहा करती
थी। फ़रीसी के घर में यीशु की दावत की
खबर सुन कर वह एक इत्र की बोतल लेकर
वहाँ आयी। 38 वह यीशु के पास पीछे खड़ी,
रोते-रोते उनके पाँवों को आँसुओं से भिगाते
हुए, अपने बालों से पोंछने लगी। उसने उन
पाँवों को बार-बार चूमा और इत्र मला।
39 वह फ़रीसी मन ही मन सोचने लगा,
“अगर यीशु एक नबी होते, तो जान जाते
कि उन्हें छूने वाली इस स्त्री का चालचलन
अच्छा नहीं है।”
40 यीशु ने उससे कहा, “शिमोन, मैं तुम
से कुछ कहना चाहता हूँ।” शिमोन ने कहा,
“गुरू जी, कहिए।”

41 “एक महाजन के दो कर्ज़दार थे। एक
के ऊपर पाँच सौ चाँदी के सिक्के और दूसरे
के ऊपर पचास चाँदी के सिक्कों का कर्ज़ था।
42 जब वे कर्ज़ लौटा न सके, तो उसने उन
दोनों को माफ़ कर दिया। मुझे बताओ कौन
उससे ज़्यादा प्रेम करेगा?”
43 शमौन ने कहा, “मैं सोचता हूँ जिस का
ज़्यादा माफ़ किया गया।” यीशु ने कहा, “तुम
बिल्कुल सच कह रहे हो।”
44 उस स्त्री की तरफ़ मुड़ कर यीशु ने शमौन
से कहा, “क्या तुम इस स्त्री को देख रहे हो।
मैं तुम्हारे घर में आया और तुमने मेरे पैरों
को धोने के लिए पानी नहीं दिया। लेकिन
इसने मेरे पैरों को अपने आँसुओं से धोया
और अपने बालों से पोछा। 45 तुमने मुझे चूमा
नहीं, लेकिन जब से मैं यहाँ आया हूँ, यह मेरे
पैरों को चूमती जा रही है। 46 तुमने मेरे सिर
पर तेल नहीं उण्डेला, लेकिन इस महिला ने
मेरे पैरों पर खुशबूदार तेल उण्डेल दिया है।
47 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि इसके बहुत
से अपराध माफ़ किए जा चुके हैं, क्योंकि
इसने बहुत प्रेम किया है। लेकिन जिस का
थोड़ा माफ़ किया गया है, वह कम प्रेम करता
है।”
48 यीशु ने स्त्री से कहा, “तुम्हारे अपराध
माफ़ हो चुके हैं।”
49 यीशु के साथ खाना खाने वाले दूसरे
लोग आपस में कहने लगे, “यह कौन है जो
अपराधों को भी माफ़ कर सकता है?”
50 यीशु ने स्त्री से कहा, “तुम्हारे विश्वास
ने तुम्हें बचा लिया है, खुशी खुशी जाओ।”

8 इसके तुरन्त बाद यीशु परमेश्वर
के राज्य की खुशखबरी[a] सुनाते हुए
गाँव-गाँव गए और बारह जन उनके साथ
थे। 2 कुछ महिलाएँ जो गंदी आत्माओं और
कमज़ोरियों से आज़ाद की गई थीं, वे भी
साथ में थीं: जिस मरियम मगदलीनी में से
सात बुरी आत्माएँ निकाली गई थीं, 3 और
हेरोदेस के भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना
और सूसन्नाह और बहुत सी अन्य स्त्रियाँ,
ये सभी अपनी सम्पत्ति से यीशु को सहयोग
दिया करती थीं।
4 जब चारों तरफ़ के गाँव से बहुत से लोग
आकर भीड़ लगाने लगे, तो यीशु दृष्टान्त
देकर सिखाने लगेः
5 “एक बीज बोने वाला बीज बोने निकला।
जब वह बो रहा था, कुछ रास्ते के किनारे
गिरे और पैरों से कुचल दिए गए और
चिड़ियों ने आकर उन्हें चुग लिया। 6 और
कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे और जैसे ही
अंकुर निकले, तो नमी की कमी में सूख गए।
7 कुछ कँटीली झाड़ियों में गिरने पर उन्हीं के
साथ बढ़ गए और काँटों ने उन्हें दबा लिया।
8 और कुछ अच्छी भूमि पर गिरे, और उग
कर सौ गुणा फलवन्त हो गए।” यह सब
कहने के बाद यीशु ने ऊँची आवाज़ में कहा,
“जो सुनने में दिलचस्पी रखता है वह सुन
ले।”
9 यीशु के शिष्यों ने उन से पूछा, “इस
दृष्टान्त का मतलब क्या है?”
10 यीशु ने कहा, “परमेश्वर के राज्य के
रहस्यों की समझ तुम्हें दी गई है, लेकिन दूसरे
लोगों को मैं दृष्टान्त से सिखाता हूँ, ताकि
देखते हुए वे देख न सकें और सुनते हुए वे
समझ न सकें। 11 “दृष्टान्त यह हैः बीज तो
परमेश्वर का शब्द है। 12 रास्ते के किनारे
के वे हैं, जो सुनते हैं, तब शैतान आकर
उनके भीतर से शब्द को उठा ले जाता है
ताकि वे लोग सुन कर मुक्ति न पा जाएँ।

[a] **8.1** सुसमाचार

13 चट्टान पर के वे हैं, जो सुन कर खुशी
से शिक्षा को अपना लेते हैं, लेकिन उनकी
जड़ें गहराई में नहीं जा पाती हैं। कुछ समय
के लिए वे विश्वास कर लेते हैं, लेकिन
परीक्षा के समय पीछे हट जाते हैं। 14 जो
कँटीली झाड़ियों में गिरे उन लोगों की तरफ़
इशारा करते हैं, जो वचन सुनने के बाद
बढ़ते हैं, लेकिन चिन्ताओं, इस जीवन के
ऐश-ओ-आराम और दौलत की चाह में फँसने
से किसी काम के नहीं रह जाते। 15 लेकिन
अच्छी ज़मीन में गिरने वाला बीज उनकी
ओर संकेत है, जो संदेश सुनने के बाद अच्छे
मन से सम्भालकर रखते हैं और धीरज से
फल उत्पन्न करते हैं।

16 दिये को जलाकर कोई भी व्यक्ति
किसी बर्तन से ढाँकता नहीं है या चारपाई
के नीचे नहीं रखता, लेकिन दिये को दीपदान
पर रखता है ताकि जो भीतर आते हैं, उन्हें
रोशनी मिल सके। 17 क्योंकि ऐसा कुछ भी
गुप्त नहीं है जो हमेशा गुप्त रहेगा, कुछ भी
ऐसा छिपा नहीं है जो हमेशा छिपा रहेगा।
18 इसलिए सावधान रहो कि तुम कैसे सुनते
हो? क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा
और जिस के पास नहीं है उसके पास से वह
सब ले लिया जाएगा, जो कि उसके पास है।"

19 तब उनकी माँ और भाई उन से मिलने
आए लेकिन भीड़ के कारण मिल न सके।
20 यीशु से कहा गया, 'आपकी माँ जी और
भाई बाहर आपका इन्तज़ार कर रहे हैं।"

21 यीशु ने इसके जवाब में उन लोगों से
कहा, "मेरी माँ और मेरे भाई वे सभी हैं, जो
मेरी बातें सुन कर वैसा ही करते हैं, जैसा मैं
कहता हूँ।"

22 एक दिन की बात है जब यीशु अपने
शिष्यों के साथ नाव पर थे, यीशु ने उन से
कहा, "चलो, झील के उस पार चलते हैं।"
और वे उस तरफ़ खेने लगे। 23 जब वे चले जा
रहे थे, तभी यीशु की आँख लग गई। झील
में तूफ़ान उठने की वजह से, नाव में पानी
भरने लगा और वे सब बड़े खतरे में पड़ गए।
24 यीशु के पास आकर, उन्हें जगाते हुए वे
कहने लगे, "स्वामी, स्वामी! अब तो हम
मर जाएँगे।" यीशु जाग गए और उन्होंने हवा
और उठने वाली लहरों को डाँटा। तुरन्त वे
थम गए और शान्ति हो गई।

25 यीशु ने उन से कहा, "तुम्हारा विश्वास
कहाँ है?" डरते और आश्चर्य करते हुए वे
एक दूसरे से पूछने लगे, "यह किस तरह के
इन्सान हैं! क्योंकि यह हवा और पानी को
आज्ञा देते हैं और वे उनकी बात मानते हैं।"

26 उन्होंने गिरासेनियों की तरफ़ खेना शुरू
किया, जो झील के उस पार था। 27 जब यीशु
नाव से ज़मीन पर उतरे, उनकी मुलाकात एक
आदमी से हुई, जो बहुत समय से भूतों से
पीड़ित था। वह कपड़े नहीं पहिनता था और
घर में रहने के बजाए कब्रों में रहा करता था।

28 यीशु को देखते ही चिल्लाते हुए वह उनके
सामने गिर पड़ा और ऊँची आवाज़ में बोला,
"परमेश्वर के पुत्र यीशु, मैं दोहाई देता हूँ कि
मुझे न सताएँ।"

29 यह इसलिए क्योंकि यीशु ने हुक्म दिया
था, कि भूत उसमें से निकल जाए। क्योंकि
अक्सर वह उसे जकड़ते थे। उसे जंजीरों
और हथकड़ियों से बान्ध कर खास निगरानी
में रखा जाता था। वह सांकलों को तोड़
कर भूतों द्वारा जंगल में ले जाया जाता था।
30 यीशु ने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या
है?" उसने कहा, "सेना!" क्योंकि उसमें
बहुत से भूत समा गए थे।

31 उन भूतों ने यीशु से बिनती की, कि वह
उन्हें अधोलोक में जाने की आज्ञा न दें।
32 वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड

चर रहा था। भूतों ने यीशु से दोहाई देकर
कहा, कि उन्हें सूअरों में जाने दिया जाए।
और यीशु ने ऐसा होने दिया। 33 तब वे भूत
उस इन्सान में से निकल कर सूअरों में समा
गए। पूरा का पूरा वह झुण्ड पहाड़ी के ऊपर
से नीचे झील में गिर कर डूब गया।
34 उनकी देख-रेख करने वाले ये सब देख
कर भागे और जाकर गाँव में यह खबर सुना
दी। 35 सुन कर लोग जब यह देखने आए तो
यीशु के चरणों पर उस भूत पीड़ित व्यक्ति
को कपड़े पहने और सही मानसिक हालत में
देख कर डर से गए। 36 जो लोग उसे जानते
थे, उन्होंने इन लोगों को बता दिया कि यह
भूत पीड़ित व्यक्ति किस तरह से अच्छा
हो गया। 37 तब गिरासेनियों के आस-पास
के सभी लोग गिड़गिड़ाकर कहने लगे, कि
यीशु वहाँ से चले जाएँ, क्योंकि वे लोग बहुत
ज़्यादा डर गए थे। तब यीशु नाव पर बैठ कर
वापस चले गए।
38 जिस व्यक्ति में से ये भूत निकाले गए
थे उसने यीशु से बिनती की कि यीशु उसे
अपने साथ रहने दें। 39 लेकिन यीशु ने उसे
यह कहते हुए भेज दिया, “अपने घर वापस
जाओ और बताओ कि यीशु ने उसके लिए
कैसे बड़े काम किए हैं।” वह सारे शहर में
लोगों को बताने लगा।
40 यीशु के वापस लौटने पर लोगों ने बड़ी
खुशी से उनका स्वागत किया, क्योंकि वे
सब उनका इन्तज़ार ही कर रहे थे। 41 तभी
याईर नाम का एक व्यक्ति वहाँ आ पहुँचा।
वह एक आराधनालय का प्रबंधक था। यीशु
के कदमों पर गिर कर वह उन से प्रार्थना
करने लगा कि वह उसके घर आएँ। 42 उसके
पास बारह वर्ष की एकलौती बेटी थी, और
वह मरने ही वाली थी। यीशु जब उसके घर
की तरफ़ चलने लगे, एक बड़ी भीड़ उन पर
गिरी पड़ती थी।
43 तभी एक महिला जिस ने अपने खून
बहने की बीमारी से आज़ाद होने के लिए
अपना सारा पैसा डॉक्टरों पर लुटा दिया था,
और फिर भी ठीक नहीं हुई थी, 44 पीछे से
आई और यीशु के वस्त्र के एक छोर को
उसने चुपके से छू लिया और उसी वक्त
उसका खून बहना रुक गया।
45 यीशु ने कहा, “मुझे किस ने छुआ है?”
जब हर व्यक्ति इन्कार करने लगा, तभी
पतरस और उसके साथियों ने यीशु से कहा,
“स्वामी जी, लोग भीड़ लगाए हुए हैं और
आपके ऊपर गिरे पड़ रहे हैं और आप पूछ
रहे हैं कि किस ने आपको छुआ?”
46 यीशु ने उत्तर दिया, “किसी ने तो मुझे
छुआ है, क्योंकि मेरे भीतर से शक्ति निकलने
का एहसास मुझे हुआ है।”
47 जब उस महिला ने देखा कि मैं छिप नहीं
सकती, तब घबराते हुई आयी, और उनके
पाँवों पर गिरते हुए उसने बताया कि यीशु
को उसने क्यों छुआ था और तुरन्त अच्छी
हो गई थी।
48 यीशु ने उससे कहा, “बेटी, तुम्हारे
विश्वास ने तुम्हें ठीक कर दिया है, खुशी
से जाओ।”
49 इसी दौरान किसी ने आराधनालय के
प्रबंधक के यहाँ से आकर खबर दी कि
उसकी बीमार बेटी मर चुकी है, और यीशु
को तकलीफ़ उठाने की ज़रूरत नहीं है।
50 यीशु ने यह सुन कर उत्तर दिया, “डरो
मत, केवल भरोसा रखो, और वह जी
उठेगी।”
51 प्रबंधक के घर आकर यीशु ने पतरस,
यूहन्ना, याकूब और लड़की के माता-पिता

को छोड़ किसी और को अपने साथ अन्दर
नहीं आने दिया। 52 सब लोग वहाँ रो पीट रहे
थे, लेकिन यीशु ने कहा, “मत रो, वह मरी
नहीं है, सो रही है।”
53 यीशु की बात सुन कर वे हँसने लगे,
क्योंकि वह मर चुकी थी।
54 यीशु ने लड़की के हाथ पकड़ कर उठाते
हुए कहा, “हे लड़की, उठो!”
55 तब लड़की की जान उसमें वापस आ
गई और वह उठ कर बैठ गई। यीशु ने उसके
माता-पिता से उसे कुछ खाने को देने के लिए
कहा। 56 लड़की के माता-पिता आश्चर्य से भर
गए, लेकिन यीशु ने उन्हें किसी को भी बताने
से मना किया।

9 तब यीशु ने बारह शिष्यों को बुलाकर
उन्हें सब भूत-प्रेतात्माओं को निकालने
और बीमारियों को ठीक करने की ताकत[a]
और अधिकार दिया, 2 उन्हें परमेश्वर के
राज्य का समाचार देने और बीमारियों से
आज़ाद करने के लिए भेजा।
3 यीशु ने उन से कहा, “सफ़र के लिए कुछ
मत लेना, न लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपये
और न दो कमीज़ें। 4 और जिस घर में तुम
पहले पहुँचो, वहीं रहना, और वहीं से विदा
होना। 5 जो कोई तुम्हारा स्वागत न करे, उस
इलाके से निकलते हुए अपने पाँवों की धूल
झाड़ देना ताकि उनके खिलाफ़ सबूत हो।”
6 इसलिए वे निकल कर गाँव-गाँव खुशी
की खबर सुनाते, और हर जगह लोगों को
स्वस्थ करते गए।
7 देश के चौथाई भाग का राजा हेरोदेस यह
सब सुन कर घबरा गया, क्योंकि कुछ का
कहना था कि यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा
है। 8 कुछ कह रहे थे कि यह तो एलिय्याह
है, और दूसरे उसे पुराने समय का नबी समझ
रहे थे।
9 हेरोदेस बोल उठा, “यूहन्ना को तो खुद
मैंने मरवाया था, फिर यह मनुष्य कौन है
जिस के बारे में मैं सुन रहा हूँ?” वह उससे
मुलाकात भी करना चाहता था।
10 प्रेरितों ने वापस लौटने पर वे सब बातें
बतायीं जो उन्होंने की थीं। तब वह उनको
अपने साथ लेकर चुपचाप बैतसैदा के वीरान
इलाके में चले गए। 11 लोग यह जान कर
उन से भेंट करने आए और यीशु ने उन से
मुलाकात की। यीशु ने उन्हें परमेश्वर के
राज्य के बारे में सिखाया और बीमार लोगों
को अच्छा कर दिया।
12 दिन ढलने पर बारहों ने आकर यीशु
से कहा, “भीड़ को विदा कीजिए ताकि
आस-पास के इलाकों में जाकर रहने और
खाने का इन्तज़ाम कर सकें क्योंकि यह तो
वीरान जगह है।”
13 लेकिन यीशु ने उन से कहा, “तुम्हीं खाने
के लिए उन्हें कुछ दो।” और वे बोले, “पाँच
रोटियों और दो मछली के सिवाय हमारे पास
कुछ नहीं है। खाना खरीद कर लाने ही से
कुछ हो सकता है।” वहाँ करीब पाँच हज़ार
आदमी थे।
14 यीशु ने उन से कहा, “पचास पचास
की कतार में लोगों को बैठा दो।” 15 शिष्यों
ने लोगों को इसी तरह बैठा दिया। 16 तब
यीशु ने रोटियाँ और मछलियाँ हाथ में लेकर
आकाश की तरफ़ देखते हुए धन्यवाद किया,
और रोटियाँ तोड़ तोड़ कर अपने शिष्यों को

[a] **9.1** योग्यता

देते गए ताकि लोगों में बाँट दें। 17 सब लोगों
के भरपूर खा लेने के बाद उन्होंने बचे हुए
टुकड़ों से भरी बारह टोकरियाँ उठायीं।
18 जब यीशु अकेले प्रार्थना कर रहे थे, और
शिष्य उनके साथ थे, तब यीशु ने उन से पूछा,
“मेरे बारे में लोगों के ख्याल क्या हैं?”
19 उन लोगों ने उत्तर दिया, “कि आप यूहन्ना
बपतिस्मा देने वाले हैं या एलिय्याह, लेकिन
कुछ दूसरों के हिसाब से, पुराने समय के
कोई एक नबी जी उठे हैं।”
20 यीशु ने उन से पूछा, “लेकिन तुम मुझे
क्या कहते हो?” पतरस ने उत्तर दिया,
“परमेश्वर का मसीह।”
21 तब यीशु ने चेतावनी देकर आज्ञा दी
कि “वे यह बात किसी को न बताएँ।”
22 उन से यीशु ने यह भी कहा, “यह ज़रूरी
है कि मैं बहुत दुःख उठाऊँ और प्राचीनों,
प्रधान याजक, महापुरोहित और शास्त्रियों
द्वारा तुच्छ ठहराए जाने के बाद मार डाला
जाऊँ और तीसरे दिन जी उठूँ।”
23 तब यीशु ने सब लोगों से कहा, “अगर
कोई मुझे मानना चाहे, तो अपनी मनमानी
करना छोड़ दे, हर दिन अपना क्रूस उठाए
और मेरे कहने अनुसार करे। 24 क्योंकि जो
कोई अपनी जान बचाना चाहेगा वह उसे
खो देगा, लेकिन जो मेरे लिए जिएगा, वह
उसे बचा लेगा। 25 यदि इन्सान सारी दुनिया
को पा ले और अपनी आत्मा को खो दे या
उसका नुकसान उठाए, तो उसे क्या फ़ायदा
होगा? 26 जो कोई मुझ से और मेरी बातों से
इस दुनिया में शर्माएगा, मैं भी अपनी, अपने
पिता और पवित्र स्वर्गदूतों की शान के साथ
आऊँगा, तो उससे शर्माऊँगा।
27 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े
हैं, उन में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक
परमेश्वर के शासन को न देख लें, तब तक
मरेंगे नहीं।”
28 इन बातों के लगभग आठ दिन बाद यीशु
पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ
लेकर परमेश्वर पिता से सहभागिता करने
गए। 29 जब यीशु प्रार्थना कर रहे थे, तभी
उनका चेहरा बदल सा गया और उनके कपड़े
सफ़ेद होकर चमकने लगे। 30 एक दम से,
मूसा और एलिय्याह, उन से बातें करते हुए
दिखे। 31 ये लोग अजीब रोशनी से भरे हुए
थे और यीशु की मौत पर बातचीत कर रहे
थे। 32 पतरस और उसके साथी नींद के झोंके
में थे, और जब थोड़ा सचेत हुए, तो यीशु के
बदले हुए महिमामय रूप को और उनके साथ
दो पुरुषों को खड़ा देखा।
33 मूसा और एलिय्याह के जाने के बाद,
पतरस ने यीशु से कहा, “हे स्वामी, हमारे
लिए यहाँ रहना अच्छा है। इसलिए हम तीन
तम्बू खड़े करेंगे, एक आपके लिए, एक मूसा
के लिए और एक एलिय्याह के लिए। बिना
सोचे समझे उसने यह कह दिया था।
34 वह यह कह ही रहा था, कि बादल ने
आकर उन्हें घेर लिया, जिस की वजह से वे
डर गए। 35 इस बादल में से आवाज़ आयी
कि यह मेरा प्यारा बेटा है, इसकी सुनो।
36 उस आवाज़ के बंद होते ही यीशु अकेले
पाए गए। शिष्य खामोश खड़े रहे और बाद
में भी ये बातें किसी को न बतायीं।
37 दूसरे दिन उनके पहाड़ से उतरते
ही बहुत से लोग यीशु से मिलने आए।
38 अचानक ही भीड़ में से एक आदमी चिल्ला

उठा, “गुरू जी, देखिए मेरे पास एक ही
बेटा है, 39 एक भूत उसे पकड़ता है, और
वह चिल्ला उठता है। 40 मैंने आपके शिष्यों से
बिनती की कि वे भूत को निकालें, लेकिन वे
नाकामयाब रहे।”
41 यीशु ने कहा, “हे अविश्वासियो और
ज़िद्दी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रह कर
सहता रहूँगा? अपने बेटे को यहाँ लाओ।”
42 उसके आते-आते प्रेतात्मा ने उसे मरोड़ते
हुए पटक दिया, लेकिन यीशु ने प्रेतात्मा को
डाँटा और लड़के को अच्छा करके पिता को
सौंप दिया। 43 परमेश्वर के इस बड़े काम को
देख कर सब लोग अचम्भा करने लगे, तब
यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,
44 “इन बातों पर ध्यान दो क्योंकि मैं लोगों
के हाथ पकड़वाया जाऊँगा।”
45 लेकिन वे इस बात को न समझे और यह
बात उन से छिपी रही कि वे उसे न जानें और
वे इस विषय में यीशु से पूछने में संकोच करते
रहे। 46 उसके बाद उनके बीच इस बात पर
चर्चा होने लगी कि उन में से कौन बड़ा है?
47 तब यीशु ने यह जान कर कि वे अपने
मनों में क्या सोच रहे थे, एक बच्चे को लेकर
अपने पास खड़ा किया, 48 और उन से कहा,
“जो कोई मेरे नाम से इस बच्चे को अपनाता
है, वह मुझे अपनाता है, और जो कोई मुझे
अपनाता है वह मेरे भेजने वाले को अपनाता
है, क्योंकि जो तुम में छोटों में से भी छोटा है,
वही बड़ा है।”
49 तब यूहन्ना ने कहा, “हे स्वामी, हम ने
एक मनुष्य को भूत-प्रेत निकालते देखा था,
और उसे मना किया कि वह ऐसा न करे,
क्योंकि वह हम सब के साथ मिल कर काम
नहीं कर रहा है।”
50 यीशु ने यूहन्ना को यह कहते हुए ऐसा
करने से मना किया, “उसे मना मत करो
क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ़ में नहीं, वह
तुम्हारी तरफ़ है।”
51 यीशु के आकाश पर उठाए जाने के कुछ
समय पहले यीशु ने यरूशलेम जाने का इरादा
किया। 52 उन्होंने खुद जाने से पहले कुछ
शिष्यों को भेजा। सामरियों के गाँव जाकर
उन्होंने यीशु के लिए जगह तैयार करनी
चाही। 53 लेकिन क्योंकि यीशु यरूशलेम जा
रहे थे इसलिए सामरी समाज के लोगों ने
अपने गाँव में उन्हें इज़ाज़त नहीं दी। 54 यह
देख कर यीशु के शिष्य याकूब और यूहन्ना ने
कहा, “हे स्वामी, अगर आप हुक्म करें तो
हम आकाश से आग गिरा कर उन्हें राख कर
डालें।”
55 लेकिन यीशु ने मुड़ कर उन्हें डाँटा और
कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा
के हो। क्योंकि मैं लोगों को बर्बाद करने नहीं,
लेकिन बचाने के लिए आया हूँ।” 56 फिर वे
दूसरे गाँव को चले गए।
57 जब वे रास्ते पर ही थे, किसी ने यीशु से
कहा, “जहाँ-जहाँ आप जाएँगे, मैं भी आपके
साथ आऊँगा।”
58 यीशु ने उससे कहा, “लोमड़ियों के भट
और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं,
लेकिन मेरे लिए सिर धरने की भी जगह नहीं
है।”
59 यीशु ने दूसरे से कहा, “मेरे शिष्य बन
जाओ।” उसने कहा, “हे स्वामी, मेरे पिता

के देहान्त के बाद मैं आपका शिष्य बन
जाऊँगा।”
60 यीशु ने उससे कहा, “मरे हुओं को अपने
मुर्दों की फ़िकर करने दो, तुम जाकर मुक्ति
की खुशखबरी[a] सुनाओ।”
61 किसी दूसरे व्यक्ति ने कहा, “हे स्वामी,
मैं आपका शिष्य बन जाऊँगा, लेकिन पहले
मैं अपने रिश्तेदारों से मिल कर आता हूँ।”
62 यीशु ने जवाब में कहा, “जो कोई अपना
हाथ हल पर रख कर पीछे देखता है, वह
परमेश्वर के राज्य के लायक नहीं है।”

10 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर
और लोगों को काम दिया जिस-
जिस नगर और जगह को वह खुद जाने वाले
थे, वहाँ उन्हें दो-दो करके अपने से पहले
उन्हें भेजा।
2 यीशु ने उन से कहा, “पके खेत बहुत
हैं, लेकिन काम करने वालों की कमी है।
इसलिए खेत के मालिक से बिनती करो
कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज
दें। 3 “जाओ, देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान
भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ। 4 इसलिए न
बटुआ, न झोली, न जूते लो; और न रास्ते
में किसी को नमस्कार करो। 5 जिस किसी
घर में जाओ, पहले उस घर की शान्ति के
लिए प्रार्थना करो। 6 अगर वहाँ कोई शान्ति
के योग्य होगा, तो तुम्हारी शान्ति उस पर
बनी रहेगी, नहीं तो तुम्हारे पास वापस लौट
आएगी। 7 उसी घर में रहो, और जो कुछ
उन से मिले, वही खाओ और पीओ, क्योंकि
मजदूर को उसकी मजदूरी ज़रूर ही मिलनी
चाहिए। घर-घर मारे फिरते न रहना।
8 जिस जगह जाओ, और लोग तुम्हारा
स्वागत करें, जो कुछ तुम्हारे सामने रखें, वही
खाओ। 9 वहाँ के बीमारों को अच्छा करो
और उन से कहो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे
पास आ चुका है।’ 10 लेकिन जिस जगह तुम
जाओ, और वहाँ के लोग तुम्हें न अपनाएँ, तो
वहाँ के बाज़ारों में जाकर कहो, 11 ‘तुम्हारे
नगर की धूल, जो हमारे पाँवों में लगी है,
हम तुम्हारे सामने झाड़ रहे हैं। फिर भी यह
जान लो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे लिए
यहीं है।’ 12 मैं तुम से सच कहता हूँ कि उस
दिन उस नगर की हालत से सदोम की हालत
ज़्यादा सहने लायक होगी।
13 हाय खुराज़ीन! हाय बैतसैदा! जो शक्ति
के काम[b] तुम में किए गए, यदि वे सूर और
सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़ कर और
राख में बैठ कर वे कब के मन बदल लेते।
14 लेकिन इन्साफ़ के दिन तुम्हारी हालत से
सूर और सैदा की हालत ज़्यादा सहने लायक
होगी।
15 हे कफ़रनहूम, क्या तुम स्वर्ग तक ऊँचे
किए जाओगे? तुम तो अधोलोक तक नीचे
किए जाओगे।
16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है,
और जो तुम्हें ठुकराता है, वह मुझे ठुकराता
है। जो मुझे ठुकराता है, वह मेरे भेजने वाले
को ठुकराता है।”
17 वे सत्तर खुशी से वापस लौटकर कहने
लगे, “हे स्वामी, आपके नाम से भूत-प्रेत
हमारे गुलाम हैं।”
18 यीशु ने उन से कहा, “मैं शैतान को
बिजली की तरह आकाश से गिरता हुआ
देख रहा था। 19 देखो, मैंने तुम्हें साँपों और
बिच्छुओं को रौंदने और दुश्मन की सारी
ताकत को तोड़ने का अधिकार दिया है। तुम्हें
किसी चीज़ से नुकसान नहीं होगा। 20 फिर
भी इस से खुश न हो, कि भूत-प्रेत के ऊपर

[a] **9.60** परमेश्वर के राज्य का संदेश [b] **10.13** चमत्कार

तुम्हारा नियंत्रण है, लेकिन इस से कि तुम्हारे
नाम स्वर्ग में लिखे हैं।"
21 उसी क्षण यीशु पवित्र आत्मा में होकर
खुशी से भर गए और कहा, "हे पिता,
स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं आपका
धन्यवाद करता हूँ, कि आपने इन बातों को
ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और
बालकों पर प्रगट किया। हाँ, हे पिता, क्योंकि
आपको यही अच्छा लगा 22 पिता ने हर बात
की ज़िम्मेदारी मुझे सौंप दी है। पिता को छोड़
और कोई नहीं जानता कि बेटा कौन है केवल
पिता। बेटे को छोड़ किसी को नहीं मालूम
कि पिता कौन है। और केवल उस जन पर
जिस पर बेटा उन्हें प्रगट करना चाहे।"
23 यीशु ने पीछे मुड़ कर अपने शिष्यों से
अकेले में कहा, "वे आँखें आशीषित हैं, जो
वे सब देख रही हैं, जो तुम देख रहे हो। 24 मैं
तुम से कहता हूँ कि जो तुम देख रहे हो और
तुम सुन रहे हो वह सब बहुत से राजा और
नबी देखना माँगते थे, लेकिन न सुन सके और
न देख सके।"
25 तुरन्त एक शास्त्री ने यीशु को परखते
हुए पूछा, "हमेशा का जीवन[a] पाने के लिए
मैं क्या करूँ?"
26 यीशु ने कहा, "नियम शास्त्र में क्या
लिखा है। तुम पढ़ते कैसे हो?"
27 शास्त्री ने जवाब में कहा, "तुम अपने
दिल, जान और ताकत से प्रभु परमेश्वर से
प्रेम रखो और जितना खुद से रखते हो, दूसरे
लोगों से भी और अपने पड़ोसी से भी।"
28 यीशु पलटकर बोले, "तुमने सही जवाब
दिया है, जाओ, ऐसा करते हुए जीवन
बिताओ तो हमेशा जिओगे।"
29 लेकिन उसने अपने आपको धर्मी
दिखाने की इच्छा से यीशु से पूछा, "पड़ोसी[b]
का क्या मतलब है?"
30 यीशु ने उत्तर दिया, "एक पुरुष
यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि
अचानक डाकुओं ने उसे घेर लिया। उन्होंने
उसके कपड़े उतारे, मारा, पीटा और घायल
छोड़ दिया। 31 उसी रास्ते से एक याजक[c]
गुज़रा, लेकिन उसने अनदेखी कर दी।
32 एक लेवी भी वहाँ से गुज़रा, लेकिन
उसका भी वही रवैया था। 33 एक सामरी
समाज का व्यक्ति भी वहाँ से होकर जा रहा
था, लेकिन वह तरस से भर गया। 34 उसने
उसके घाव की मलहम पट्टी की, और अपने
गधे पर बैठा कर धर्मशाला में लाकर उसकी
सेवा की। 35 अगले दिन वहाँ से जाते समय
उसने धर्मशाला वाले को दो दीनार देकर
उसकी सेवा करने को कहा। यह भी कि
बाकी पैसा वह लौटने पर चुका देगा।
36 तुम्हारे ख्याल से इन तीनों में से कौन सा
व्यक्ति ज़ख्मी व्यक्ति का पड़ोसी[d] साबित
हुआ।"
37 वह बोला, "वही जिस ने उसकी मदद
की।" यीशु ने उससे कहा, "जाओ, तुम भी
ऐसा करो।"
38 जाते समय रास्ते में एक गाँव मिला,
जहाँ मार्था नामक एक महिला ने यीशु को
अपने घर में ठहराया। 39 तभी मार्था की बहन
मरियम यीशु की बातें सुनने में लीन हो गई।
40 मार्था आवभगत करते-करते थक गयी
और यीशु से कहने लगी, "मेरी बहन मेरी
मदद नहीं कर रही है, उससे कहिए कि वह
मेरी मदद करे।"

[a] **10.25** अनन्त जीवन [b] **10.29** दूसरे लोग [c] **10.31** पुरोहित [d] **10.36** सहायक या मददगार

41 लेकिन यीशु ने उत्तर दिया, “मार्था, हे
मार्था, तुम बहुत सी बातों के लिए फ़िक्र
करती रहती हो। 42 लेकिन कुछ बातें हैं, सच
पूछो तो एक ही बात बहुत ज़रूरी है। मरियम
ने उस सब से बड़े हिस्से को चुन लिया है जो
उससे छीना नहीं जाएगा।”

11 किसी जगह पर यीशु के प्रार्थना
करने के बाद शिष्यों में से एक ने
उन से कहा, “हे स्वामी, जैसे यूहन्ना ने अपने
शिष्यों को प्रार्थना करना सिखलाया था, वैसे
ही हमें भी सिखा दीजिए।”
2 यीशु ने उन से कहा, “जब तुम प्रार्थना
करो, तो कहोः हे पिता जी, आपका नाम
पवित्र माना जाए, आपका राज्य आए।
3 हमारा रोज़ का खाना, हमें रोज़ दिया जाए।
4 हमारे अपराधों को माफ़ करें, क्योंकि हम
भी उन सभी को माफ़ करते हैं, जो हमें चोट
और नुकसान पहुँचाते हैं, हमें किसी तरह से
अनुचित स्थिति में फँसने न दें।”
5 तब यीशु ने उन से कहा, “तुम में से कौन
है जिस का एक दोस्त हो, और वह आधी
रात को उसके पास जाकर उससे कहे, ‘हे
दोस्त, मुझे तीन रोटियाँ चाहिए, 6 क्योंकि
एक मुसाफ़िर दोस्त मेरे पास आया है और
उसे खिलाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं
है। 7 और वह अन्दर ही से कहे, मुझे परेशान
मत करो, दरवाज़ा बन्द है, और मेरे बच्चे मेरे
पास बिस्तर पर हैं, मैं उठ कर तुम्हें कुछ नहीं
दे सकता। 8 मैं तुम से कहता हूँ कि हालाँकि
दोस्त होने के नाते वह न भी उठे और उसे
कुछ भी न दे फिर भी उसके गिड़गिड़ाने
की वजह से वह उतनी ज़रूर देगा, जितनी
ज़रूरत होगी।
9 मैं तुम से कहता हूँ, माँगो, तो तुम्हें
दिया जाएगा, चाहत रखो, तो पा जाओगे,
खटखटाओगे तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।
10 क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है,
और जो ढूँढता है, वह पा लेता है, और जो
खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।
11 तुम में से ऐसा कौन पिता होगा कि जब
उसका पुत्र उससे रोटी माँगे, तो उसे पत्थर
दे, या मछली माँगे, तो साँप दे? 12 या अण्डा
माँगे तो उसे बिच्छू दे? 13 इसलिए जब तुम
बुरे होने के बावजूद अपने बच्चों को अच्छी
चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारे आकाशी
पिता उनको, जो माँगते हैं, पवित्र आत्मा क्यों
नहीं देंगे?”
14 फिर यीशु एक गूँगी आत्मा को निकालने
लगे। जब वह आत्मा निकल गयी, तो
व्यक्ति बोलने लगा, जिस से भीड़ को बड़ा
आश्चर्य हुआ।
15 भीड़ में से कुछ लोग कह उठे, “यीशु
अशुद्ध आत्माओं को बेलज़बूब[a] की मदद से
निकालते हैं।”
16 दूसरे कुछ लोगों ने उन्हें परखने के लिए
आकाश[b] से एक निशान माँगा।
17 उनके मनों और विचारों को जान कर
यीशु ने कहा, “जिस राज्य में एकता न
हो, वह उजड़ जाता है, और जिस घर में
एकता न हो, वह नाश हो जाता है। 18 अगर
शैतान ही खुद अपनी खिलाफ़त करने लगे
तो उसका राज्य कैसे बना रह सकता है?
क्योंकि मेरे ऊपर तुम्हारा यह इल्ज़ाम है कि
मैं बालज़बूब की मदद से अशुद्ध आत्माओं
को निकालता हूँ। 19 यदि मैं बालज़बूब की
मदद से अशुद्ध आत्माएँ निकालता हूँ, तो
तुम्हारे लोग किसकी मदद से निकालते हैं?

[a] **11.15** अशुद्ध आत्मा के स्वामी [b] **11.16** आकाश

इसलिए वे ही अपना मत दें। 20 लेकिन अगर
मैं परमेश्वर की मदद से भूत-प्रेत निकालता
हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ
पहुँचा। 21 जब एक ताकतवर इन्सान पूरी
तरह हथियार लेकर अपने घर की रखवाली
करता है, तो उसकी धन दौलत सुरक्षित
रहती है। 22 लेकिन उससे से भी ज़्यादा
ताकतवर कोई इन्सान उस पर हमला बोल
कर उसे हराता है, तो वह उसके सभी
हथियारों को जिन पर उसे भरोसा था, छीनता
है और धन दौलत को लूटकर बाँट देता
है। 23 वह जो मेरे साथ नहीं, मेरे खिलाफ़ में
है और वह जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह
बिखेरता है।

24 जब अशुद्ध आत्मा किसी इन्सान में से
निकलती है तो आराम की जगह खोजते हुए
बिना पानी की जगहों से होकर निकलती है।
जब उसे कोई जगह नहीं मिलती तो कहती
है, 'मैं अपने जिस घर से निकली थी, उसी में
लौट जाऊँगी।' 25 जब वह वहाँ पहुँचती है,
तो उस जगह को साफ़ सुथरा, सजा सजाया
पाती है। 26 तब वह अपने से अधिक बुरी
सात और आत्माओं को अपने साथ लाकर
उसमें समा जाती है और उस इन्सान की
हालत पिछली हालत से और ज़्यादा बुरी हो
जाती है।"

27 जब यीशु ये बातें कह ही रहे थे, तो भीड़
में से किसी महिला ने ऊँची आवाज़ से यीशु
से कहा, "आशीषित है वह गर्भ जिस में आप
रहे और वे छातियाँ, जिन से आपका पोषण
हुआ।"

28 लेकिन यीशु ने कहा, "सच पूछो तो धन्य
वे लोग हैं जो परमेश्वर का संदेश सुनते और
उसको मानते हैं।"

29 जैसे-जैसे भीड़ बढ़ती जा रही थी, यीशु ने
कहना जारी रखा, "यह दुष्ट पीढ़ी है क्योंकि
यह कुछ निशान चाहती है, लेकिन योना के
निशान के अलावा उन्हें और कोई निशान
नहीं दिया जाएगा। 30 जिस तरह से योना
नीनवे के लोगों के लिए निशान बना, उसी
तरह से मैं भी इस पीढ़ी के लोगों के लिए
बनूँगा। 31 दक्षिण की रानी, न्याय के दिन इस
पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होकर उन पर
दोष लगाएगी, क्योंकि वह दुनिया के छोर से
सुलैमान का ज्ञान सुनने को आयी थी, लेकिन
देखो, यहाँ वह है जो सुलैमान से भी महान
है। 32 न्याय के दिन नीनवे के लोग इस पीढ़ी
के लोगों के साथ खड़े होकर इन पर दोष
लगाएँगे, क्योंकि उन्होंने योना के प्रवचन को
सुन कर मन बदला और देखो, यहाँ वह है,
जो योना से भी बढ़ कर है।

33 कोई भी व्यक्ति दीपक जलाकर न ही
तहखाने और न टोकरी के नीचे रखता है,
लेकिन उसे दीपदान पर रखता है कि अन्दर
आने वाले को रोशनी मिले। 34 तुम्हारी देह
का दीपक तुम्हारी आँख है, जब तुम्हारी
आँख निर्मल है, तो सारी देह भी रोशनी से
जगमगा उठेगी। लेकिन जब वह बुरी है,
तो तुम्हारी देह पूरी तरह से अन्धकारमय
हो जाएगी। 35 इसलिए सावधान रहना कि
तुम्हारी रोशनी अन्धेरे में न बदल जाए।
36 इसलिए यदि तुम्हारी सारी देह जगमगाती
हो, और किसी भी हिस्से में अन्धेरा न हो,
तो वह पूरी तरह ऐसा रौशन होगा जिस तरह
दीपक अपनी चमक से तुम्हें रोशनी देता है।"

37 जब यीशु ने बोलना खत्म किया, तो एक
फ़रीसी ने उन्हें अपने साथ खाना खाने के
लिए नेवता दिया। वह भीतर जाकर खाना

खाने बैठ भी गए। 38 फ़रीसी को यह देख
कर आश्चर्य हुआ कि यीशु रीति-रिवाज़ के
मुताबिक खाना खाने से पहले नहाए नहीं।
39 लेकिन यीशु ने उससे कहा, “हे
फ़रीसियो, तुम कटोरे और थाली को बाहर से
माँजते हो, लेकिन तुम्हारे अन्दर अन्धियारा
और दुष्टता है। 40 हे बेवकूफ़ो, जिस ने बाहर
के हिस्से को बनाया, क्या उसने भीतर के
हिस्से को भी नहीं बनाया? 41 लेकिन जो
भीतर का[a] है उसे दान में दे दो, तो तुम्हारे
लिए सब कुछ शुद्ध हो जाएगा।
42 लेकिन हे फ़रीसियो, तुम पर हाय! तुम
पोदीने और सुदाब का, तथा अलग-अलग
तरह की साग-सब्ज़ियों का दसवाँ हिस्सा तो
दे देते हो, लेकिन इन्साफ़ और परमेश्वर के
प्रेम को अनदेखा करते हो। यही वे बातें हैं,
जिन्हें तुम्हें दूसरी बातों को छोड़े बिना करनी
चाहिए थीं।
43 हे फ़रीसियो, तुम पर हाय! क्योंकि तुम
आराधनालयों में आगे की जगह और बाज़ारों
में नमस्कार की आस लगाए रहते हो।
44 तुम पर हाय! क्योंकि तुम उन छिपी
हुई कब्रों की तरह हो, जिन पर लोग बिना
जाने-बूझे चलते फिरते हैं।”
45 तब यहूदी धर्म के एक ज्ञाता ने उत्तर
दिया, “हे गुरु जी, ऐसा कह कर आप हमारी
बेईज़्ज़ती कर रहे हैं।”
46 लेकिन यीशु ने कहा “तुम ज्ञानियों पर
भी हाय! क्योंकि तुम लोगों को ऐसे बोझ से
दबाते हो जिन्हें उठाना मुश्किल है, लेकिन
तुम खुद उन बोझों को एक उँगली से भी छूना
नहीं चाहते।
47 तुम पर हाय! क्योंकि तुम उन नबियों
की कब्रें बनाते हो, जिन्हें तुम्हारे ही पुरखों
ने मार डाला था। 48 इसलिए तुम ही गवाह
हो, और अपने पुरखों के कामों में सहमत
हो, क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला था
और तुमने उनकी कब्रें बनायीं। 49 इसलिए
परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, ‘मैं उनके
पास नबियों और प्रेरितों को भेजूँगी। उन में
से कुछ को वे मार डालेंगे और कुछ को
सताएँगे।’ 50 जिस से कि सृष्टि की शुरूआत
से जितने नबियों का खून बहाया गया है,
उसका हिसाब इस पीढ़ी के लोगों से लिया
जाएगा। 51 अर्थात् हाबिल के खून से लेकर
ज़करयाह के खून तक का हिसाब, जिस की
हत्या परमेश्वर के भवन और वेदी के बीच
में की गई थी। हाँ, मेरा कहना है कि इस
पीढ़ी के लोगों से हिसाब माँगा जाएगा।
52 हे शास्त्रियो[b], तुम पर हाय! क्योंकि
तुमने ज्ञान की चाभी छीन ली है। तुम तो खुद
दाखिल नहीं हुए और जो दाखिल हो रहे थे,
उन्हें भी रोका।”
53 जब वह वहाँ से चले गए, तो शास्त्री और
फ़रीसी सख्त खिलाफ़त करते हुए बहुत से
विषयों पर यीशु से बारीकी से सवाल करने
लगे, 54 और यीशु के विरोध में योजना बनाने
लगे ताकि उनके मुँह की किसी बात से उन्हें
फसाएँ।

12 चूंकि ऐसी हालत में जब हज़ारों की
भीड़ इकट्ठी हो रही थी, यहाँ तक
कि वे एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, यीशु
अपने शिष्यों से कहने लगे, “फ़रीसियों के
कपट रूपी खमीर से सावधान रहना। 2 ऐसा
कुछ भी ढँका नहीं, जो खोला न जाएगा,
और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।
3 इसलिए जो कुछ तुमने अन्धेरे में कहा है,

[a] **11.41** लोभ और दुष्टता [b] **11.52** मूसा के नियम शास्त्र के ज्ञाता

वह उजियाले में सुना जाएगा, और जो तुमने
अन्दर के कमरे में फ़ुसफ़ुसाया, वह छत पर
से कहा जाएगा।
4 मेरे दोस्तो, मैं तुम्हें यह बताना चाहता
हूँ कि उन से मत डरना जो देह को बर्बाद
करते हैं, लेकिन उससे ज़्यादा कुछ नहीं कर
सकते। 5 लेकिन मैं तुम से कहना चाहता हूँ
कि तुम्हें उससे डरना चाहिए, जो नष्ट करने
के बाद नरक में भी डाल सकते हैं।
6 क्या गौरैया मामूली चिड़िया नहीं है? फिर
भी परमेश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलते।
7 तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं,
इसलिए डरो मत, तुम बहुत गौरैयों से बढ़
कर हो।
8 मैं तुम से कहता हूँ जो कोई लोगों के
सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी परमेश्वर
के स्वर्गदूतों के सामने मान लूँगा। 9 जो लोगों
के सामने मेरा इन्कार करे उसका परमेश्वर
के स्वर्गदूतों के सामने इन्कार किया जाएगा।
10 लेकिन जो मेरे खिलाफ़ कोई बात कहे,
उसका वह अपराध माफ़ किया जाएगा।
लेकिन जो पवित्र आत्मा की बेईज़्ज़ती[a] करे,
उसका अपराध माफ़ न किया जाएगा।
11 जब लोग तुम्हें सभाओं, गर्वनरों और
अधिकारियों के सामने ले जाएँ, तो फ़िक्र
न करना कि हम जवाब कैसे देंगे या क्या
कहेंगे। 12 क्योंकि पवित्र आत्मा खुद उसी
क्षण तुम्हें सिखा देगा कि क्या बोलना
चाहिए।"
13 फिर भीड़ में से किसी ने यीशु से कहा,
"हे गुरु जी, मेरे भाई से कहिए कि पिता की
जायदाद मेरे साथ बाँट ले।"
14 यीशु ने उससे कहा, "हे मनुष्य, मुझे
किस ने तुम्हारा इन्साफ़ करने वाला या
बँटवारा करने वाला ठहराया है?"
15 यीशु ने उन से कहा, "सावधान रहो,
और हर तरह के लालच से अपने आपको
बचाए रखो, क्योंकि ज़्यादा दौलत होने पर
भी किसी की ज़िन्दगी पूरी तरह से उसकी
दौलत पर टिकी हुई नहीं रहती है।"
16 तब यीशु ने उन से एक दृष्टान्त कहा,
"किसी रईस की ज़मीन में बड़ी फ़सल हुई।
17 तब वह सोचने लगा, कि मैं क्या करूँ,
क्योंकि मेरे यहाँ जगह नहीं, जहाँ अपनी
उपज रखूँ।" 18 उसने कहा, 'हाँ, मैं एक
काम कर सकता हूँ। वह यह कि मैं अपनी
बखारियाँ तोड़ कर बड़ी बखारियाँ बनाऊँगा
और वहीं अपना सारा अनाज और सारी
दौलत रखूँगा।' 19 फिर मैं अपने आप से
कहूँगा, "ऐ मेरी जान, तेरे पास बहुत सालों
के लिए बहुत दौलत रखी है, चैन से खा
पी और सुखी रह।" 20 लेकिन परमेश्वर ने
उससे कहा, 'हे बेवकूफ़! इसी रात तुम मर
जाओगे, तब जो कुछ तुमने इकट्ठा किया है,
वह किस का होगा?'
21 ऐसा ही वह व्यक्ति भी है जो अपने
लिए दौलत बटोरता है, लेकिन परमेश्वर की
निगाह में दौलतमंद नहीं है।"
22 फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,
"इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, अपनी जान की
फ़िक्र करके मत कहना कि हम क्या खाएँगे,
न अपनी देह की कि क्या पहिनेंगे। 23 क्योंकि
खाने से ज़्यादा बड़ी जान[b], और कपड़ों से
बढ़ कर देह है। 24 कौवों को देखो, वे न बोते
हैं, न काटते, न उनके भण्डार और खत्ते होते
हैं, फिर भी परमेश्वर उन्हें पालते हैं। तुम्हारी
कीमत चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।
25 तुम में से ऐसा कौन है, जो फ़िक्र करने
से अपनी उम्र में एक सेकेण्ड भी बढ़ा सकता
है? 26 इसलिए यदि तुम सब से छोटा काम

[a] **12.10** निन्दा [b] **12.23** जीवन

भी नहीं कर सकते, तो दूसरी बातों के लिए
फ़िक्र क्यों करते हो? 27 सोसनों के पौधों पर
नज़र डालो कि वे बढ़ते कैसे हैं, वे न मेहनत
करते, न कातते हैं, फिर भी मैं तुम से कहता
हूँ कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में, उन
में से किसी एक की तरह कपड़े पहिने हुए
न था। 28 इसलिए अगर परमेश्वर मैं दान
की घास को जो आज है, और कल आग
में झोंकी जाएगी, ऐसा पहनाते हैं, तो हे शक
करने वाले लोगो, वह तुम्हें क्यों न पहनाएँगे?
29 और तुम इस बात की ताक में न रहो कि
क्या खाएँगे और क्या पीएँगे, और न शक
करो। 30 क्योंकि दुनिया के तमाम लोग इन
सब चीज़ों की खोज में हैं और तुम्हारे पिता
जानते हैं कि तुम्हें इन चीज़ों की ज़रूरत है।
31 लेकिन उनके राज्य के लिए लालायित
रहो, तो वे चीज़ें भी तुम्हें मिल जाएँगी।

32 हे छोटे झुण्ड, डरो मत! क्योंकि तुम्हारे
पिता को यह अच्छा लगता है कि तुम्हें राज्य
दें। 33 अपनी दौलत बेच कर दान कर दो
और अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ जो पुराने
नहीं होंगे, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा
करो जो कम नहीं होता और जिस के पास
चोर फटकता नहीं, और कीड़ा खराब नहीं
करता। 34 क्योंकि जहाँ तुम्हारी दौलत है,
वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

35 तुम्हारी कमर कसी रहें, और रोशनी
चमकती रहे। 36 और तुम उन लोगों की तरह
बनो, जो अपने मालिक का इन्तज़ार कर रहे
हों, कि वह ब्याह की दावत से कब लौटेगा
कि जब वह आकर दरवाज़ा खटखटाए, तो
तुरन्त उसके लिए खोल दें। 37 वे नौकर ही
अच्छे हैं, जिन्हें मालिक आकर जागता पाए
मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह कमर बान्ध
कर उन्हें खाना खाने के लिए बैठाएगा, और
पास आकर उनकी सेवा करेगा। 38 यदि वह
रात के दूसरे पहर या तीसरे पहर में आकर
उन्हें जागते पाए, तो वे नौकर अच्छे हैं।
39 लेकिन तुम यह जान रखो कि यदि घर का
मालिक जानता कि चोर किस समय आएगा,
तो जागता रहता, और अपने घर में सेंध लगने
न देता।

40 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस क्षण तुम
सोचते भी नहीं उसी क्षण मैं आ जाऊँगा।”

41 तब पतरस ने कहा, “हे प्रभु, क्या यह
दृष्टान्त हमारे लिए है या सभी के लिए?”

42 यीशु ने कहा, “वह ईमानदार और
बुद्धिमान कौन है, जिस का मालिक उसके
नौकर-चाकरों पर उसे प्रधान ठहराए कि
उन्हें समय पर खाना-पानी दे। 43 अच्छा है
वह प्रबंधक, जिसे उसका मालिक आकर
ऐसा ही करता पाए। 44 मैं तुम से सच
कहता हूँ, वह उसे अपनी सब दौलत पर
अधिकारी ठहराएगा। 45 लेकिन अगर वह
प्रबंधक सोचने लगे कि मेरा मालिक आने में
देर कर रहा है, और नौकर-नौकरानियों को
मारने-पीटने लगे और ऐश करने लगे, 46 तो
उस प्रबंधक का मालिक ऐसे दिन, जब वह
उसका इन्तज़ार न करता हो, और ऐसे समय
जिसे वह न जानता हो आएगा, और उसे भारी
सज़ा देकर उसका हिस्सा अविश्वासियों के
साथ ठहराएगा।

47 वह नौकर जो अपने मालिक की इच्छा
जानता था, और तैयार न रहा और न उसकी
इच्छा के मुताबिक जी रहा था, बहुत मार
खाएगा। 48 लेकिन जो नहीं जान कर मार
खाने के लायक काम करे वह थोड़ी मार
खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है,

उससे बहुत आशा की जाएगी, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा।

49 मैं इस दुनिया में आग[a] उण्डेलने[b] आया
हूँ, और क्या चाहता हूँ, सिर्फ़ यह कि आग
अभी सुलग जाती! 50 मुझे तो मौत[c] में डुबोया
जाना है, और जब तक ऐसा न हो, तब तक
मेरे अन्दर उलझन बनी रहेगी।
51 क्या तुम यह सोच रहे हो कि मेरे इस
दुनिया में मेरी मौजूदगी से सब कुछ ठीक
ठाक हो जाएगा? नहीं, लेकिन मेरी वजह
से लोगों में आपस में फूट पड़ जाएगी।
52 क्योंकि अब से एक घर के पाँच लोगों
में दलबन्दी हो जाएगी। दो जन, तीन के
खिलाफ़ हो जाएँगे और तीन जन, दो के
खिलाफ़। 53 बाप बेटे की, बेटा बाप की
खिलाफ़त करेगा। माँ बेटी की, और बेटी
माँ की, सास बहू की, और बहू सास की
खिलाफ़त करेगी।"
54 यीशु ने भीड़ से कहा, "जब तुम पश्चिम
की तरफ़ बादल उठते देखते हो, तो तुरन्त
कहते हो कि बारिश होगी और ऐसा होता
भी है। 55 जब तुम दक्षिणी हवा चलते देखते
हो, तो कहते हो, 'बड़ी गर्मी पड़ने वाली है,'
और ऐसा होता है। 56 हे ढोंगियो, तुम पृथ्वी
और आकाश को देख कर अपनी राय देते
हो, लेकिन इन समयों को देख कर अपना
मत क्यों नहीं दे पाते हो? 57 और तुम खुद ही
फ़ैसला क्यों नहीं करते कि सही क्या है?
58 जब तुम अपने मुद्दई के साथ जज के
सामने खड़े होने पर हो, तो पहले ही समझौता
करने की कोशिश करो, ऐसा न हो कि तुम्हें
जज के द्वारा सज़ा सुनाई जाए और जज तुम्हें
सिपाही के हाथ सौंप दे और सिपाही तुम्हें
जेल में डाल दे। 59 मैं तुम से कहता हूँ कि
जब तक तुम पैसा पैसा न चुका दो, वहाँ से
छूट न सकोगे। इतने में जब हज़ारों की भीड़
लग गई, यहाँ तक कि वे एक दूसरे पर गिरे
पड़ते थे, तो वह सब से पहले अपने चेलों से
कहने लगे, "फ़रीसियों के कपट रूपी खमीर
से चौकस रहना।"

13 उसी वक्त जो लोग मौजूद थे, उन
में से कुछ ने उन गलील वासियों
के बारे में बताया, जिन का खून पिलातुस ने
उनकी लायी गयी कुर्बानी के साथ मिलाया
था।
2 जवाब में, यीशु ने उन से कहा, "क्या
तुम्हारे विचार से ये हताहत् हुए गलीली, दूसरे
गलील निवासियों से ज़्यादा बुरे थे, इसलिए
ऐसा हुआ? 3 नहीं, मैं तो यह कहूँगा कि
अगर तुम भी मन बदलने के अच्छे मौके का
फ़ायदा नहीं उठाओगे, तो बर्बाद हो जाओगे।
4 और क्या तुम यह सोच रहे हो कि जिन
अट्ठारह लोगों की जान शिलोह के गुम्बद
गिरने से हुयी, वे यरूशलेम में रहने वाले
दूसरे लोगों से ज़्यादा दुष्ट थे? 5 मैं कहता
हूँ बिल्कुल नहीं, लेकिन अगर तुम भी मन
बदलने के अवसर का लाभ नहीं उठाओगे,
तो अचानक मौत के शिकार हो जाओगे।"
6 फिर यीशु ने उन्हें एक दृष्टान्त बताया, एक
आदमी अपने बगीचे में लगाए गए अंजीर के
पेड़ से अंजीर तोड़ने आया, लेकिन उसमें एक
भी फल नहीं था। 7 इसलिए उसने माली से
कहा, "देखो भई, मैं आज तीन साल बाद
अंजीर के लिए आया हूँ लेकिन इस में एक भी
अंजीर नहीं लगी है। इस पेड़ को काट फेंको।
यह बेकार ही में इतनी ज़मीन क्यों घेरे रहे?"
8 लेकिन माली गिड़गिड़ाकर बोला, "श्रीमान
जी, इसे एक साल की मोहलत और दे दीजिए

[a] **12.49** शायद पवित्र आत्मा [b] **12.49** शुरू करने [c] **12.50** दुख

मैं इसके चारों तरफ़ खोद कर खाद डालूँगा।
9 यदि अगले साल तक इस में अंजीर लगते
हैं, तो ठीक है, नहीं तो आप इसे कटवा
डालना।"
10 एक सब्त के दिन यीशु एक
आराधनालय में सिखा रहे थे। 11 वहाँ
अट्ठराह साल से कमज़ोरी की आत्मा से
पीड़ित एक झुकी हुयी महिला थी जो सीधी
खड़ी न हो सकती थी।
12 उसे देखते ही यीशु ने पास बुलाकर
कहा, "हे महिला, तुम अपनी कमज़ोरी से
आज़ाद हो चुकी हो।"
13 जैसे ही यीशु ने अपने हाथ उस पर
रखे, वह सीधी खड़ी होकर परमेश्वर को
धन्यवाद देने लगी। 14 सब्त के दिन यीशु
द्वारा उस महिला के ठीक किए जाने से
नाराज़ उस आराधनालय के प्रबन्धक ने वहाँ
खड़े लोगों से कहा, "सब्त के दिन प्रार्थना
करवाने मत आओ।" बाकी छ: दिनों में आते
जाओ।"
15 लेकिन यीशु बोले, "कपटी लोगो! तुम
में से हर एक सब्त के दिन काम करता है,
क्या तुम इस दिन में अपने बैल या गदहे को
खोल कर पानी पिलाने नहीं ले जाते हो?
16 यह प्यारी महिला जो अब्राहम के वंश की[a]
है, शैतान की अट्ठारह साल की गुलामी से
आज़ाद की गयी है। क्या यह अच्छी बात
नहीं है कि वह सब्त के दिन ठीक हो सकी
है?"
17 यह सुन कर यीशु की खिलाफ़त करने
वाले शर्मिन्दा हुए, लेकिन दूसरे लोग इन
बढ़िया बातों की वजह से बहुत खुश हुए।
18 तब यीशु ने पूछा, "परमेश्वर का राज्य
किस तरह का है? मैं कौन सा उदाहरण देकर
समझाऊँ? 19 यह सरसों के छोटे बीज की
तरह है, जिसे एक माली ने अपने बगीचे में
बोया और वह बढ़ कर बड़ा पेड़ हो गया,
फिर चिड़ियों ने आकर इसकी डालियों पर
घोंसला बनाया।"
20 फिर यीशु ने कहा, "मैं परमेश्वर के राज्य
की तुलना किस से करूँ? 21 वह तो खमीर
की तरह है, जिस को किसी महिला ने लेकर
तीन पसेरी आटे में मिलाया और सारा का
सारा आटा खमीरी हो गया।"
22 यीशु नगर - नगर और गाँव-गाँव उपदेश
देते हुए यरूशलेम की तरफ़ चले जा रहे थे।
23 किसी ने उन से पूछा, "क्या मुक्ति पाने
वालों की संख्या कम है?" यीशु ने जवाब में
कहा,
24 "संकरे रास्ते से दाखिल होने की
कोशिश करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ,
कि बहुत से दाखिल होना चाहेंगे और न
हो पाएँगे। 25 जब घर का मालिक उठ कर
दरवाज़ा बन्द कर चुका हो, और तुम खड़े
हुए दरवाज़ा खटखटाकर कहने लगे, 'हे प्रभु,
हमारे लिए खोल दें,' और वह जवाब दें, 'मैं
तुम्हें जानता ही नहीं कि तुम कहाँ के हो।'
26 तब तुम कहने लगोगे,' हम ने आपके साथ
खाया पिया और आपने हमारी सड़कों पर
हमें सिखाया था।' 27 तब यीशु उत्तर देंगे, 'मैं
तुम्हें बताता हूँ, मुझे मालूम ही नहीं कि तुम
कहाँ से आए हो। तुम सब बुरा करने वालो,
मेरे सामने से दूर हटो।'
28 वहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा
क्योंकि तुम अब्राहम, इसहाक, याकूब और
दूसरे सभी नबियों को परमेश्वर के राज्य में
देखोगे, लेकिन तुम बाहर फेंक दिए जाओगे।
29 लोग पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से
आकर परमेश्वर के राज्य में अपनी जगह
पाएँगे। 30 अभी जो लोग आखिरी हैं, वे आगे

[a] **13.16** यहूदी

हो जाएँगे और जो अभी पहले हैं, पीछे हो जाएँगे।”

31 उसी वक्त कुछ फ़रीसियों ने आकर
यीशु से कहा, “यहाँ से निकल कर चले
जाईये, क्योंकि हेरोदेस आपको मार डालना
चाहता है।”
32 यीशु ने उन लोगों से कहा, “उस लोमड़ी
से जाकर यह कह दो कि आज और कल मैं
भूतों को निकालूँगा, बीमार लोगों को ठीक
करूँगा और तीसरे दिन अपने काम को पूरा
करूँगा। 33 फिर भी मुझे आज, कल और
परसों चलते जाना है। क्योंकि यह संभव नहीं
कि कोई नबी यरूशलेम के बाहर मारा जाए।
34 हे यरूशलेम! हे यरूशलेम! तुम जो
तुम्हारे पास भेजे गए नबियों पर पथराव
करती हो, मैंने कितनी ही बार यह चाहा है
कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पँखों
के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं तुम्हारे
बच्चों को इकट्ठा करूँ, लेकिन तुमने यह
नहीं चाहा। 35 देखो! तुम्हारा घर तुम्हारे लिए
उजाड़ छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता
हूँ जब तक तुम नहीं कहोगे, धन्य है वह जो
प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे
फिर से न देखोगे।”

14 एक सब्त[a] जब यीशु फ़रीसी के घर
खाना खाने गए हुए थे, सभी की
आँखें उन पर लगी हुयी थीं। 2 यीशु के सामने
ही एक जलन्धर से पीड़ित व्यक्ति था।
3 यीशु ने शास्त्रियों[b] और फ़रीसियों से पूछा,
“क्या विश्राम दिन में किसी को स्वस्थ[c]
करना जायज़ है?” 4 लेकिन वे सभी खामोश
रहे और यीशु ने उसे ठीक करके भेज दिया।
5 यीशु ने उन से पूछा, “तुम में से ऐसा कौन
है, जिस का बेटा, गधा या बैल विश्राम दिन
में कुएँ में गिर जाए और वह उसे न निकाले?
6 वे इसका उत्तर न दे सके।
7 नेवते में बुलाए हुए लोगों को अपने लिए
अच्छी जगह ढूँढते हुए देख कर यीशु ने कहा,
8 “जब तुम्हें किसी विवाह की दावत में
बुलाया जाए, तब तुम सामने की कुर्सी पर
मत बैठना। यदि तुम से ज़्यादा सम्मानीय
व्यक्ति को भी वहाँ बुलाया गया है, तब
तुम क्या करोगे? 9 घर का मालिक आकर
कहेगा, ‘इस व्यक्ति के लिए जगह खाली
करो’। तब तुम्हें अपमानित हो कर छोटी
जगह पर बैठना होगा। 10 इसके विपरीत जब
तुम्हें नेवता मिले, तो मामूली जगह पर बैठ
जाओ ताकि तुम्हारा न्योता देने वाला तुम्हारे
पास आते ही तुम्हें एक सम्मानीय जगह पर
बैठने के लिए कहे। इस से सभी मेहमानों के
सामने तुम्हें इज़्ज़त मिलेगी। 11 इसलिए कि
जो कोई अपने आप को बड़ा करेगा, दीन
किया जाएगा और जो अपने आपको नम्र
करेगा अधिक सम्मान पाएगा।
12 तब यीशु ने उससे, जिस के यहाँ बुलाए
गए थे कहा, “जब तुम किसी को अपने यहाँ
खाने या दावत पर बुलाओ, तो अपने दोस्तों,
भाईयों, या रिश्तेदारों या अमीर पड़ोसियों
को मत बुलाना, कहीं ऐसा न हो कि वे
भी तुम्हें नेवता दें, और बराबरी हो जाए।
13 लेकिन जब तुम दावत करो, तो गरीब,
अपंग, लँगड़े-लूले को नेवता देना। 14 वापस
उनके तुम्हें नेवता न दे सकने के कारण, तुम
आशीषित ठहरोगे और धर्मी ठहराए लोगों
के जी उठने के समय में तुम्हें बदला मिलेगा।
15 इन बातों को सुनते ही वहाँ बैठे एक
मेहमान ने कहा, “परमेश्वर के राज्य में
दाखिल होना क्या ही बड़ी बात है। आशीषित
है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाए!”

[a] **14.1** विश्राम दिन [b] **14.3** यहूदी धर्म के जानकार [c] **14.3** निरोगी

16 तभी यीशु ने इस तरह उत्तर दिया, “एक
आदमी ने एक बड़ी दावत की और बहुत से
लोगों को नेवता दिया। 17 जब सारी तैयारी हो
चुकी, तो उसने अपने नौकरों को मेहमानों के
यहाँ बुलवाने के लिए भेज दिया।
18 लेकिन वे सभी बहाना बनाने लगे। एक
ने कहा कि उसे माफ़ किया जाए क्योंकि
उसने एक खेत मोल लिया है। और उसकी
जाँच पड़ताल के लिए जा रहा है। 19 दूसरे
ने कहा कि उसने पाँच जोड़ी बैल लिए
हैं और उनको परखने के लिए जाना है।
20 तीसरा व्यक्ति इसलिए नहीं आ सका
क्योंकि उसकी नयी-नयी शादी हुयी थी।
21 नौकर ने वापस लौट कर सब कुछ बता
दिया जो लोगों ने उससे कहा था। 22 इसके
बावजूद, वहाँ फिर भी जगह थी।
23 इसलिए मालिक ने गुस्से में कहा, आस
पास की बस्तियों और सड़कों पर जाओ,
भिखारियों, लँगड़ों - लूलों और अन्धों को
बुला लाओ। 24 जो कुछ शुरू में बुलाए गए
लोगों के लिए तैयार किया गया था, उसमें से
वे कुछ भी चखने न पाएँगे।”
25 एक बड़ी भीड़ वहाँ आ चुकी थी और
यीशु ने मुड़ कर उन से कहा, 26 “जो कोई
मेरा शिष्य बनना चाहता है, उसे चाहिए कि
वह अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों या भाईयों
यहाँ तक कि अपने जीवन से ज़्यादा मुझ से
लगाव रखे - नहीं तो वह मेरा शिष्य नहीं
हो सकता। 27 जो कोई अपना क्रूस उठा
कर मेरी सुन कर जीना नहीं चाहता, वह मेरे
लायक नहीं हैं।
28 इसलिए जब तक कीमत न आँख लो,
शुरूआत मत करो। वह कौन है जो बिना
यह देखे कि उसके पास सारे बिल चुकता
करने के लिए काफ़ी पैसा है या नहीं, किसी
इमारत को बाँधने का काम शुरू करेगा।
29 नहीं तो नींव रखते-रखते उसका पैसा
खत्म हो जाएगा और सभी उसकी हँसी
उड़ाएँगे। 30 ठट्ठा करते हुए लोग कहेंगे, ‘देखो
इस आदमी को। उसने घर बनवाना तो शुरू
किया लेकिन पूरा बनने से पहले ही उसका
पैसा खत्म हो गया।’ 31 या वह कौन सा ऐसा
राजा होगा जो बिना अपने सलाहकारों से
सलाह मशविरा किए अपनी 10,000 सैनिकों
की सेना से, 20,000 सैनिकों वाली सेना
का मुकाबला करने की स्वप्न में भी हिम्मत
करेगा? 32 अगर वह मुकाबला न कर सकने
की हालत में होगा तो जब दुश्मन की सेना
बहुत दूर ही होगी, वह दोस्ती का प्रस्ताव
रखेगा।
33 इसी तरह तुम लोगों में से हर एक जन,
जो कुछ तुम्हारा अपना है[a], जब तक उससे
अपना लगाव न छोड़ दे, मेरा शिष्य बन
नहीं सकता। 34 नमक अच्छा है, लेकिन
अगर उसका नमकपन चला जाए, तो उसे
फिर से खाने लायक कैसे बनाया जा सकता
है? 35 बेस्वाद नमक न तो ज़मीन में डालने
लायक रहेगा न खाद के रूप में इस्तेमाल
किया जा सकेगा। उसे फेंक दिया जाएगा।
हर व्यक्ति जो सुन रहा है, ध्यान से सुने
और समझ ले।”

15 टॅक्स कलेक्टर और दूसरे बड़े
अपराधी अक्सर यीशु मसीह की
सुनने आया करते थे। 2 इस वजह से
फ़रीसी और धार्मिक कानून के जानकारों ने
शिकायत की कि यीशु गुनाहगारों के साथ
उठते बैठते और खाते-पीते हैं।
3 इसलिए यीशु ने उन्हें एक उदाहरण दिया।
4 यदि एक आदमी के पास सौ भेड़ें हैं और उन

[a] **14.33** जैसे धन-दौलत

में से एक खो जाती है, तो वह क्या करेगा?
क्या वह निन्यानवे को जंगल में छोड़कर उस
एक को तब तक खोजता नहीं रहेगा, जब
तक वह मिल न जाए? 5 जब वह उसे पा लेता
है तो कन्धे पर उठाए खुशी से घर लौटता
है। 6 घर पहुँचने पर वह अपने दोस्तों और
रिश्तेदारों को एक साथ बुलाकर कहता है,
“मेरे साथ खुशी मनाओ क्योंकि मैंने अपनी
खोई हुयी भेड़ वापस पा ली है।”
7 इसी तरह से जब एक अपराधी[a]
मनबदलाव के साथ परमेश्वर के पास
लौटता है, तब स्वर्ग में एक ऐसा बड़ा
जश्न मनाया जाता है, जैसा कि उन बाकी
निन्यानवे के लिए नहीं मनाया जाता, जिन्हें
मनबदलाव की ज़रूरत नहीं है।
8 वह कौन सी महिला होगी, जिस के पास
दस चाँदी के सिक्के हों और उन में से एक
खो जाने पर वह दिया जलाकर, घर में झाड़ू
लगा कर तब तक अच्छी तरह से न ढूँढे,
जब तक वह सिक्का पा न ले। 9 खोया हुआ
सिक्का पा लेने के बाद अपनी सहेलियों और
पड़ोसियों को बुलाकर कहती है कि मेरे साथ
खुशी मनाओ क्योंकि मैंने खोया हुआ सिक्का
पा लिया है।
10 इसी तरह मैं तुम्हें बताता हूँ, परमेश्वर के
स्वर्गदूतों के सामने उस समय जश्न मनाया
जाता है, जब एक दुष्ट व्यक्ति मन बदलता
है।
11 यीशु ने कहा, “एक आदमी के दो बेटे
थे। 12 छोटे बेटे ने आकर पिता से कहा,
“पिता जी जो मेरा हिस्सा है वह मुझे दे
दीजिए।” पिता ने वैसा ही किया।
13 कुछ दिनों के बाद यह लड़का अपना
सब कुछ लेकर एक दूर देश के लिए रवाना
हो गया। वहाँ जाकर उसने अपना सारा धन
बर्बाद कर डाला। 14 सब कुछ यों बर्बाद
कर डालने के बाद ही वहाँ बड़ा आकाल
पड़ा और तब उसे काफ़ी आर्थिक तंगी हुयी।
15 इसलिए वहाँ के एक निवासी के यहाँ
जाकर वह नौकरी करने लगा, जिस ने उसे
अपने सूअरों को चराने के लिए अपने खेत में
भेज दिया। 16 वह इतना भूखा रहने लगा कि
सूअरों के भोजन को भी खाने के लिए तैयार
था, क्योंकि कोई भी उसे कुछ देने के लिए
तैयार नहीं था।
17 अपने आपे में आने पर उसने खुद से
कहा, “मेरे पिता के घर में तमाम नौकरों के
खाने पर भी भोजन बचा रहता है, लेकिन मैं
यहाँ भूखा मर रहा हूँ। 18 मैं अपने पिताजी
के यहाँ जाऊँगा और कहूँगा, ‘पिताजी, मैंने
आपके और परमेश्वर पिता के खिलाफ़ बुरा
किया है। 19 मैं इस लायक नहीं कि आपका
बेटा कहलाऊँ, मुझे अपने यहाँ एक नौकर
की तरह रख लें।’”
20 और वह उठ कर अपने पिता के घर चल
पड़ा। और वह दूर ही था, कि उसके पिता
का दिल भर आया, और दौड़कर उसने उसे
गले लगाया, और बहुत चूमा।
21 पुत्र ने उससे कहा, “पिता जी, मैंने
स्वर्गिक पिता के विरोध में और आपकी दृष्टि
में अपराध किया है और अब मैं इस लायक
नहीं हूँ कि आपका बेटा कहलाऊँ।”
22 परन्तु पिता ने अपने नौकरों से कहा,
“तुरन्त अच्छे से अच्छे कपड़े लाकर इसे
पहनाओ, उसके हाथ में अँगूठी, और पाँवों में
जूतियाँ पहनाओ। 23 ‘और अपनी भेड़शाला
से बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएँगे और
जश्न मनाएँगे। 24 ‘क्योंकि मेरा यह बेटा मर
चुका था, फिर जी गया है, खो गया था, अब
मिल गया है।” और वे जश्न मनाने लगे।

[a] **15.7** गुनाहगार

25 परन्तु उसका बड़ा बेटा खेत में था, और
जब वह घर के निकट पहुँचा, तो उसने
गाने बजाने और नाचने की आवाज़ सुनी।
26 "तब उसने एक नौकर को बुलाकर पूछा,
"यह क्या हो रहा है?" 27 उसने उससे कहा,
"तुम्हारा भाई आया है और तुम्हारे पिताजी ने
बछड़ा कटवाया है, क्योंकि उसे भला चंगा
पाया है।"
28 यह सुन कर वह क्रोध से पागल हो
गया, और उसने भीतर आने से मना कर दिया
परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने
लगा। 29 उसने पिता को उत्तर दिया, "मैं इतने
वर्षों से आपकी सेवा कर रहा हूँ, और कभी
आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, लेकिन
आपने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी
न दिया कि मैं अपने दोस्तों के साथ जश्न
मनाता। 30 परन्तु आपका यह आवारा बेटा
जिस ने आपकी सारी जायदाद वेश्याओं पर
उड़ा दी है, आया, तो उसके लिए आपने पला
हुआ बछड़ा कटवाया।"
31 पिता ने उससे कहा, "बेटे, तुम तो हमेशा
मेरे साथ हो और जो कुछ मेरा है वह सब
तुम्हारा ही तो है। 32 परन्तु अब खुशी मनानी
चाहिए, क्योंकि तुम्हारा यह भाई मर गया था,
फिर जी गया है, खो गया था, अब मिल गया
है।"

16 यीशु ने अपने शिष्यों को यह कहानी
सुनायीः एक बार की बात है। एक
अमीर आदमी ने एक मॅनेजर रखा हुआ
था। एक बार यह सुनने में आया कि वह
अपने मालिक की दौलत बर्बाद कर रहा है।
2 इसलिये उसने मॅनेजर को बुलाकर पूछा,
"मैं यह सब क्या सुन रहा हूँ? अपना बही
खाता ठीक करो, और अपना हिसाब दो।"
3 तब मॅनेजर सोचने लगा, "मैं करूँ तो क्या
करूँ? मेरा मालिक मुझ से मेरा काम छीन
रहा है। वह मुझे नौकरी से हटा रहा है। गड्ढा
खोदने का काम तो मुझ से होगा नहीं, और
भीख मैं माँग नहीं सकता। 4 ठीक है, मैं एक
काम करूँगा, ताकि जब मुझे काम से हटाया
जाए तो लोग मुझे अपने घर में स्वीकार
करें।" 5 इसलिए उसने अपने मालिक के हर
एक कर्ज़दार को बुलाया और पहले से पूछा,
"तुम पर कितना कर्ज़ है?"
6 उसने जवाब दिया, "आठ सौ गैलन
तेल।" मॅनेजर ने कहा, "आधा यानि कि 400
लिख लो।" 7 दूसरे से उसने पूछा, "तुम्हारा
कितना है?" उसने उत्तर में कहा, "1,000
बोरा गेहूँ।" मॅनेजर ने कहा, "800 बोरा लिख
लो।"
8 उस अमीर व्यवसायी ने अपने मॅनेजर की
चालाकी की बड़ी तारीफ़ की। और यह सच
बात भी है कि रोशनी की सन्तान से ज़्यादा
शैतान की सन्तान दुनियावी बातों में बहुत
होशियार हैं।
9 यह सीखो, अपने संसारिक साधनों का
इस्तेमाल दूसरों के फ़ायदे के लिए और
दोस्त बनाने के लिए करो। ताकि जब-जब
तुम्हारी दुनियावी दौलत खत्म हो जाए, वे
लोग स्वर्ग में तुम्हारा स्वागत करें। 10 अगर
तुम छोटी बातों में ईमानदार हो, तो बड़ी बातों
में भी रहोगे। लेकिन अगर तुम छोटी बातों में
बेईमान हो तो, तुम्हें बड़ी ज़िम्मेदारियाँ कौन
देगा? 11 अगर तुम धन दौलत के मामले में
भरोसेमंद नहीं हो, जो प्रायः गलत तरीके से
कमाया जाता है, तो सच्ची दौलत के लिए
तुम पर कौन भरोसा करेगा? 12 और यदि तुम
दूसरों की चीज़ों में भरोसेमंद नहीं हो, तो जो
तुम्हारा हो सकता है, कोई तुम्हें क्यों देगा?

13 कोई नौकर दो मालिकों की सेवा नहीं
कर सकता, क्योंकि या तो वह एक को कम
चाहेगा, दूसरे को ज़्यादा, या एक से मिला
रहेगा और दूसरे को तुच्छ समझेगा। तुम
परमेश्वर और दौलत, दोनों ही की सेवा नहीं
कर सकते।"
14 फ़रीसियों ने जब यह बातें सुनीं, जिन का
धन दौलत से बहुत ज़्यादा लगाव था, तो
यीशु की हँसी उड़ाने लगे।
15 तब यीशु ने उन से कहा, "तुम लोगों
के सामने बहुत धार्मिक बनने की कोशिश
करते हो, लेकिन परमेश्वर तुम्हारे मन को
जानते हैं। जिसे यह दुनिया इज़्ज़त देती है,
वह परमेश्वर की निगाह में घिनौना है।
16 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय
तक मूसा का नियमशास्त्र और भविष्यद्वक्ता
तुम्हारे मार्गदर्शक थे। लेकिन परमेश्वर के
राज्य की अच्छी खबर दी जा रही है और हर
व्यक्ति उस में दाखिल होना चाह रहा है।
17 आकाश और पृथ्वी तो लापता हो सकते
हैं लेकिन परमेश्वर की कही बातें तो पूरी
होकर ही रहेंगी।
18 उदाहरण के लिए, एक आदमी जो
तलाक देकर किसी दूसरी से विवाह
कर लेता है,[a] करता है और जो आदमी
तलाकशुदा महिला से विवाह करता है, वह
भी।"
19 यीशु ने कहा, "एक अमीर आदमी था
जो बढ़िया और मँहगे कपड़े पहिनता और
ऐश किया करता था। 20 और लाज़र नाम का
एक भिखारी भी था जिस की देह पर फोड़े ही
फोड़े थे और वह अमीर आदमी के दरवाज़े
पर पड़ा रहता था। 21 उस अमीर आदमी की
मेज़ से गिरी जूठन खा कर लाज़र अपना पेट
भर लिया करता था।
22 वह समय आया, जब वह गरीब इस
दुनिया से चल बसा और फ़रिश्तों[b] ने उसे
अब्राहम की गोद[c] में पहुँचा दिया। अमीर
आदमी भी मर गया। और दफ़ना दिया गया।
23 वह नरक की पीड़ा से तड़प उठा और
उसने आँख उठायी तो लाज़र को स्वर्ग में
बैठा देखा। 24 चिल्लाते हुए उसने अब्राहम से
कहा, "पिता अब्राहम, मुझ पर कृपा करें और
लाज़र को भेजें कि वह पानी से भीगी अपनी
उँगली मेरी जीभ पर रख कर उसे ठंडा करे,
क्योंकि मैं आग की सी लपटों में झुलस रहा
हूँ।"
25 लेकिन अब्राहम ने कहा, "बेटा, तुम्हारे
जीवन काल में तुमने अच्छी चीज़ों का मज़ा
उड़ाया और लाज़र तंगी और अभाव में जीता
रहा लेकिन अब वह मज़े में है और तुम
तकलीफ़ में। 26 इसके अलावा तुम्हारे और
हमारे बीच में एक बड़ी दूरी है, इस वजह से,
उधर से इधर कोई आ जा नहीं सकता।"
27,28 तब उसने कहा, "मैं आप से याचना
करता हूँ कि आप लाज़र को मेरे घर भेज कर
पाँच भाईयों को चिताएँ, ताकि वे इस पीड़ा
की जगह आने का फ़ैसला न करें।"
29 अब्राहम ने उससे कहा, "उनके पास
मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की तालीम है।
वे उनको सुनें।"
30 तब वह बोला, "नहीं, पिता अब्राहम,
अगर मरे हुओं में से कोई उनके पास जाएगा
तो वे उसकी सुनेंगे।"
31 तब अब्राहम ने अमीर व्यक्ति से कहा,
"जब वे मूसा और नबियों की बातें नहीं

[a] **16.18** व्यभिचार [b] **16.22** स्वर्गदूतों [c] **16.22** स्वर्ग

सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी उठ कर
उन्हें बताएगा, तो वे उसकी क्यों सुनेंगे?”

17 तब यीशु ने शिष्यों से कहा, “यह
हो नहीं सकता कि लोगों को ठोकर
न लगे, लेकिन अफ़सोस उस पर जिस के
ज़रिए वे ठोकरें लगती हैं। 2 यह उसके लिए
भला होगा कि उसके गले में चक्की का पाट
बाँधकर समुन्दर की गहराई में डुबा दिया
जाए ताकि वह इन छोटों में से किसी एक को
नुकसान न पहुँचा सके। 3 सावधान रहना।
अगर तुम्हारा भाई तुम्हारे खिलाफ़ कुछ करे,
तो उसे डाँटो। यदि वह मन बदलता है, तो
उसे माफ़ करना। 4 अगर वह तुम्हारे खिलाफ़
एक ही दिन में सात बार गलत करता है
और सातों बार आकर कहता है, “मुझे माफ़
करो”, तो उसे माफ़ करना।”
5 तब प्रेरितों ने आकर यीशु से कहा, “हमारे
भरोसे को बढ़ाइए।”
6 यीशु ने कहा, “अगर तुम्हारे पास सरसों
के बीज के बराबर भरोसा है तो तुम इस
शहतूत के पेड़ से कहोगे, ‘उखड़ कर समुन्दर
में जा गिर’, तो ऐसा हो जाएगा।
7 यदि तुम में से किसी के पास एक नौकर
है जो हल जोतने या भेड़ें चराने के बाद जैसे
ही आए उस से कहेगा, ‘जाओ खाना खाने के
लिए बैठो।’ 8 नहीं, तुम तो नौकर से कहोगे,
‘तैयारी करो और मेरे लिए खाना परोसो,
उसके बाद ही तुम खाना खाना।’ 9 क्या तुम
उस नौकर को उसकी आज्ञाकारिता के लिए
धन्यवाद दोगे? मैं नहीं समझता।
10 इसलिए तुम भी, कहे हुए काम करने के
बाद कहो, ‘हम बहुत निकम्मे ठहरे हैं, हम ने
वही सब किया जो हमें करना था।’”
11 यरूशलेम जाते समय यीशु को सामरिया
और गलील से होकर जाना पड़ा। 12 जैसे ही
यीशु एक गाँव में दाखिल होने वाले थे, उन्हें
दस कोढ़ी मिले। वे काफ़ी फ़ासले पर थे।
13 उन्होंने चिल्ला कर कहा, “मालिक यीशु,
हम पर रहम करें।”
14 उन्हें देखते ही यीशु ने उन लोगों से कहा,
“जाकर अपने आप को पुरोहित के सामने
पेश करो”। जब वे रास्ते में जा ही रहे थे, तभी
सब के सब अच्छे हो गए। 15 ठीक हो जाने
पर उन में से एक ने मुड़ कर ऊँची आवाज़
से परमेश्वर की बड़ाई की। 16 अपने मुँह के
बल गिर कर उसने परमेश्वर को शुक्रिया
अदा किया। वह सामरिया का वासी था।
17 यीशु ने यह सब देख कर सामरी से
पूछा, “क्या सभी दस ठीक नहीं हुए? बाकी
नौ कहाँ हैं?” 18 इसके अलावा बाकी लोग
धन्यवाद देने नहीं लौटे। 19 यीशु ने कहा,
“उठो, और वापस जाओ। तुम्हारे विश्वास
की वजह से तुम ठीक हो चुके हो।”
20 एक बार जब एक धार्मिक अगुवे[a] ने
यीशु से परमेश्वरीय शासन[b] के आने के बारे
में पूछा, तो यीशु ने कहा, “इन्तज़ार करने से
परमेश्वर का राज्य नहीं आता है, 21 न ही
लोग कहेंगे, वह यहाँ है या वहाँ है। सच्चाई
यह है कि यह शासन[c] तुम्हारे बीच ही में है।”
22 यीशु ने शिष्यों से कहा, “समय आने
वाला है, जब तुम मुझे देखना चाहोगे, लेकिन
देख नहीं पाओगे। 23 लोग तुम से कहेंगे,
देखो, वह यहाँ या वहाँ हैं। तुम उनके
पीछे-पीछे मत चले जाना। 24 जिस तरह से
आकाश में बिजली एक ओर से निकल कर
दूसरी ओर तक जाती है, वैसे ही मनुष्य
के पुत्र का आना होगा। 25 लेकिन इस से

[a] **17.20** फ़रीसी [b] **17.20** परमेश्वर के राज्य [c] **17.21** राज्य

पहले मुझे दुख उठाना है और मुझे ठुकराया
जाएगा।
26 जैसा नूह के समय में हुआ करता था,
वैसा ही मेरे आने से पहले होगा। 27 उस समय
भी लोग खाने-पीने, और शादी करवाने में तब
तक लगे रहे, जब तक नूह जहाज़ में दाखिल
न हुआ और प्रलय ने सब को बर्बाद कर
दिया। 28 जैसा लूत के दिनों में हुआ वैसा
ही होगा। वे सब खाने-पीने, खरीदने, बेचने,
और इमारतें बनाने में लगे थे। 29 लेकिन
जिस दिन लूत सदोम से बाहर आया, आग
और गन्धक ऊपर से गिरी और सभी बर्बाद
हो गए। 30 ऐसा ही उस दिन होगा, जब मैं
दिखायी दूँगा।
31 उस दिन जो घर की छत पर हो और जिस
का सामान घर के अन्दर हो, उसे सामान लेने
नहीं जाना चाहिए, न ही उसे जो बाहर मैं दान
में हो।
32 लूत की पत्नी को याद रखना।
33 जो अपने जीवन को बचाना चाहेगा, वह
उसे खो देगा, और जो खोएगा, वही उसे बचा
पाएगा।
34 मैं तुम्हें बता रहा हूँ, कि उस रात
एक बिस्तर पर दो जन होंगे, एक उठा
लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
35 दो व्यक्ति चक्की चला रहे होंगे, एक
को उठा लिया जाएगा, दूसरा यों ही छोड़
दिया जाएगा। 36 दो इन्सान खेत में होंगे,
एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया
जाएगा।”
37 उन लोगों ने कहा, “प्रभु, ऐसा कहाँ
होगा?” यीशु ने कहा, “जहाँ लाश होती है,
वहीं गिद्ध इकट्ठे होते हैं।”

18 लोगों को यह सिखाने के लिए कि
उन्हें कभी मायूस नहीं होना चाहिए,
लेकिन परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते रहना
चाहिए, 2 यीशु ने यह बताया कि, “एक शहर
में एक जज था जो न इस दुनिया के मालिक
से डरता था और न इन्सान की इज़्ज़त
करता था। 3 एक बार उसी शहर की रहने
वाली एक विधवा उसके पास आकर कहने
लगी, “मेरे दुश्मन के खिलाफ़ मुझे इन्साफ़
दिलाओ।” 4 कुछ समय तक उस जज ने
उसकी बिनती की परवाह नहीं की, लेकिन
बाद में उसने अपने आप से कहा, “हालाँकि
न ही मैं परमेश्वर से डरता हूँ और न इन्सान
की इज़्ज़त करता हूँ, 5 फिर भी मुझे अपनी
बदनामी का डर है, मैं उसे इन्साफ़ दिला कर
रहूँगा।”
6 यीशु ने कहा, “देखा तुमने कि उस जज
का रवैया कैसा था? 7 इसलिए जो लोग सब्र
से सहते रहते हैं और जो दिन रात परमेश्वर
को पुकारते हैं, उन्हें क्या वह इन्साफ़ नहीं
दिलाएँगे? 8 मैं तुम को बताए देता हूँ, कि वह
बहुत ही जल्दी उनके लिए इन्साफ़ का काम
करेंगे। फिर भी जब मैं दोबारा आऊँगा तो
कितने लोगों को पा सकूँगा जिन में विश्वास
होगा?”
9 कई दृष्टांत यीशु ने उन लोगों को बताए जो
अपने आप को बहुत मज़हबी समझते थे और
दूसरे लोगों को नीचा या कम समझा करते
थे। 10 दो जन मन्दिर में भजन कीर्तन करने
गए। एक फ़रीसी था, दूसरा टॅक्स लेने वाला।
11 फ़रीसी खड़ा होकर परमेश्वर से कहने
लगा, ‘हे मालिक, मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि मैं
दूसरों की तरह नहीं हूँ, डाका डालने वाला,
बेइन्साफ़, कुकर्मी या इस टॅक्स इकट्ठा करने
वाले की तरह। 12 हर हफ़्ते मैं दो बार उपवास
रखता हूँ। हर चीज़ का दसवाँ भाग देता हूँ।”
13 टॅक्स इकट्ठा करने वाले ने आकाश की
ओर नज़र उठाने की हिम्मत भी नहीं की और

छाती पीटते हुए कहा, 'हे परमेश्वर, मुझ दुष्ट पर रहम[a] कर।'
14 क्या तुम्हें यह मालूम है कि यह दूसरा
इन्सान माफ़ी पा सका। इसलिए कि हर
इन्सान जो अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह
नीचा किया जाएगा, और जो अपने आप को
छोटा बनाएगा, ऊपर उठाया जाएगा।"
15 वे लोग छोटे बच्चों को यीशु के पास लाए
ताकि वह उन्हें छुए, लेकिन जब शिष्यों ने
देखा, तो लोगों को घुड़का। 16 यीशु ने उन्हें
अपने पास बुलाकर कहा, "छोटे बच्चों को
मेरे पास आने दो और उन्हें मना मत करो,
क्योंकि अबोध लोग ही परमेश्वरीय राज्य के
हिस्सेदार बनते हैं। 17 मैं सच कहता हूँ, कि
जो छोटे बच्चों की तरह परमेश्वरीय राज्य को
नहीं अपनाते, वे उसमें कभी दाखिला नहीं
पाएँगे।
18 एक ऑफ़िसर ने यीशु से पूछा, "अच्छे
गुरू, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या
करना चाहिए?"
19 यीशु बोले, "मुझे अच्छा क्यों कह रहे
हो? परमेश्वर को छोड़कर कोई अच्छा नहीं
है। 20 तुम आज्ञाओं को तो जानते होः कुकर्म
न करना, खून न करना, चुराना नहीं, झूठी
गवाही से बचना और अपने माता-पिता जी
की इज़्ज़त करना।"
21 उसने कहा, "ये सब मैं जवानी से करता
आ रहा हूँ।"
22 यह सुनने के बाद यीशु ने कहा, "अभी
भी तुम में एक कमी है। जो कुछ तुम्हारे पास
है, वह सब गरीबों में बाँट दो और स्वर्ग में
तुम्हें खज़ाना मिलेगा। हाँ, मेरे शिष्य भी बन
जाओ।"
23 यह सब सुन कर वह अफ़सोस करने
लगा क्योंकि वह बहुत दौलतमन्द था।
24 उस आदमी को दुखी देख कर यीशु ने
कहा, "अमीर लोगों के लिए परमेश्वर के
राज्य में दाखिल होना कितना मुश्किल है।
25 क्योंकि एक ऊँट के लिए सुई के नाके
में से निकलना आसान है, लेकिन अमीर
आदमी का परमेश्वर के राज्य में दाखिल
होना कठिन है।"
26 तब वहाँ पर खड़े सुनने वालों ने कहा,
"तो अपराधों की क्षमा कौन पा सकेगा?"
27 तभी यीशु ने कहा, "जो बातें इन्सान से
नहीं हो सकती हैं, वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर
कर सकते हैं।"
28 तब पतरस ने जवाब में कहा, "देखिए,
हम सब कुछ छोड़कर आपके शिष्य बन गए
हैं।"
29 यीशु ने उस से कहा, "सच तो यह है कि
ऐसा कोई नहीं है, जिस ने घर, माता-पिता,
भाई-बहन, पत्नी या बच्चों को परमेश्वर के
राज्य के लिए छोड़ दिया हो, 30 लेकिन इसी
दुनिया में कई गुना और आने वाली दुनिया में
हमेशा की ज़िन्दगी न पाए।"
31 तब बारहों को पास लाकर, यीशु ने उन
से कहा, "हम सब यरूशलेम को रवाना होंगे
और जो बातें मेरे बारे में नबियों ने कही
थीं, पूरी होंगी। 32 क्योंकि उसे गैर यहूदियों
के हाथ सुपुर्द किए जाने के साथ उसकी
बेइज़्ज़ती की जाएगी, हँसी उड़ायी जाएगी
और उस पर थूका जाएगा। 33 वे लोग उसे
कोड़े मारेंगे और उसकी जान ले लेंगे, लेकिन
वह तीसरे दिन जी उठेगा।"
34 ये सब बातें उनकी समझ में नहीं आयीं
और उन से छिपी रहीं और जो कुछ उन से
कहा जा रहा था, वे समझ नहीं पाए।
35 जब यीशु यरीहो के पास पहुँचे तो उन्होंने
एक भिखारी को बैठे भीख माँगते हुए देखा।

[a] **18.13** दया

36 वहाँ से भीड़ के गुज़रने का एहसास होते
ही उसने हलचल का कारण पूछा। 37 लोगों ने
उत्तर दिया, “नासरत के यीशु गुज़र रहे हैं।”
38 चिल्लाते हुए उसने कहा, “दाऊद के बेटे
मुझ पर रहम कीजिए।”
39 सामने जाने वाले लोगों ने उसे डाँटा कि
चुप रहे। लेकिन वह और ऊँची आवाज़ में
चिल्लाया, “दाऊद के बेटे, मुझ पर दया करें।”
40 यीशु वहीं रुक गए और उन्होंने आदेश
दिया कि उसे उनके पास लाया जाए।
41 उसके पास आते ही यीशु ने उससे पूछा
कि वह चाहता क्या है। उसने कहा, “यही
कि मैं देखने लगूँ।”
42 यीशु बोले, “तुम देखने लगो, तुम्हारे
विश्वास ने तुम्हें अच्छा कर दिया है।”
43 उसी समय से वह देखने लगा। परमेश्वर
की तारीफ़ करने के साथ ही वह यीशु को
मानने लगा और सभी लोगों ने यह देख कर
परमेश्वर की स्तुति की।

19 यीशु यरीहो नामक जगह से जा रहे
थे। 2 उस वक्त ज़क्कई नाम के टॅक्स
कलेक्टरों के अमीर प्रधान के मन में उन्हें
देखने की इच्छा उत्पन्न हुई। 3 हालाँकि उसने
चाहा कि यीशु को देख ले लेकिन भीड़
के कारण और नाटा होने की वजह से वह
मुश्किल पा रहा था। 4 उसी रास्ते पर दौड़ते
हुए वह एक गूलर के पेड़ पर जा बैठा।
5 यीशु वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने अपनी
आँखें ऊपर उठा कर देखा और कहा, “ज़क्कई
जल्दी से नीचे आओ, क्योंकि आज मैं तुम्हारे
यहाँ आकर खाना खाऊँगा।” 6 वह झटपट
नीचे उतर आया और बड़ी खुशी से वह यीशु
को अपने घर ले गया और उनका स्वागत
किया।
7 यह सब देख कर लोग कुड़कुड़ा कर
कहने लगे, “अरे, यीशु तो दुष्ट इन्सान के
यहाँ जा रहे हैं।”
8 खड़े होकर ज़क्कई यीशु से कहने लगा,
“देखिए यीशु, मैं अपनी दौलत का आधा
हिस्सा गरीबों को दे दूँगा। अगर मैंने
धोखाधड़ी से किसी को लूटा है, तो उसका
चौगुना भर दूँगा।”
9 यीशु ने कहा, “आज इस घर में अपराधों
की माफ़ी आयी है क्योंकि ज़क्कई भी अब्राहम
के वंश का है। 10 मनुष्य का पुत्र खोए हुए को
खोजने और बचाने आया है।” 11 इसलिए कि
वे लोग परमेश्वर के राज्य के बहुत जल्दी
आने के बारे में कायल थे, यरूशलेम के पास
आते ही जब कि उनके कान इन सब बातों
को सुनने के लिए खुले थे, यीशु ने यह दृष्टांत
बतलाया।
12 “एक अमीर आदमी ने बहुत दूर देश
को जाकर अपने लिए राज्य जीत कर वापस
आने की योजना बनायी। 13 इसके पहले
उसने अपने दस सेवकों को बुलाकर दस
मुहरें दीं और कहा, जब तक मैं वापस न
आऊँ इसे कारोबार में लगा दो।
14 लेकिन उसी के लोगों ने उससे नफ़रत
के कारण अपने संदेशवाहकों के हाथ यह
कहला कर भेजा, कि हम नहीं चाहते कि यह
हमारे ऊपर राज्य करे।
15 राजपद पाकर जब वह लौटा तो उसने
अपने नौकरों को जिन्हें पैसे दिए थे, अपने
पास बुलवाया ताकि मालूम करे कि लेन-देन
करके उन्होंने क्या कमाया।

16 तब पहले ने आकर कहा, “हे मालिक,
आपके पैसों से मैंने उतना ही और कमा लिया
है।”
17 उसने उससे कहा, “शाबाश, तुम थोड़े से
पैसे में ईमानदार रहे, अब से तुम दस नगरों
पर अधिकार ले लो।”
18 दूसरे ने भी वहाँ आकर कहा, “मालिक,
देखिए ये रहा, वह पैसा जो आपने मुझे दिया
था मैंने उतने ही और कमा लिए हैं।”
19 उसको भी मालिक ने पाँच नगरों की
ज़िम्मेदारी दे दी।
20 तीसरा भी वहाँ आकर मालिक से कहने
लगा, “ये रहा वह पैसा जो आपने मुझे दिया
था, मैंने इसे अच्छी तरह कपड़े में लपेट कर
रख दिया था। 21 इसलिए कि आप कठोर
स्वभाव के हैं, मुझे आप से डर लगता है।
आप तो जहाँ रखते नहीं वहीं ढूँढते हैं और
जहाँ बोते नहीं वही काटते हैं।”
22 तब उस अमीर आदमी ने कहा, “हे दुष्ट
इन्सान, तुम्हारे मुँह के कहने के मुताबिक मैं
तुम्हारा इन्साफ़ करूँगा। मैं जहाँ रखता नहीं
हूँ वहीं से अपेक्षा करूँगा और जहाँ बोता नहीं
हूँ वहीं काटूँगा। 23 तुमने मेरी दी हुई रकम को
बैंक में क्यों नहीं रख दिया था ताकि ब्याज
के साथ मुझे मेरा पैसा मिलता।”
24 वहाँ पर खड़े हुए लोगों से मालिक ने
कहा, “इस आदमी से पैसा लेकर उस को दे
दो, जिस ने सब से ज़्यादा कमाया है।”
25 लोगों ने कहा, “मालिक, उसके पास तो
पहले ही से दस मुहरें हैं।”
26 मालिक ने फिर कहा, “जिस के पास
पहले से है उसे और मिलेगा, जिस के पास
कम है, उस से वह भी ले लिया जाएगा।
27 मेरे उन दुश्मनों को मेरे पास यहाँ ले आओ
जो नहीं चाहते कि मैं उन पर शासन करूँ,
मेरे सामने ही उन्हें मौत के घाट उतार दिया
जाएगा।”
28 यह सब कह कर यीशु आगे यरूशलेम
को बढ़ गए। 29 जब वह बेतफ़गे और
बेतनिय्याह में जैतून के पहाड़ पर पहुँचे, यीशु
ने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, 30 कि
सामने के गाँव में तुम जैसे ही दाखिल होगे,
तुम्हें एक गधी का बच्चा बन्धा हुआ मिलेगा,
जिस पर कभी कोई नहीं बैठा। उसे खोलकर
यहाँ ले आओ। 31 अगर कोई पूछे कि क्यों
ऐसा कर रहे हो, तो कहना, कि यीशु को इस
की ज़रूरत है।”
32 भेजे हुए लोगों ने जाकर वैसा ही पाया
जैसा उन्हें बताया गया था। 33 जब वे उसे
खोल रहे थे, मालिक ने उन से पूछा, “यह
क्या कर रहे हो?” 34 तभी उन्होंने कहा,
“यीशु को इसकी ज़रूरत है।”
35 वे गधी यीशु के पास ले आए और उस
पर अपने कपड़े डाल कर यीशु को उस पर
बैठाया। 36 चलते वक्त वे अपने कपड़े भी
सड़क पर डालते गए।
37 जब यीशु जैतून के पहाड़ से नीचे उतर
रहे थे, शिष्यों की भीड़ ऊँची आवाज़ से खुशी
से भर कर परमेश्वर के किए गए बड़े कामों
के लिए बडाई कर रही थी। 38 वे चिल्ला रहे
थे, “जो राजा प्रभु के नाम से आ रहा है वह
महान है। आकाश में शान्ति और ऊँचाई पर
उनकी महिमा हो।”
39 उस भीड़ में से कुछ फ़रीसियों ने कहा,
“गुरू जी, अपने शिष्यों को डाँटिए। वे शोर
मचा रहे हैं।”

40 जवाब में यीशु ने कहा, “मैं तुम्हें बताए
देता हूँ कि अगर ये लोग मेरी बड़ाई नहीं
करेंगे, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।”
41 शहर के पास आते ही यीशु रोने लगे
और बोले, 42 “अच्छा होता अगर तुमने
आज सुकून देने वाली बातों को जाना होता,
लेकिन वे बातें तुम्हारी नज़र से छिपी हुयी
हैं। 43 एक दिन आएगा जब तुम्हारे दुश्मन
तुम्हारे चारों तरफ़ बाड़ा बाँधेंगे। 44 वे तुम्हें
तहस नहस कर डालेंगे। वे एक पत्थर को
भी यहाँ नहीं छोड़ेंगे क्योंकि तुमने दिए गए
मौके की कीमत नहीं जानी।”
45 इसके बाद प्रार्थना भवन मन्दिर के
अहाते में जाकर यीशु बेचने वालों को
खदेड़ने लगे और कहा, 46 “यह लिखा है,
मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा, लेकिन
तुमने इसे डाकुओं की गुफ़ा बना डाला है।”
47 यीशु हर दिन प्रार्थना भवन में सिखाते
रहे। लेकिन प्रधान पुरोहित और शिक्षक और
अगुवों ने उन्हें नाश करने की योजना बनायी।
48 वे कुछ नहीं कर पाए क्योंकि सभी लोग
बड़े ध्यान से यीशु की बातों को सुन रहे थे।

20 किसी एक दिन जब यीशु अपने
शिष्यों के साथ लोगों को सुसमाचार
दे रहे थे, प्रधान पुरोहित और शिक्षक, बुज़ुर्ग
लोगों के साथ वहाँ आ खड़े हुए। 2 उनका
कहना था, कि यीशु यह बताएँ कि किस के
अधिकार में होकर वह यह सब कर रहे थे
या किस ने यीशु को यह अधिकार दिया था।
3 यीशु ने जवाब में कहा, “मैं भी एक बात
तुम से पूछना चाहूँगा, तुम जवाब दो। 4 यूहन्ना
का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था या
इन्सान की ओर से?”
5 वे आपस में कहने लगे, “अगर हम कहें
परमेश्वर की तरफ़ से, तो यीशु कहेंगे कि
फिर तुमने उस पर भरोसा क्यों नहीं किया।
6 अगर हम कहें, वह मनुष्य की बनायी हुयी
शिक्षा थी, तो सब लोग हम को पत्थरवाह
कर देंगे, क्योंकि यूहन्ना को वे एक नबी
समझते थे।”
7 इसलिए उन्होंने उत्तर दिया, “हमें कुछ
नहीं मालूम।”
8 यीशु ने भी उन से कहा, “मैं भी तुम्हें यह
नहीं बताता कि मैं किस के अधिकार से यह
सब करता हूँ।”
9 तब यीशु लोगों को यह दृष्टांत बताने लगे,
“एक आदमी ने अंगूर का बगीचा लगाया
और किसानों के हाथ ज़िम्मेदारी देकर बहुत
दिनों के लिए दूर देश चला गया। 10 फ़सल
काटे जाने के समय उसने एक नौकर को
मजदूर किसानों के पास भेजा ताकि वे बगीचे
से कुछ अंगूर उसे दें, लेकिन उन मजदूरों ने
उसे मार पीट कर खाली हाथ वापस भेज
दिया। 11 फिर उसने दूसरे नौकर को भेजा।
उसके साथ भी उन्होंने वैसा ही बर्ताव किया।
12 तब उसने तीसरा नौकर भेजा, लेकिन उसे
भी ज़ख्मी करके बाहर फेंक दिया गया।
13 तब उस बगीचे के मालिक ने कहा, “मैं
क्या करूँ? अब मैं अपने बेटे को भेजूँगा।
शायद उसे देख कर वे उसे इज़्ज़त देंगे।”
14 जैसे ही अंगूर के बगीचे के उन मजदूरों
ने उसे देखा, तो कहा, “यह तो जायदाद का
मालिक है, आओ, इसे मार डालें ताकि सब
कुछ हमारा हो जाए।”
15 इसलिए उन लोगों ने उसे बगीचे के बाहर
मार डाला। ऐसे में बगीचे का मालिक उनके
साथ कैसा बर्ताव करेगा? 16 उसने आकर

उन बगीचे के मजदूरों को मार डाला और
बगीचा दूसरों को दे दिया।" यह सब सुनने
पर उन्होंने कहा, "परमेश्वर न करे ऐसा हो।"
17 उसने उनको देख कर कहा, "तो वह
लिखी हुई बात किस के लिए है? जिस
पत्थर को ठेकेदारों ने बेकाम का समझा
था, वही कोने का पत्थर ठहरा है। 18 जो
कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह बर्बाद हो
जाएगा, लेकिन जिस पर यह पत्थर गिरेगा,
वह चकनाचूर हो जाएगा।"
19 उस समय प्रधान पुरोहित और शास्त्री
इस धुन में थे कि यीशु को किसी तरह पकड़
लें, लेकिन उन्हें लोगों का डर था। वे यह
समझ गए थे कि यीशु इस दृष्टान्त से उन्हीं
की तरफ़ इशारा कर रहे थे। 20 वे यीशु की
ताक में लगे थे और उन्होंने जासूस भेजे कि
धर्म का भेष धर कर यीशु की कोई न कोई
बात पकड़ें, ताकि उन्हें गवर्नर के हाथ और
अधिकार में सौंप दें।
21 यीशु से बातचीत करते हुए, उन लोगों ने
पूछा, "गुरू जी, इस में कोई शक नहीं कि
आप परमेश्वर का रास्ता बताते और खरा
उपदेश देते हैं और किसी की तरफ़दारी नहीं
करते हैं। 22 बताइए कि हमें कैसर को टॅक्स
देना चाहिए या नहीं?"
23 उनकी चालाकी को जान कर यीशु ने उन
लोगों से कहा, "तुम मेरी परख क्यों कर रहे
हो? 24 चाँदी का सिक्का मुझे दिखाओ। इसके
ऊपर किसकी तस्वीर खुदी हुयी है?" उन
लोगों ने कहा, "राजा की"।
25 यीशु बोले, "जो राजा का हिस्सा है वह
राजा को दो और जो कुछ परमेश्वर का है
वह परमेश्वर को।"
26 यीशु के लोगों की मौजूदगी की वजह
से, यीशु की कही हुयी बातों पर न ही उनके
विरोधियों ने कुछ टीका टिप्पणी की, और न
ही कोई जवाब दिया।"
27 तब जी उठने पर विश्वास न करने वाले
सदूकियों ने आकर सवाल किया, 28 "गुरु
जी, मूसा ने लिखा है कि अगर कोई आदमी
जिस के बच्चे नहीं हैं, मर जाए तो उसका
भाई उस महिला से ब्याह करके अपने भाई
के लिए औलाद पैदा करे। 29 मान लें कि
सात भाई थे और पहले का ब्याह तो हुआ,
लेकिन इसके पहले कि बच्चे हों, वह मर
गया। 30 दूसरे भाई ने उस महिला से शादी
की, लेकिन वह भी निःसन्तान मर गया।
31 तीसरे भाई ने उस महिला को अपनी बीवी
करके अपना लिया इस तरह से सभी सात
भाई निःसन्तान मर गए। 32 आखिर में वह
महिला भी चल बसी। 33 इसलिए जब सब
जी उठेंगे, तो वह किसकी पत्नी कहलाएगी,
क्योंकि वह तो सातों भाईयों की पत्नी रही
थी?"
34 जवाब में यीशु ने कहा, "इस दुनिया के
लोग ब्याह करते और करवाते हैं। 35 लेकिन
जो लोग इस लायक होंगे कि आने वाली
दुनिया के वारिस हों और जी उठने वालों
में उनकी गिनती हो, उनके लिए वहाँ ब्याह
नहीं है। 36 वे लोग फिर मरेंगे भी नहीं क्योंकि
वे स्वर्गदूतों[a] की तरह होंगे और वे परमेश्वर
की संतान हैं जो एक नया जीवन जीने के लिए
जिलाए जाएँगे। 37 अब यह कि मुर्दे जिलाए
जाएँगे या नहीं, मूसा ने भी झाड़ी की घटना में
बताया है। अब्राहम, इसहाक और याकूब के
मरने के बहुत समय बाद वह परमेश्वर को
अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर
कहता है। 38 परमेश्वर मुर्दों के नहीं, लेकिन
जीवित लोगों के हैं, क्योंकि परमेश्वर के
नज़दीक सभी जीवित हैं।"

[a] **20.36** फ़रिश्तों

39 यह सुन कर शास्त्रियों में से कुछ ने कहा,
“हे गुरू, आपने अच्छा कहा।”
40 इसके बाद उन में से किसी को कुछ
पूछने की हिम्मत नहीं हुयी।
41 यीशु ने उन लोगों से कहा, “मसीह दाऊद
का बेटा क्यों कहलाता है? 42–43 दाऊद ने भी
खुद भजन की किताब में लिखा है, ‘प्रभु ने
मेरे प्रभु से कहा, जब तक मैं तुम्हारे दुश्मनों
को तुम्हारे वश में न कर दूँ, सारे अधिकार
को थामे रखो।’ 44 दाऊद उन्हें प्रभु कह कर
पुकारता है, तो फिर वह[a] उसकी सन्तान
कैसे हुए?”
45 लोग उनकी बात को सुन रहे थे, तभी
यीशु ने अपने चेलों से कहा, 46 “शास्त्रियों
से सावधान रहो। उनको लम्बे लम्बे चोगे
पहनकर घूमना अच्छा लगता है। वे बाज़ारों
में लोगों से नमस्कार लेते फिरते हैं। उन्हें
सभा-सम्मेलनों में आगे की जगह और दावतों
में मुख्य स्थान पसंद होते हैं। 47 वे विधवाओं
पर अन्याय करके उन्हें लूट लेते हैं, और
दिखावे के लिए लम्बी-चौड़ी प्रार्थनाएँ करते
हैं। इन्हें तो भारी सज़ा मिलेगी।”

21 यीशु ने प्रार्थना भवन की दान पेटी में
अमीर लोगों को पैसा डालते देखा।
2 यीशु ने एक गरीब विधवा को भी दो ताँबे
के छोटे सिक्कों को डालते देखा।
3 तभी यीशु ने कहा, “मैं तुम्हें एक सच्चाई
बतलाता हूँः इस गरीब विधवा ने दूसरे सभी
लोगों से ज़्यादा दान दिया है। 4 इन सभी ने
परमेश्वर को दी गयी भेंट को अपनी दौलत
की बहुतायत में से दिया है, लेकिन अपनी
गरीबी के बावजूद अपनी बचत में से इस
विधवा ने दिया है।”
5 जैसा कि कुछ लोग प्रार्थना भवन के
बारे में बात कर रहे थे कि इसे किस तरह
खूबसूरत पत्थरों और भेंट आदि से संवारा
गया है, यीशु बोल उठे, 6 “जहाँ तक इन
दिखने वाली चीज़ों का सवाल है, ऐसे दिन
आने वाले हैं जब कि एक पत्थर पर दूसरा
नहीं दिखायी देगा, वे सभी ढा दिए जाएँगे।”
7 वे पूछने लगे, “गुरू जी, ऐसा कब होने
वाला है? इन घटनाओं के होने का निशान
क्या होगा?”
8 यीशु बोले, “सावधान रहो, कि तुम घबरा
न जाओ। बहुत से लोग यह दावा करते हुए
आएँगे, कि वे यीशु मसीह हैं। और समय
आ ही रहा है, इसलिए उनकी मत सुनना।
9 इसलिए जब तुम युद्ध और गड़बड़ियों की
खबर सुनो, डरना मत। इसलिए कि उनका
होना ज़रूरी है, लेकिन अन्त फिर भी दूर
होगा।”
10 तब यीशु ने उन से कहा, “एक देश दूसरे
देश के खिलाफ़ और एक राज्य दूसरे राज्य
के खिलाफ़ उठ खड़ा होगा। 11 अलग-अलग
जगह महामारी आएगी। आकाश में डरावनी
चीज़ें दिखेंगी और बड़े-बड़े चिन्ह भी।
12 लेकिन इन सब के पहले, वे तुम्हें
पकड़ेंगे, सताएँगे और जेल के हवाले कर
डालेंगे। 13 मुझ से नफ़रत के कारण तुम्हें
शासकों और अधिकारियों के सामने लाया
जाएगा। इस से तुम्हें मौका मिलेगा कि तुम
मेरे बारे में बताओ। 14 इसलिए यह पहले से
ठान लो कि यह सोचोगे भी नहीं कि जवाब

[a] **20.44** यीशु

क्या दिया जाए। 15 इसलिए कि मैं तुम्हें समझ
भी दूँगा और शब्द भी कि तुम्हें कहना क्या
है। कोई तुम्हारा विरोध नहीं कर सकेगा।
16 यहाँ तक कि तुम्हारे माँ, बाप, भाई,
रिश्तेदार तुम्हें धोखा देंगे। तुम में से कुछ
को वे लोग मार भी डालेंगे। 17 मेरे प्रति
तुम्हारी वफ़ादारी की वजह से लोग तुम से
नफ़रत करेंगे। 18 लेकिन कोई तुम्हारा कुछ
भी बिगाड़ न सकेगा। 19 तुम्हारे सब्र और
सहने की योग्यता की वजह से तुम अपने
प्राणों को बचा लोगे।
20 जब तुम यरूशलेम को फ़ौजों से घिरा
देखो, तो समझ लेना कि उसकी बर्बादी
नज़दीक है। 21 तब जो लोग यहूदिया में हों,
पहाड़ों पर भाग जाएँ और जो शहर के अन्दर
हो बाहर न जाएँ और जो खेतों में हों, शहर में
आने की कोशिश न करें। 22 ये बदला लिए
जाने के दिन होंगे, ताकि जो कुछ लिखा है,
वह सभी पूरा हो। 23 अफ़सोस इस बात का
है कि शिशु को दूध पिलाने वाली माताओं
को उन दिनों में बहुत तकलीफ़ सहनी पड़ेगी,
इसलिए कि इन लोगों पर भारी क्लेश आ
पड़ेगा।
24 उन्हें तलवार की धार का सामना करना
पड़ेगा और गुलाम की तरह वे तमाम देशों
में ले जाए जाएँगे। यरूशलेम गैरयहूदियों के
पैरों तले तब तक रौंदा जाएगा जब तक
गैरयहूदियों का समय पूरा न हो जाए।
25 सूरज, चाँद और सितारों में चिन्ह दिखाई
देंगे। इसके साथ ही, संसार के देशों में
घबराहट छा जाएगी। इसके साथ समुद्र में
गर्जन होगा और लहरें बेकाबू हो जाएँगी जिस
से लोग डर के मारे काँप उठेंगे। 26 पृथ्वी पर
घटने वाली वारदातों की वजह से इन्सान के
मन में डर समा जाएगा, क्योंकि आकाश की
ताकतें हिलायी जाएँगी।
27 और तब वे मुझे बड़ी शान-शौकत,
रौनक और महिमा के साथ बादलों पर सवार
होकर उतरते देखेंगे। 28 जब यह सब होने
लगे, तब अपने सिर ऊपर की तरफ़ उठाना,
क्योंकि तुम्हारी आज़ादी काफ़ी नज़दीक आ
चुकी होगी।
29,30 यीशु ने उन्हें एक दृष्टान्त बतलाया,
"अंजीर के और दूसरे पेड़ों को देखो। जैसे ही
उनकी पत्तियाँ निकलने लगती हैं, तुम जान
लेते हो कि गर्मी का मौसम आने वाला है।
31 इसी तरह जब तुम इन सब बातों को होते
हुए देखो, तो समझ लो कि परमेश्वर का
राज्य[a] नज़दीक है।
32 मैं सच कह रहा हूँ कि जब तक सब बातें
पूरी न हो जाएँ, इस पीढ़ी का खात्मा नहीं
होगा। 33 आकाश और पृथ्वी अपनी जगह
से हट सकते हैं, लेकिन मेरी बातें पूरी होकर
ही रहेंगी।
34 इसलिए जागते रहो ताकि तुम्हारे मन,
कहीं मतवालेपन और पारिवारिक चिन्ता से
सुस्त न हो जाएँ, और वह दिन अचानक तुम
पर आ पड़े। 35 इसलिए कि यह समय सारी
धरती पर रहने वालों पर एक जाल के समान
आ पड़ेगा। 36 इसलिए हमेशा सावधान रहो
और प्रार्थना करते रहो ताकि तुम इन आने
वाली बातों से बच सको और मेरे सामने
हिसाब दे सको।
37 दिन के समय में यीशु प्रार्थना भवन में
सिखाया करते थे और रात में जैतून पहाड़
पर समय बिताते थे। 38 सुबह के समय सभी
लोग प्रार्थना भवन में यीशु की सुनने आया
करते थे।

[a] **21.31** शासन

22 फ़सह का त्यौहार जिसे अखमीरी
रोटी का त्यौहार भी कहा जाता है,
पास आ चुका था। 2 प्रधान पुरोहित और
शास्त्री जो लोगों से डरते थे, इस फ़िराक में
थे कि यीशु को कैसे मार डालें।
3 बारहों में से एक, जिस का नाम यहूदा
इस्करियोती था, उसमें शैतान दाखिल हो
गया। 4 प्रधान पुरोहितों और प्रार्थना भवन के
सुरक्षा कर्मियों के प्रमुख से उसने बातचीत
की, कि वह किस तरह से यीशु को उनके
हाथों पकड़वा सकेगा। 5 उसकी चाल उन्हें
पसन्द आ गयी और उन लोगों ने उसे पैसे
देने का वायदा किया। 6 वह भी अपना वचन
देकर ऐसे मौके की तलाश में लग गया जब
यीशु के साथ भीड़-भाड़ न हो।
7 फ़सह की कुर्बानी का समय, यानि कि
अखमीरी रोटी का दिन आ ही पहुँचा। 8 यीशु
ने पतरस और यूहन्ना को भेजा कि फ़सह खाने
की तैयारी करें।
9 उन दोनों ने सवाल किया, “आप कहाँ
चाहेंगे कि इस की तैयारी की जाए?”
10 यीशु ने उन दोनों से कहा, “शहर में
दाखिल होते ही तुम पानी का घड़ा उठाए
एक व्यक्ति को पाओगे। जिस घर में वह
जाए वहीं तुम भी चले जाना। 11 घर के
मालिक से कहना, “गुरू ने पूछा है कि
मेहमानों का कमरा कहाँ है, जहाँ पर मैं अपने
शिष्यों के साथ फ़सह खाऊँ? 12 वह तुम्हें
एक सजा-सजाया घर दिखा देगा। वहीं सारी
तैयारी करना।”
13 जैसा उनको बताया गया था उन्होंने वैसा
ही पाया, और उन्होंने फ़सह की तैयारी की।
14 और जब वह दिन और समय आ गया,
यीशु अपने शिष्यों के साथ फ़सह खाने बैठे।
15 यीशु बोले, “इसके पहले कि मैं दुख
उठाऊँ, मेरी दिली तमन्ना यह रही है कि तुम
सब के साथ मिल कर फ़सह खाऊँ। 16 मैं
तुम से कहता हूँ कि जब तक यह परमेश्वर
के राज्य में पूरा न हो, तब तक मैं उसे नहीं
खाऊँगा।”
17 तब प्याले को लेकर, धन्यवाद देते हुए
यीशु ने कहा, “इसे आपस में बाँट लो। 18 मैं
तो यह बता देना चाहता हूँ कि जब तक
परमेश्वर का राज्य न आ जाए, तब तक मैं
अंगूर का रस न पीऊँगा।”
19 यीशु ने रोटी लेकर धन्यवाद के साथ
तोड़ी और यह कहते हुए उन्हें दी, “यह मेरी
देह है जिसे तुम्हारे लिए दिया गया है। मुझे
याद करने के लिए यही करना।”
20 रोटी खाने के बाद, यीशु ने प्याले के
साथ भी वैसा ही किया जैसा रोटी के साथ
किया था और कहा, “यह प्याला मेरे खून में
जो तुम्हारे लिए बहाया जाने वाला है, नयी
वाचा है।
21 लेकिन देखो, जो दगा देने वाला है,
उसका हाथ मेरे साथ मेज़ पर है। 22 जैसा
होना है उसके मुताबिक तो मेरे साथ होगा
ही, लेकिन अफ़सोस उस पर जो मेरे साथ
विश्वासघात करेगा।”
23 तब वे सभी आपस में इस बात पर
सवाल जवाब करने लगे कि आखिर उन में
से कौन ऐसा करेगा।
24 उन सब के बीच यह विवाद उठ खड़ा
हुआ कि बड़ा कौन है।
25 यीशु ने उन से कहा, “गैर यहूदियों में
राजा शासन करते हैं और जो उनके ऊपर
अधिकार का इस्तेमाल करते हैं, “हितैषी”
कहलाते हैं, 26 लेकिन तुम्हारे बीच ऐसा नहीं
होना चाहिए। तुम्हारे बीच बड़े को छोटा
बनना चाहिए और अगुवे को सेवा करनी
चाहिए। 27 आखिर बड़ा कौन है, जो खाना
खा रहा है या जो परोस रहा है? क्या खाने

वालों को बड़ा नहीं समझा जाता है? लेकिन
मैं तो तुम सब के साथ सेवक की तरह हूँ।
28 तुम्हीं हो जो मेरे परखे जाने के समय मुझे
सहारा देते रहे हो। 29 जिस तरह से परमेश्वर
ने मुझे राज्य का हक दिया है, मैं भी तुम्हें एक
राज्य[a] देता हूँ। 30 ताकि मेरे राज्य में मेरी मेज़
पर से तुम भी खाओ और तख्त[b] पर बैठ
कर इस्राएल के बारह कबीलों का इन्साफ़
करो।"
31 यीशु ने कहा, "शमौन, शमौन, शैतान ने
तुम्हें माँग लिया है, ताकि तुम्हें गेहूँ की तरह
फटके। 32 लेकिन मैंने तुम्हारे लिए यह माँगा
है कि तुम्हारा विश्वास डावाँडोल न हो। और
जब तुम वापस मज़बूत हो जाओ, तो अपने
भाईयों को मज़बूत करना।"
33 उसने यीशु को जवाब दिया, "स्वामी
जी, आपके लिए मैं सिर्फ़ कैद में जाने के
लिए ही नहीं, लेकिन मरने के लिए भी तैयार
हूँ।"
34 यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि
इसके पहले कि मुर्गा बाँग दे, तुम तीन बार
मेरा इन्कार कर चुके होगे।"
35 यीशु बोले, "यह बताओ जब मैंने तुम्हें
बिना बटुआ, झोला और चप्पल भेजा था,
तब क्या तुम्हें किसी चीज़ की कमी हुयी?"
वे सभी बोल उठे, "नहीं, बिल्कुल नहीं।"
36 तब यीशु ने उन से कहा, "लेकिन अब
जिस के पास एक बटुआ है, वह उसे ले और
एक झोला भी ले। जिस के पास तलवार नहीं
है, वह अपने कपड़े बेच कर एक तलवार
खरीद ले। 37 मैं तुम्हें बताता हूँ कि जो कुछ
लिखा है वह पूरा होगा और वह यह है:
"तमाम अपराधियों में उसे भी अपराधी गिना
गया।" मेरे बारे में लिखी बातें पूरी होंगी ही।"
38 वे कहने लगे, "गुरु जी, देखिए, यहाँ पर
दो तलवारें हैं।" यीशु ने कहा, "काफ़ी हैं।"
39 जैसा कि यीशु की आदत बन चुकी थी,
यीशु जैतून पहाड़ पर गए और उनके शिष्य
भी उनके साथ हो लिए। 40 वहाँ पहुँचने पर
यीशु ने उन से कहा, प्रार्थना करो कि तुम
प्रलोभन के शिकार न बनो।"
41 यीशु उन से थोड़ी दूर जाकर घुटने टेक
कर परमेश्वर से कहने लगे, "पिता जी,
अगर आप चाहें, यह प्याला अर्थात् आने
वाला दुख मुझ पर न आने दीजिए। 42 फिर भी
मेरी नहीं, लेकिन आपकी इच्छा पूरी हो।"
43 तभी आकाश से एक स्वर्गदूत[c] आकर
यीशु को हिम्मत देने लगा।
44 पीड़ा ही में यीशु और ज़्यादा परमेश्वर
पिता से बातचीत करने लगे। और यीशु
मसीह का पसीना खून की बड़ी बूँदों की तरह
ज़मीन पर टपक रहा था।
45 वहाँ से वापस अपने शिष्यों के पास
आने पर यीशु ने उन्हें उदासी की वजह से
सोते हुए पाया। 46 और उन से कहा, "तुम
लोग सो क्यों रहे हो? उठो और प्रार्थना करो
ताकि तुम प्रलोभन[d] में न पड़ जाओ।"
47 जब यीशु ऐसा कह ही रहे थे तभी वहाँ
अचानक एक भीड़ आ पहुँची। यहूदा जो
बारह शिष्यों में से एक था, भीड़ के आगे
चला आ रहा था। यीशु का चुम्बन लेने
के लिए वह आगे बढ़ा। 48 लेकिन यीशु
बोले, "यहूदा! क्या चुम्बन लेकर तुम मुझे
पकड़वाना चाहते हो?"

[a] **22.29** स्वर्गिक [b] **22.30** राज राजासन [c] **22.43** फ़रिश्ता [d] **22.46** परीक्षा

49 यीशु के साथ चारों तरफ़ खड़े लोगों ने
जब यह देखा तो बोल उठे, “गुरु जी, क्या
हम तलवार से हमला बोलें?”
50 उन में से किसी एक ने तलवार चला
कर प्रधान पुरोहित के नौकर का कान काट
डाला।
51 इसके बाद यीशु ने उसके कान को छू
कर उसे ठीक कर दिया।
52 इसके बाद यीशु ने प्रधान पुरोहित,
प्रार्थना भवन के सुरक्षा अधिकारियों और
बुज़ुर्गो से कहा, “क्या तुम मुझे चोर की तरह
पकड़ने के लिए तलवारों और दूसरे हथियारों
के साथ आए हो?” 53 मैं हर दिन प्रार्थना
भवन में तुम्हारे साथ ही रहा करता था, तब
तुम में से किसी ने भी मेरे खिलाफ़ हाथ न
उठाया। लेकिन इस समय के तुम ही मालिक
हो और शैतान की शक्ति भी तुम्हारे पक्ष में
है।
54 तब वे लोग यीशु को अपने साथ प्रधान
पुरोहित के घर तक ले गए, लेकिन पतरस
धीरे-धीरे पीछे चलता गया। 55 जहाँ लोग
आँगन में आग जलाकर बैठे ताप रहे थे,
वहीं पतरस भी जाकर बैठ गया। 56 तभी एक
नौकरानी ने पतरस को वहाँ बैठे देख कहा,
“यह आदमी भी यीशु के साथ था।”
57 पतरस ने तुरन्त कहा, “हे महिला, मैं तो
उस व्यक्ति को जानता तक नहीं।”
58 कुछ समय के बाद किसी और ने पतरस
को वहाँ बैठे देख कहा, “तुम भी उसके साथ
थे।” लेकिन पतरस बोला, “हरगिज़ नहीं। मैं
तो उसे जानता ही नहीं।”
59 एक घन्टे बाद किसी और ने कहा,
“सचमुच यह व्यक्ति उसके साथ था,
क्योंकि यह भी गलीली है।”
60 तब पतरस ने कहा, “भाई साहब, आप
क्या कह रहे हैं, मुझे समझ में नहीं आ रहा
है।” 61 उसी समय यीशु ने मुड़ कर पतरस
को देखा। पतरस को भी यीशु की कही बात
याद आयी कि मुर्गे के बाँग देने से पहले तुम
तीन बार मेरा इन्कार कर चुकोगे। 62 तभी
पतरस बाहर जाकर फूट-फूट कर रोने लगा।
63 जो लोग यीशु को पकड़े हुए थे, वे यीशु
का मज़ाक उड़ा रहे थे और उसे मार रहे थे।
64 यीशु की आँखों पर पट्टी बाँधकर, उन्होंने
थप्पड़ मार कर पूछा, “बताओ, किस ने
मारा?”
65 यीशु के खिलाफ़ वे और बुरी-बुरी बातें
कह रहे थे।
66 सुबह होते ही बुजुर्ग अगुवे, प्रधान
पुरोहित और शास्त्री मिल कर आए और यीशु
को सभा में ले गए और उन से पूछने लगे,
“क्या तुम ही मसीह हो?” 67 यीशु ने कहा,
“अगर मैं हाँ कहूँ तो तुम यकीन न करोगे।
68 अगर मैं तुम से सवाल करूँ, तुम न तो
जवाब दोगे और न ही मुझे जाने दोगे। 69 अब
से मैं परमेश्वर के सारे अधिकार के साथ
होऊँगा।”
70 तब सभी ने सवाल किया, “क्या आप
परमेश्वर से ही हैं?” यीशु ने उत्तर दिया, “हाँ
तुम जो कह रहे हो, मैं वही हूँ।”
71 तब उन लोगों ने कहा, “अब हमें और
किसी की गवाही की ज़रूरत नहीं है क्योंकि
हम ने यीशु के मुँह से सुन लिया है।”

23 पूरी सभा वहाँ से उठ कर यीशु को
पिलातुस के यहाँ ले गयी। 2 यीशु
की खिलाफ़त में उन्होंने कहा, “हम ने यह
पाया है कि खुद को मसीह और राजा बता

कर और लोगों को टॅक्स न देने को कह कर
यह इन्सान सारे देश को गुमराह कर रहा है।"
3 पिलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?" यीशु ने जवाब
में कहा, "तुम सही कह रहे हो।"
4 तब पिलातुस ने प्रधान पुरोहितों से कहा,
"मैं इस इन्सान में कोई खोट नहीं पाता हूँ।"
5 और ज़्यादा गुस्से में वे कहने लगे,
"गलील से लेकर यहाँ तक यहूदियों के बीच
शिक्षा दे-देकर यह लोगों को भड़काता रहा
है।"
6 जब पिलातुस ने 'गलीली' शब्द सुना, तो
जानना चाहा कि वह गलील के रहने वाले हैं
या नहीं। 7 जैसे ही पिलातुस को मालूम पड़ा
कि यीशु हेरोदेस के इलाके के हैं, उसने उन्हें
तुरन्त हेरोदेस के पास भेज दिया। उस समय
हेरोदेस यरूशलेम ही में था।
8 हेरोदेस ने यीशु के बारे में बहुत कुछ सुन
रखा था। बहुत समय से वह यीशु को और
उनके ज़रिए होने वाले आश्चर्य के कामों को
देखना चाहता था इसलिए यीशु को देखते ही
उसे बड़ी खुशी हुयी। 9 उसने उन से काफ़ी
पूछ-ताछ की, लेकिन यीशु ने उसे कोई
जवाब नहीं दिया।
10 वहाँ खड़े प्रधान पुरोहित और शास्त्री उन
पर बहुत गुस्से में तमाम आरोपों की बौछार
करते रहे। 11 अपने सैनिकों के साथ मिल
कर हेरोदेस ने यीशु की बेईज़्ज़ती की, मज़ाक
उड़ाया और शाही कपड़े[a] पहिना कर वापस
पिलातुस के पास भेज दिया।
12 इसी दिन पिलातुस और हेरोदेस एक
दूसरे के दोस्त बन गए। इसके पहले दोनों
में दुश्मनी थी। 13 पिलातुस ने प्रधान पुरोहित
और लोगों के दूसरे अगुवों को पास बुलाकर
उन से कहा, "तुम इस व्यक्ति को दूसरों
को गुमराह करने के आरोप में मेरे सामने
लाए हो। 14 लेकिन जाँच पड़ताल के बाद
मैंने इसे बेगुनाह पाया है। 15 ऐसा उसने कुछ
भी नहीं किया कि उसे मौत की सज़ा सुनायी
जाए, हेरोदेस ने भी ऐसा कुछ नहीं पाया।
16 इसलिए मैं उसे सज़ा देकर छोड़ दूँगा।
17 ऐसा ज़रूरी भी था कि त्यौहार के समय
वह किसी एक अपराधी को आज़ाद कर दे।
18 वे सभी तुरन्त चिल्ला उठे, "यह आदमी
हमें नहीं चाहिए। हमारे लिए बरअब्बा को
छोड़ा जाए।" 19 बरअब्बा को शहर में बलवा
करने और खून करने के आरोप में जेल में
रखा गया था।
20 इसलिए पिलातुस ने जो यीशु को छोड़
देना चाहता था, फिर से उन लोगों को
समझाना चाहा।
21 लेकिन वे फिर चिल्ला उठे, "उसे क्रूस पर
चढ़ाओ, क्रूस पर।"
22 तीसरी बार उसने कहा, "क्यों? आखिर
उसने ऐसा क्या किया है? मैं तो उसे फाँसी
की सज़ा पाने लायक मुजरिम नहीं समझता।
इसलिए मैं उसे सज़ा देकर छोड़ दूँगा।"
23 वहाँ पर खड़े लोग और ज़ोर-ज़ोर से
चिल्लाकर यीशु के लिए क्रूस की मौत की
माँग करने लगे। प्रधान पुरोहित और वहाँ
खड़े लोगों की बात पिलातुस ने मान ही
ली। 24 अन्त में, उनकी माँग के मुताबिक
पिलातुस ने यीशु को मौत की सज़ा का
हुक्म दे दिया, 25 और उन लोगों की माँग
के मुताबिक उसने उस आदमी को रिहा
कर दिया, जिस पर विद्रोह और हत्या का
अभियोग था। लेकिन यीशु को उसने उन
लोगों के हवाले कर दिया।
26 रास्ते में जाते समय, उन्होंने शमौन
नामक एक कुरेनी को आते देखा। क्रूस को

[a] **23.11** चोगा

उन्होंने यीशु के ऊपर से उठा कर इस शमौन
पर लाद दिया। 27 रोती चिल्लाती महिलाएँ
और एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे चल पड़ीं।
28 यीशु ने पीछे मुड़ कर उन से कहा,
“यरूशलेम की बेटियो[a], मेरे लिए मत रो,
लेकिन अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ।
29 देखो, समय आने वाला है, जब सब ये
कहेंगे कि सुखी वे हैं जो बाँझ थीं और वे
गर्भाशय जिन में शिशु न रहा और वे स्तन,
जिन्होंने दूध नहीं पिलाया। 30 उन दिनों में
वे कहने लगेंगे, पहाड़ों, हम पर गिर पड़ो,
पहाड़ियो, हमें ढाँक लो। 31 क्योंकि यदि
उन्होंने ऐसा बर्ताव हरे पेड़ से किया है, तो
सूखे से क्या-क्या नहीं करेंगे?”
32 दो और अपराधी फाँसी की सज़ा के
लिए यीशु के साथ ले जाए गए।
33 जब वे सब कलवरी नामक जगह पर
पहुँचे, तो वहीं यीशु को और उनके दोनों
तरफ़ इन अपराधियों को क्रूस पर चढ़ा दिया
गया।
34 तब यीशु ने कहा, “पिता जी, इन लोगों
को मुआफ़ करें क्योंकि इन्हें यह समझ नहीं,
कि कर क्या रहे हैं।” उन लोगों ने चिट्ठी डाल
कर यीशु का चोगा भी बाँट लिया।
35 वहाँ लोग खड़े सब कुछ देखते रहे।
अधिकारियों ने भी मज़ाक उड़ाते हुए कहा,
“इसने दूसरों को बचाया, अब अपने आप
को बचाए, अगर वह परमेश्वर का चुना
हुआ मसीह है, तो अपने आप को बचाए।”
36 सैनिकों ने यीशु को सिरका देते हुए ठट्ठा
किया। 37 और कहा, “यदि तुम यहूदियों के
राजा हो तो अपने को बचाओ।”
38 क्रूस ही पर उन्होंने यूनानी, लातीनी और
इब्रानियों में लिख दिया कि यह यहूदियों का
राजा है।
39 टँगे हुए दोनों अपराधियों में से एक ने
यीशु से कहा, “यदि आप मसीह हैं, तो हमें
और अपने आप को बचाईए।”
40 लेकिन दूसरे ने उसे डाँटते हुए कहा,
“क्या तुम्हें परमेश्वर से डर नहीं लगता है
कि तुम भी वही सज़ा पा रहे हो? 41 हम लोग
तो अपनी करनी का फल भुगत रहे हैं लेकिन
इस आदमी ने कुछ बुरा नहीं किया है।”
42 उसने यीशु से कहा, “प्रभु, जब
आप शासन करें, तब मुझे भी याद कर
लीजिएगा।”
43 यीशु ने जवाब में कहा, “मैं सच बताऊँ
तो तुम मेरे साथ आज ही स्वर्गलोक में होगे।”
44 दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक सारे
आकाश में अन्धेरा छा गया। 45 सूरज काला
पड़ गया और प्रार्थना भवन का पर्दा फट कर
दो टुकड़े हो गया।
46 यीशु ने ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहा,
“पिताजी, मैं अपनी आत्मा आपके सुपुर्द
करता हूँ।” इतना कह कर यीशु ने अपने प्राण
त्याग दिए।
47 जब सूबेदार ने यह सब देखा, तो यह
कह कर परमेश्वर की बड़ाई की, “सच में,
यह एक खरा व्यक्ति था।”
48 वहाँ पर इकट्ठे सब लोग यह सब देख
कर अपनी छाती पीटते हुए वापस लौट गए।
49 यीशु को जानने वाले, उनके दोस्त आदि
और गलील से उनके साथ आई हुई स्त्रियाँ
दूर खड़ी होकर इन सारी बातों को देख रही
थीं।
50 यूसुफ़ नामक एक व्यक्ति था। वह भला
और धर्मी पुरुष था, 51 वह अधिकारियों और
याजकों के विचार से और इस काम से खुश
नहीं था। वह यहूदियों के शहर अरिमतियाह
का निवासी था और परमेश्वर के राज्य के

[a] **23.28** के लोगो

इंतज़ार में था। 52 उसने पिलातुस के पास
जाकर यीशु का शव माँग लिया, 53 और उसे
क्रूस से उतार कर चादर में लपेटा, और एक
कब्र में रखा जो चट्टान में खोदी हुई थी। अब
तक इस कब्र में कोई भी रखा नहीं गया था।
54 वह फ़सह तैयारी का दिन था, और
सब्त का दिन आरम्भ होने वाला ही था।
55 उनके साथ गलील से आई हुई स्त्रियों
ने, उन लोगों के बाद जाकर उस कब्र को
देखा, और यह भी देखा कि यीशु के शव
को उन्होंने कैसे रखा है। 56 वे वापस लौट
गयीं और उन्होंने सुगन्धित वस्तुएँ और इत्र
तैयार किया। परन्तु सब्त के दिन परमेश्वर
की आज्ञा के अनुसार उन्होंने विश्राम किया।

24 हफ़्ते के पहले दिन बहुत सुबह ही
तैयार किए गए सुगन्ध द्रव्यों के
साथ वे सब कब्र पर आए। उनके साथ कुछ
महिलाएँ भी थीं। 2 वहाँ पहुँचते ही उन्होंने
पत्थर को कब्र से दूर लुढ़का हुआ पाया।
3 वे भीतर गयीं, लेकिन उन्होंने वहाँ यीशु की
देह को न पाया।
4 जब वे सब वहाँ परेशान खड़ी थीं, तभी
अचानक स्वर्गदूत जिन के कपड़े चमक रहे
थे, वहाँ आ खड़े हुए। 5 जब वे सिर झुकाई
डरी हुई ज़मीन की तरफ़ मुँह किए हुई थीं,
तभी उन दोनों फ़रिश्तों ने कहा, “तुम ज़िन्दा
इन्सान को मरे हुओं में क्यों ढूँढती हो? 6 वह
यहाँ नहीं हैं, लेकिन जी उठे हैं। याद करो कि
जब वह गलील में थे, तब क्या कहा करते
थे। 7 यह कि “मनुष्य का पुत्र बुरे लोगों के
सुपुर्द किया जाएगा, क्रूस पर चढ़ाया जाएगा,
लेकिन फिर से तीसरे दिन जी उठेगा।”
8 तब उन सब को वे बातें याद आ गयीं।
9 कब्र से लौटने के बाद इन स्त्रियों ने ये
बातें ग्यारहों और शेष लोगों को भी बतायीं।
10 मरियम मगदलीनी, योअन्ना की माँ मरियम
तथा अन्य महिलाएँ जो उनके संग थीं, उन
सभी ने ये बातें प्रेरितों को बतायीं। 11 लेकिन
उन्हें ये सब बातें झूठी या अन्ध-श्रद्धा पूर्ण
लगीं और उन्होंने इन बातों पर विश्वास न
किया।
12 तब पतरस दौड़ कर कब्र तक गया और
जब झुका तो वहाँ के कपड़े पड़े हुए देख कर
आश्चर्य से भर कर वहाँ से भागा।
13 उसी दिन यरूशलेम से बारह कि.मी. दूर
इम्माऊस नामक गाँव की तरफ़ दो व्यक्ति
जा रहे थे। 14 वे दोनों उन सभी बातों के बारे
में चर्चा कर रहे थे, जो हुयी थीं। 15 जब कि वे
बाचीत कर ही रहे थे, तभी यीशु उनके पास
आए और चलने लगे। 16 लेकिन वे दोनों यीशु
को पहचान न पाए।
17 यीशु उन से बोले, “शोक में डूबे जब तुम
चले जा रहे थे, तो क्या बात कर रहे थे?”
18 उन में से एक क्लेओपास ने जवाब में
कहा, “क्या यरूशलेम में तुम्हीं एक अजनबी
हो और उन बातों से अनजान हो जो इन दिनों
में होती रही हैं?”
19 यीशु ने पूछा, “कौन सी बातें”? वे
बोले, “यीशु नासरी के बारे में, जो अपनी
बातों और कामों में सभी लोगों के सामने
शक्तिशाली थे। 20 और प्रधान पुरोहितों और
अधिकारियों ने क्रूस पर चढ़ाए जाने और
जान से मारे जाने के लिए उन्हें सौंप दिया।
21 लेकिन हमारी उम्मीद यह थी कि वह
इस्राएल देश को आज़ाद कराएँगे। इन सब
बातों को बीते तीन दिन हो चुके हैं। 22 हाँ,
हमारी कुछ महिलाओं ने भी हमें हैरत में डाल
दिया जब वे सुबह सुबह कब्र पर पहुँचीं।
23 उन्होंने लाश को वहाँ न पाया और यहाँ
पर आकर बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों को
देखा जिन्होंने यीशु के जीवित होने का दावा

किया। 24 हम में से कुछ लोगों ने कब्र पर
पहुँचते ही वैसा ही पाया जैसा महिलाओं
ने कहा था, लेकिन उन्होंने यीशु को देखा
नहीं।"
25 तब यीशु ने उन लोगों से कहा, "हे
बुद्धिहीनो! नबियों की कही बातों पर
मुश्किल से विश्वास करने वालो, 26 क्या
यह ज़रूरी नहीं था कि यीशु तकलीफ़ उठाएँ
और अपनी महिमा[a] में दाखिल हों?"
27 तब मूसा और दूसरे नबियों से शुरू
करके पूरी बाइबल में जो कुछ उनके खुद
के बारे में था, वह सब कुछ उन्होंने समझा
दिया। 28 जैसे-जैसे वे अपने गाँव के पास
पहुँच रहे थे, यीशु उन से आगे बढ़ गए।
29 लेकिन उन्होंने यीशु को आग्रह करते हुए
कहा, "दिन ढल चुका है, रात होने लगी है,
हमारे साथ ही ठहरिए।" और यीशु उनके
साथ ठहरने को राज़ी हो गए।
30 जब यीशु उन लोगों के साथ खाना खाने
बैठे, तो रोटी तोड़ कर उन्हें दी। 31 तभी
उनको असलियत समझ आ गयी, लेकिन
उसी समय यीशु वहाँ से गायब हो गए।
32 उन्होंने एक दूसरे से कहा, "जब रास्ते
में हम लोग चल रहे थे, तब बाइबल की
सच्चाइयों को समझाए जाने के समय हमारे
मन में कैसा अजीब एहसास था?"
33 उसी समय वे उठे और यरूशलेम की
तरफ़ चल पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने उन
ग्यारहों को और दूसरे लोगों को पाया।
34 उन्होंने कहा, "यीशु सचमुच जी उठे हैं
और शमौन ने उन्हें देखा भी है।"
35 हुयी वारदात के बारे में उन्होंने बताया
कि किस तरह रोटी तोड़ी जाते समय उनके
मन में संदेह हो रहा था कि कहीं यह यीशु तो
नहीं। 36 जब वे ऐसा कह ही रहे थे कि यीशु
उनके बीच आ खड़े हुए और बोले, "तुम्हें
शान्ति मिले!"
37 लेकिन आश्चर्यचकित होने के साथ ही
साथ वे डर भी गए और उन्हें लगा कि किसी
आत्मा को देख रहे हैं।
38 यीशु उन से बोले, "तुम परेशान क्यों हो?
तुम्हारे मन में सवाल क्यों उठ रहे हैं? 39 मेरे
हाथों, पैरों को तो देखो, मैं ही हूँ। मुझे छुओ
क्योंकि जैसा तुम मुझे देख रहे हो, आत्मा के
पास मांस और हड्डी नहीं होती है।"
40 यह कह कर यीशु ने उन्हें अपने हाथ पैर
भी दिखाए। 41 जब कि आश्चर्य और खुशी से
वे भरे हुए थे, यीशु ने कहा, "क्या तुम्हारे पास
खाने के लिए कुछ है?"
42 उन लोगों ने यीशु को भुनी मछली और
मधुमक्खी के छत्ते का एक हिस्सा दिया।
43 यीशु ने उन्हीं के सामने अपने हाथों में
लेकर उसे खाया।
44 यीशु ने कहा, "ये वही बातें हैं, जो मैंने
तुम्हें पहले बतायी थीं, जब तुम्हारे साथ
थाः वह यह कि जो बातें मूसा, नबियों की
किताबों में मेरे बारे में लिखी हैं, वे पूरी
होंगी।"
45 तब यीशु ने उनकी समझ को खोल
दिया ताकि वे बाइबल[b] समझ सकें। 46 यीशु
ने कहा, "ऐसा लिखा है और यह ज़रूरी
भी है कि मसीह दुख उठाए और मरने के
बाद तीसरे दिन जी उठे। 47 यह भी कि
मन बदलाव और अपराधों की क्षमा के
बारे में जो उन्हीं[c] से मिलेगी, यरूशलेम से
होकर धरती के आखिर तक रहने वालों को
बतलाया जाए। 48 और तुम्हीं इन सब बातों
के गवाह हो।
49 और देखो, परमेश्वर के वायदे को मैं
तुम्हारे लिए पूरा करने वाला हूँ। लेकिन जब

[a] **24.26** स्वर्ग में सर्वोच्च जगह [b] **24.45** पवित्रशास्त्र [c] **24.47** यीशु

तक स्वर्ग से उस शक्ति को न पाओ, यहीं
इसी नगर में ठहरो।”
50 बेतनिय्याह तक यीशु उनको ले गए और
अपने हाथों को उठा कर उन्हें आशीष दी।
51 आशीष देते हुए वह उन लोगों के बीच से
आकाश पर उठा लिए गए।
52 उसके बाद शिष्य यीशु की बड़ाई करते
हुए बड़ी खुशी से यरूशलेम चले गए। 53 और
प्रार्थना भवन[a] में तब से परमेश्वर की बड़ाई
करने में जुट गए।

[a] **24.53** मन्दिर

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com